CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उर्दू की प्रतिनिधि हास्य कविताएँ

सम्पादक

अर्श मलसियानी

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उर्दू की प्रतिनिधि हास्य कविताएँ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिन्दी-जगत का गौरवमय प्रकाशन

प्रतिनिधि साहित्य माला

प्रतिनिधि हास्य कहानियाँ (सचित्र)

हिन्दी-जगत के ४७ अग्रणी कहानीकारों की व्यंग्य-विनोद से पूर्ण श्रेष्ठ कहानियाँ। प्रत्येक कहानी पर पूरे पृष्ठ का कार्टून-चित्र। १२.५०

बंगला की प्रतिनिधि हास्य कहानियाँ (सचित्र)

बंगला साहित्य के ३५ सुविख्यात व्यंग्य-शिल्पियों की प्रतिनिधि हास्य कहानियाँ। प्रत्येक कहानी के साथ लेखक-परिचय, चित्र तथा एक उत्कृष्ट व्यंग्य-चित्र। १०.००

प्रतिनिधि हास्य एकांकी

हिन्दी-जगत् के २३ लोकप्रिय एकांकी-शिल्पियों के शिष्ट हास्य-व्यंग्य से सराबोर प्रतिनिधि एकांकी। १०.००

प्रतिनिधि ऐतिहासिक कहानियाँ

हिन्दी के २९ श्रेष्ठ कथा-शिल्पियों की उच्चकोटि की ऐतिहासिक कहानियाँ। ८.००

उर्दू की प्रतिनिधि प्रेम-कविताएँ (कामरूप)

प्रेम, विरह, और दुख-दर्द के चोटी के शायर फ़िराक़ गोरखपुरी ने उर्दू के दो सौ वर्ष के साहित्य से प्रणय-कविताओं को चुन-चुनकर इसमें सँजोया है। ७.५०

प्रतिनिधि सामूहिक गान (रंगीन)

सुप्रसिद्ध गीतकारों के सामुदायिक विकास और नव-निर्माण सम्बन्धी सामूहिक गीत। प्रत्येक गीत के साथ पूरे पृष्ठ का एक भावपूर्ण चित्र अंकित है। ४.००

प्रतिनिधि बाल एकांकी (सचित्र)

हिन्दी के २२ सुप्रसिद्ध एकांकीकारों के प्रतिनिधि बाल एकांकी। भारत सरकार द्वारा नेत्रहीनों के लिए ब्रेल पद्धति से मुद्रणार्थ स्वीकृत। ६.५०

प्रतिनिधि बाल-सामूहिक गान (रंगीन)

देश के भावी कर्णधारों के हृदयों में राष्ट्र के लिए त्याग और बलिदान की भावना जगाने वाले सामूहिक गीत। ३.००

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उर्दू की प्रतिनिधि हास्य कविताएँ

सम्पादक

अर्श मलसियानी

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

URDU KI PRATINIDHI HASYA KAVITAYEN
(*Representative Humorous Poems of Urdu*)
Edited by
Arsh Malsiyani
Rs. 7.50

© 1963, ATMA RAM & SONS, DELHI-6

प्रकाशक
रामलाल पुरी, संचालक
आत्माराम एण्ड संस
काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

शाखाएँ
हौज खास, नई दिल्ली
माई हीराँ गेट, जालन्धर
चौड़ा रास्ता, जयपुर
बेगमपुल रोड, मेरठ
विश्वविद्यालय क्षेत्र, चण्डीगढ़
महानगर, लखनऊ-६

मूल्य : सात रुपए पचास नए पैसे
प्रथम संस्करण : १९६३

मुद्रक
दी सैण्ट्रल इलैक्ट्रिक प्रेस
कमला नगर,
दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमिका

उर्दू में पहले-पहल व्यंग्य और हास्य कटूक्तियों के रूप में प्रकाश में आया। इस विषय में मिर्ज़ा सौदा को अग्रणी होने का श्रेय प्राप्त है। सौदा के उपरान्त मीर, मुसहफ़ी, इंशा, चिरकीन इत्यादि की गणना की जाती है। इन सब के व्यंग्य में संकुचित दृष्टिकोण, मसखरापन, हक्कड़पन और दूसरों के प्रति असहिष्णुता पाई जाती है। सौदा की कटूक्तियाँ श्रेष्ठ व्यंग्य की मूल शर्तों को पूरा नहीं करतीं। लेकिन फिर भी उनको इस काम में इतनी कुशलता प्राप्त थी कि लोग उनसे टक्कर लेते डरते थे। सौदा के समकालीन और एक सीमा तक प्रतिद्वन्द्वी मीर ज़ाहिक, फ़िदवी मकीं और बक़ा थे। इनसे बराबर नोक-झोंक चलती रही। मिर्ज़ा ने 'उल्लू और बनिया' शीर्षक से एक लम्बी कविता लिखी जिसमें फ़िदवी को दोनों का मिश्रण बताया है। इनकी एक प्रसिद्ध कविता घोड़े की कटूक्ति है। इसका उदाहरण देखिए—

है जब से चर्ख़ अबलक़े अय्याम[1] पर सवार
रखता नहीं है दस्त[2] इनां[3] का व यक क़रार
जिनके तबेले बीच कई दिन की बात है
हर्गिज़ इराक़ी व अरबी का न था शुमार
अब देखता हूँ मैं के ज़माने के हाथ से
मोची से कफ़्शे[4] पा को गठाते हैं वह उधार
हैंगे चुनाचंह एक हमारे भी मेहरबां
पावे मज़ा जो इनका कोई नाम ले निहार
नौकर हैं सौ रुपये के दयानत की राह से
घोड़ा रखे हैं एक सौ इतना खराबो ख्वार
नै दाना-ओ-न काह[5] न तीमार नै सईस
रखता हो जैसे अस्पे गिली[6] तिफ़्ले शीर सवार
नाताक़ती का उसके कहाँ तक करूं बयाँ
फ़ाक़ों का उसके अब मैं कहाँ तक करूं शुमार
देखे हैं जब वह तोबराह व थान की तरफ़
खोदे हैं अपने सुभ से कुएँ टापें मार मार
है पीर इस कदर कि जो बतलावे उसका सिन
पहले वह ले के रेगे ब्याबाँ[7] करे शुमार
पहिये उसे लगाओ के ता होवे यह रवाँ

---

१. काल का घोड़ा, २. हाथ, ३. बाग, ४. पांव का जूता, ५. घास, ६. मिट्टी का घोड़ा ; ७. जंगल की रेत।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

या बादवान बाँधो पवन के दो अख्तियार

मीर ज़ाहिक की खबर लेते हैं तो लिखते हैं—

कंकरी चुनने पर है अब गुज़रान
मेदा उसका है मुर्ग़ का संगदान
संगरेज़े तलक न उसमें बचे
मेदे में जावे तो पहाड़ पचे।

सौदा के समकालीन महाकवि मीर तक़ी मीर के यहाँ भी व्यंग्य मिलता है। उनकी कविता 'अपने घर का हाल' अपनी प्रकार की एक ही कविता है।

इंशाअल्लाह खाँ की कला भाँडों की कला है। मुसहफ़ी की पगड़ी उछालने में इंशा ने कौन-सी कसर उठा रखी है। जुलूस निकाले और स्वांग रचाये। इंशा की कटुक्तियों में कला की श्रेष्ठता और स्वच्छता नहीं, शोक और क्रोध है। भटियारियों के कोसने हैं, ठींगे दिखाना और उंगलियां नचाना है। उनको अच्छे हास्य लेखकों में नहीं गिना जा सकता। फिर भी वह अपनी ग़ज़लों के लबोलहजा की नरमी और लय के धीमेपन के कारण जीवित हैं। इनके यहाँ चुटकियाँ और गुदगुदियाँ भी हैं।

छेड़ने का तो मज़ा तब है कहो और सुनो
बात में तुम तो ख़फा हो गये लो और सुनो

× × ×

घबराये हुए फिरते हैं हम कूचे में उसके
क्या कीजिये दरवाजा इधर बन्द उधर बन्द

नज़ीर अकबराबादी बड़ा 'चुटकलेबाज' कवि है। दिल की लगन से ज़्यादा दिल्लगी उसका शेवा था। उसे हँस-हँस कर बात करना खूब आता है। नज़ीर का स्वभाव बड़ा विनोदी है। सजीवता में तीखेपन का ऐसा मिश्रण है कि खटकता नहीं। 'आदमीनामा' नज़ीर की प्रसिद्ध कविता है। यह तुलनात्मक व्यंग्य का श्रेष्ठ उदाहरण है।

'चूहों का आचार' और कुछ अन्य कविताएँ निकृष्ट कोटि के हास्य से पूर्ण हैं। परन्तु नज़ीर ने जीवन को बहुत निकट से देखा था। वह अपने वातावरण का कवि था ऐसा जग-कवि जो एक बड़ी सीमा तक स्थानीय भी है। उसने बरसात, दिवाली, शबे बरात, तैराकी का मेला और कितने ही आकर्षक विषयों पर कविताएँ लिखीं। हास्य और प्रफुल्लता को वह कहीं भी हाथ से नहीं जाने देता। 'शबे बरात' सम्बन्धी एक चरण देखिए—

आकर किसी के सर पै छछून्दर लगी कड़ी
ऊपर से और हवाई की आकर पड़ी छड़ी
हो गई गले का हार पटाखे की हर लड़ी
पांवों से लिपटी शोर मचा कर कलम लड़ी
करती है फिर तो ऐसी शितमगारी शब बरात

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उर्दू का प्रथम बड़ा व्यंग्यकार ग़ालिब है। ग़ालिब के व्यंग्य का कटूक्ति से कोई सम्बन्ध नहीं। इस दृष्टि से उनका स्थान सौदा और इंशा से बिलकुल अलग है। ग़ालिब के यहाँ सलीक़ा बड़ी चीज़ है और यही उनकी कला का प्राण है। उनकी कला का यह सलीक़ा उनके चिन्तन की ज्योति के कारण है। इशारों-इशारों में वह बहुत-कुछ कह जाते थे। ग़ालिब के व्यंग्य में बला की शोख़ी है—

वायिज न तुम पियो न किसी को पिला सको
क्या बात है तुम्हारी शराबे तहूर की

× × ×

हमको मालूम है जन्नत की हकीक़त लेकिन
दिल के खुश रखने को ग़ालिब यह ख्याल अच्छा है

× × ×

पकड़े जाते हैं फरिश्तों के लिखे पर नाहक,
आदमी कोई हमारा दमे तहरीर भी था

× × ×

उर्दू गद्य में व्यंग्य और हास्य का श्रीगणेश सबसे पहले ग़ालिब ने ही किया और यह पूर्व पीठिका थी 'अवध पंच' के हास्यपूर्ण गद्य और पद्य की।

१८५७ के बाद से जब उर्दू भाषा ने नया चोला बदला तो जहाँ सर सैयद अहमद खां और उनके साथियों ने जिनमें हाली, शिबली, नज़ीर, अहमद, मौलाना मुहम्मद हुसैन आज़ाद और जका उल्ला शरीक थे, नये साहित्य की बुनियाद डाली और उर्दू में एक सरल, गम्भीर एवं विचारपूर्ण शैली को प्रचलित किया। वहीं 'अवध पंच' ने उर्दू में व्यंग्य और हास्य की रंगीनी से सम्पन्न साहित्य में एक ऐसी शैली को विकसित किया जिसकी शोख़ी और तीव्रता उदाहरण की वस्तु बन गई। वाज़िदअली शाही युग की स्मृति उससे कायम रही और लखनऊ की भूमि ने इसे परवान चढ़ाया। 'अवध पंच' व्यंग्य और हास्य का स्रोत था। इसके लतीफ़े, चुटकुले, इसका हास्य और फ़िक़रेबाजी अपनी शोखी और लोकोक्तियों के लिए आज तक जीवित हैं। स्वर्गीय मुँशी सज्जाद हुसैन के अतिरिक्त जो 'अवध पंच' की जान थे इसके लेखकों में मिर्ज़ा महबूब बेग, हज़रत अहमद अली शौक, पंडित त्रिभुवन नाथ हिज्र, नवाब सैयद मुहम्मद आज़ाद, मुंशी ज्वालाप्रसाद बर्क, मुंशी अहमद अली कसमंडवी और हज़रत अकबर हुसैन अकबर उल्लेखनीय हैं। शुरू-शुरू में तो रतन-नाथ सरशार भी 'अवध पंच' ही में लिखते थे, परन्तु जब वे अवध अख़बार के सम्पादक हुए तो 'अवध पंच' से उनके सम्बन्ध बिगड़ गए। तबीयतों पर काबू न रहा और रण जमने लगे। अवध पंच सन् १८७७ में जारी हुआ था।

अकबर के हास्य में तीखापन है परन्तु भाषा और मुहावरे का आश्रय लेकर वह इसे साफ़-साफ़ कह जाते हैं। हास्य यदि थोड़ा अप्रत्यक्ष हो तो और भी आनन्द

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आता है। तिस पर भी हास्य और व्यंग्य की दृष्टि से अकबर का स्थान ऊंचा है। अंग्रेज़ की नक़ल करने वाले पर वह बुरी तरह बरसे—

माल वह है बने जो यूरोप में,
बात वह है जो पायनियर में छपे।
ए खुदा कर दे मुझको साहब लोग,
दूर हो मुझ से इस जनम का रोग।
मेरा क़ालिब हो क़ालिबे ग़र्बी,
भूल जाऊँ ज़बान भी अपनी।
सो के उट्ठं जो आज सुबह को मैं,
सब यह समझे के लाट साहब हैं।

× × ×

पब्लिक में ज़रा हाथ मिला लीजिए मुझसे।
साहब मेरे ईमान की कीमत है तो यह है।

अकबर ने बहुत लिखा है। पश्चिमी सभ्यता की बाढ़ को रोकने का विचार उन्हें हर समय सताता रहा। स्त्रियों में बढ़ती हुई बेपरदगी के वे विरोधी थे। देशभक्ति उनमें कूट-कूट कर भरी थी। एक उदाहरण देखिए—

फरमा गये हैं यह खूब भाई घूटन
दुनिया रोटी है और मज़हब चूरन

× × ×

बतायें आपको मरने के बाद क्या होगा
पुलाव खायेंगे अहबाब फातिहा होगा

× × ×

हुये इस कद्र मुहज़्ज़ब कभी घर का मुँह न देखा
कटी उम्र होटलों में मरे अस्पताल जा कर

× × ×

शेख़ जी के दोनों बेटे बाहुनर पैदा हुए,
एक है ख़ुफ़िया पुलिस में एक फांसी पा गये

× × ×

तालीम की खराबी से हो गई बिलाखिर
शौहरपरस्त बीवी पब्लिक पसन्द लेडी

× × ×

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तालीम जो दी जाती है हमें वह क्या है फक़त बाज़ारी है,
जो अक़्ल सिखाई जाती है वह क्या है फक़त सरकारी है।

× × ×

ज़रीफ़ लखनवी ने हास्यपूर्ण सुधारात्मक कविताएँ लिखी हैं। इनकी एक प्रसिद्ध कविता 'शामते अलेक्शन' बहुत दिनों तक काव्य रसिकों से प्रशंसा प्राप्त करती रही है। बल्कि आज भी वह उतनी ही लोकप्रिय है जितनी आज से २०-३० वर्ष पूर्व थी। म्युनिसिपल कमेटी का उम्मीदवार विभिन्न वोटरों के पास वोट लेने के लिए जाता है। एक वोटर का तफ़सीली बयान इस प्रकार करते हैं—

उस जगह से उठ के घर पर एक साहब के गये
दस बरस नाकाम रहने पर हुए थे जो बी० ए०
रेलवे में थे मुलाज़िम खुद भी थे चलते हुये
आपकी तन्ख्वाह तो कम ठाठ थे लेकिन बड़े
इंगलिश इस्टाइल पै रहने का जो इनको शौक था
बूट बेड़ी पांव की कालर गले का तौक था

फूस के छप्पर में रहते थे यह इस सामान से
और फरनीचर तो खारिज इनके था इसकान से
टूटी-फूटी कुर्सियां लेकर किसी दुकान से,
बैठते थे इन पै छप्पर में निहायत शान से
नाम इक तख्ती पै लिख रक्खा था यूँ बहरे वक़ार
मिस्टर अब्राहाम बी० ए०, टी० टी० सी० ई० आई० आर०

ज़रीफ के साथ-साथ ही रियाज़ खैराबादी ग़ज़ल में शोखी व हास्य के लिए बहुत प्रसिद्ध थे। शराब और तत्सम्बन्धी लेखों में हास्य उसका खास हिस्सा है—

नीची दाढ़ी ने आबरू रख ली, कर्ज पी आये इस दुकान से आज

× × ×

बड़े नेक तीनत बड़े साफ़ बातिन रियाज़ आपको कुछ हमीं जानते हैं

× × ×

हाली और इकबाल उर्दू कविता के महारथियों में से हैं। इनके यहाँ भी हास्य और व्यंग्य के नमूने मिलते हैं। इकबाल ने तो अकबर के अनुकरण में लिखना आरम्भ किया था परन्तु जब देखा कि इस मार्ग में वे सफलता से चल नहीं सकते तो ऐसी रचनाएँ कहना छोड़ दिया। अकबर के बाद इनके रंग में सबसे अधिक सफलता अहमक़ फफूंदवी को मिली है। अहमक़ ने बहुत लिखा है। वह खिलाफ़त और असहयोग आन्दोलन में जेल भी गए। देश-प्रेम उनकी नस-नस में था। उन्होंने पश्चिमी सभ्यता, विदेशी राज्य, दम्भी नेताओं, धर्म और समाज के पाखंडी ठेकेदारों

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर व्यंग्य के भरपूर वार किए हैं। उनकी कमान से जो तीर निकला है निशाने पर बैठा है। देखने में बड़े सरल स्वभाव के गम्भीर व्यक्ति थे। परन्तु उनके शेर महफ़िल की महफ़िल को लोटपोट कर देते थे।

ज़फर अली खाँ चंचल वृत्ति के राजनीतिज्ञ थे। उनके यहाँ जिसकी प्रशंसा मिलती है उसकी बुराई भी पाई जाती है। परन्तु इनके प्रभावशाली कवि होने में कोई सन्देह नहीं। हास्य और व्यंग्य की कविता को उन्होंने बहुमूल्य प्रसाद दिया है।

नए लिखने वालों में नयापन है। जीवन की समस्याओं का गहरा अध्ययन है। मजीद लाहौरी, सैयद मुहम्मद जाफ़री, वाही, सैयद ज़मीर जाफ़री, फुरकत काकोरवी, शहबाज़, राजा मेहदी अली खाँ, खिज़र तमीमी और ज़रीफ़ जब्बलपुरी की रचनाएँ इस संग्रह में शामिल हैं।

अन्त में कुछ ऐसे कवियों की संक्षिप्त रचनाएँ भी हैं जो वास्तव में हास्य कवि तो नहीं परन्तु ऐसी कविता के चिन्ह उनकी कृतियों में मिलते हैं। ग़ालिब, जोश मलीहाबादी, हरिचन्द्र अख्तर, जोश मलसियानी, अब्दुलबारी आसी, बेढ़ब बदायूनी, जगत इलाहाबादी, इनायतउल्लाह हज्जाम, और वजाहत झंझानवी की रचनाएँ आपको इस पुस्तक के अन्त में मिलेंगी।

जिन कवियों ने अपनी रचनाएँ मुझे भेजीं या जिनकी पुस्तकों से कविताएँ ली गईं उन सबका हार्दिक धन्यवाद करना मेरा प्रथम कर्त्तव्य है।

अर्श मलसियानी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रम

१.	मीर	१
२.	नज़ीर अकबराबादी	१३
३.	हाली	३३
४.	ज़रीफ़ जब्बलपुरी	४१
५.	अकबर इलाहाबादी	४७
६.	रियाज़ ख़ैराबादी	८१
७.	ज़फ़रअली ख़ाँ	९५
८.	इकबाल	१०७
९.	ज़रीफ़ लखनवी	११३
१०.	अहमक़ फफूंदवी	१४१
११.	मजीद लाहौरी	१७९
१२.	सैयद मुहम्मद ज़ाफ़री	१९५
१३.	वाही	२०३
१४.	सैयद ज़मीर जाफ़री	२२७
१५.	राजा मेंहदी अली ख़ाँ	२३७
१६.	फ़ुरक़त काकोरवी	२४५
१७.	ख़िज़र तमीमी	२५५
१८.	शहबाज़	२६५
१९.	ग़ालिब	२७७
२०.	जोश मलीहाबादी	२०९
२१.	अख़्तर	२८३
२२.	जोश मलसियानी	२८७
२३.	अब्दुलबारी आसी	२९०
२४.	बेढब बदायूनी	२९२
२५.	जगत इलाहबादी	२९४
२६.	इनायतुल्लाह हज्जाम	२९६
२७.	वजाहत झंझानवी	२९७

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

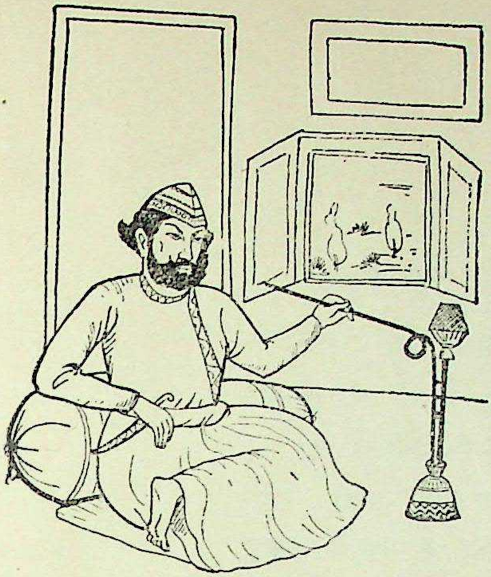

मीर

मीर के पूर्वज हिजाज़ से पहले पहल दक्षिण भारत में आए। वहाँ से अहमदाबाद, गुजरात पहुँचे। फिर आगरे में दम लिया। मीर का जन्म वहीं १७२२ में हुआ। बालपन ही में अनाथ हो गए और अपने मौसा सराजुद्दीन अली खाँ आरज़ू के पास चले आए। जवान हुए तो नवाब आसफ़दौला के बुलाने पर लखनऊ चले गए। सन् १८०८ में देहान्त हुआ।

मीर बड़े नाज़ुक मिज़ाज और स्वाभिमानी पुरुष थे। बड़े-बड़े कवियों और विद्वानों ने इनका लोहा माना है। यहाँ तक कि ग़ालिब ने भी कहा है:—

रेख़ता के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो ग़ालिब,
सुनते हैं अगले ज़माने में कोई मीर भी था।

मीर के काव्य का भंडार बहुत बड़ा है। काव्य के प्रत्येक रूप में उनकी शैली सराहनीय है। परन्तु गज़ल में उनका काव्य-प्रवाह बहुत गतिशील है। गज़लों के छः दीवान उनकी यादगार हैं।

इनके समकालीन कवि मिर्ज़ा सौदा ने व्यक्तिगत निन्दाएं लिखी हैं और इस रंग में वह अद्वितीय हैं। परन्तु मीर का हास्य और व्यंग्य उच्च श्रेणी का है। उन्होंने अपने वातावरण का मज़ाक उड़ाया है। इस रंग में उनकी सब से अधिक प्रतिनिधि कविता "अपने घर का हाल" है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपने घर का हाल

क्या लिखूं मीर अपने घर का हाल
इस ख़राबे में मैं हुआ पामाल
घर कि तारीको तीरा ज़िन्दाँ[1] है
सख़्त दिल तंग यूसुफ़े जाँ[2] है
कूचए मौज[3] से भी आंगन तंग
कोठरी के हबाब[4] के से ढंग
लोनी लगलग के झड़ती है माटी
आह क्या उम्र बे-मज़ा काटी
क्या थमे मेंह सक़्फ़[5] छलनी तमाम
छत से आँखें लगी रहे हैं मुदाम[6]
इस चकिश[7] का इलाज क्या करिये
राख से कब तलक गढ़े भरिये
आँखें भर ला के ये कहें हैं सब
क्योंकि पर्दा रहेगा यारब अब
झाड़ बांधा है मेंह ने दिन रात
घर की दीवारें हेंगी जैसे पात
बाओ में काँपती हैं जो थर थर
उन पे रद्दा रखे कोई क्यों कर
कीच ले ले के जों तों छोपा है
छोपा काहे को बल्कि थोपा है

---

१. अंधकारमय कारागार ; २. जान का यूसुफ़ अर्थात् जान ; ३. लहर की गली ; ४. बुलबुला ; ५. छत ; ६. हमेशा ; ७. टपकना।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कहीं सूराख़ है कहीं है चाक[१]
कहीं झड़झड़ के ढेर सी है ख़ाक
कहीं घूँसों ने खोद डाला है
कहीं चूहे ने सर निकाला है
कहीं घर है किसू छछूँदर का
शोर हर कोने में है मच्छर का
कहीं मकड़ी के लटके हैं जाले
कहीं झींगुर के बे-मज़ा नाले[२]
कोने टूटे हैं ताक़ फूटे हैं
पत्थर अपनी जगह से छूटे हैं
ईंट चूना कहीं से गिरता है
जी इसी हुजरे ही में फिरता है
रख के दीवार एधर-ओधर से
ला के थाँब बनाऊँ किस घर से
चारपाई जब उस में बिछवाई
पहले चलपासा ही नजर आई
कड़ी तख़्ते सभी धुएँ से सियाह
उस की छत की तरफ़ हमेशा निगाह
कभू कोई संपोलिया है फिरे
कभी छत से हज़ार पाये गिरे
दब के मरना हमेशा मद्दे नजर
घर कहाँ साफ़ मौत ही का घर
मट्टी तोदों जो डाली छत पर हम
थे जो शहतीर जूँ कमाँ हैं खम[३]
मुज़्तरिब हो के जो बिछाई बहुत
हर कड़ी ने कड़ी उठाई बहुत

१. दरार; २. विलाप; ३. झुका हुआ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ईंट मट्टी का दर के आगे ढेर
गिरती जाती है हौले हौले मुंडेर
कंगनी दीवार की निपट बे हाल
पिदड़ी का बोझ भी सके न संभाल
तोता मैना तो एक बाबत है
पोदना फुदके तो क़ियामत है
क्योंकि सावन कटेगा अब की बार
थरथरावे भंभीरी सी दीवार
होके मुज़्तर लगे हैं कहने सब
उड़ भंभीरी कि सावन आया अब
तीतरी याँ जो कोई आती है
जाने महज़ूँ[1] निकल ही जाती है
नहीं दीवार का ये अच्छा ढंग
कहीं खिसकी तो है क़ियामत नंग[2]
एक दिन एक कौआ आ बैठा
बे-गुमाँ[3] जैसे हौआ आ बैठा
नहीं वो ज़ाग़[4] चार पाओं फिरा
एक काला पहाड़ आन गिरा
अच्छे होंगे खंडर भी इस घर से
बरसे है इक खराबी घर दर से
बंद रखता हूँ दर जो घर में रहूँ
क़द्र क्या घर की जब कि मैं ही न हूँ
जिससे पूछो उसे बता दे शिताब[5]
सारी बस्ती में है यही तो खराब
एक छप्पर है शुहरा दिल्ली का
जैसे रौज़ा हो शैख़ चिल्ली का

---

१. शोक-ग्रस्त; २. लज्जा; ३. अचानक; ४. कौआ ५. शीघ्र।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाँस की जा दिये थे सरकंडे
सौदे मेंहों में सब हुए ठंडे
गल के बंधन हुए हैं ढीले सब
पाखे रहने लगे हैं गीले सब
वाँ पे टपका तो याँ सरक बैठा
याँ जो भीगा तो वाँ तनक बैठा
कहीं सहनक[1] रखूँ कहीं प्याला
कहीं हाँडी के ठीकरे ला ला
टपके दो चार जा तो बंद करूँ
पेच कोई लड़ाऊँ फंद करूँ
बस कि बद रंग[2] टपके है पानी
कपड़े रहते हैं मेरे अफ़शानी[3]
कोई जाने कि होली खेला हूँ
कोई समझे है ये कि खैला हूँ
बान झींगुर तमाम चाट गये
भीग कर बाँस फाट फाट गये
तिनके जाँदार हैं जो बेशो कम
तिन पे चिड़ियों को जंग है बाहम
एक खेंचे हैं चोंच से कर ज़ोर
एक मुगरी पे कर रही है शोर
पूछ मत ज़िन्दगानी कैसी है
ऐसे छप्पर की ऐसी तैसी है
क्या कहूँ जो जफ़ा चकिश से सही
चारपाई हमेशा सर पे रही
बोरिया फैल कर बिछा न कभू
कोने ही में खड़ा रहा यक सू

---

१. रिकाबी; २. बुरे रंग का; ३. जिस पर छिड़काव हुआ हो।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ड्योढ़ी की है ये ख़ूबी दर ऐसा
छप्पर इस चोंचले का घर ऐसा
जिन्से आला कोई खटोला खाट
पाये पट्टी रहे हैं जिन के फाट
खटमलों से सियाह है सो भी
चैन पड़ता नहीं है शब[1] को भी
शब बिछौना जो मैं बिछाता हूँ
सर पे रोज़े सियाह[2] लाता हूँ
कीड़ा एक एक फिर मकोड़ा है
साँझ से खाने ही को दौड़ा है
एक चुटकी में एक छिंगली पर
एक अंगूठा दिखावे उंगली पर
गर्चे बहुतों को मैं मसल मारा
पर मुझे खटमलों ने मल मारा
हाथ तकिये पे गह बिछौने पर
कभू चादर के कोने कोने पर
सलसलाया जो पायंती के ओर
वहीं मसला कर एड़ियों का ज़ोर
तोशक इन रगड़ों ही में सब फाटी
एड़ियाँ यूँ रगड़ते ही काटी
झाड़ते झाड़ते गया सब बान
सारी खाटों की चूलें निकलीं निदान
न खटोला न खाट सोने को
पाये पट्टी लगाये कोने को
जब न तब पिंडे पर लिये पाये
सीतला के से दाने मुरझाये

१. रात; २. बुरे दिन।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सो ये तन्हा न बान में खटमल
आँख मुँह नाक कान में खटमल
कहीं फड़का कि जी से ताब गई
आँख से ता पगाह ख़्वाब[1] गई
एक हथेली पे एक घाई में
सैकड़ों एक चारपाई में
हाथ को चैन हो तो कुछ कहिये
कब तलक यूँ टटोलते रहिये
ये जो बारिश हुई तो आख़िरकार
इस में सी साला[2] वो गिरी दीवार
आह खेंची ख़राबी क्या क्या न
थे जो हमसाये वे हैं हमख़ाना[3]
ऐसे होते हैं घर में तो बैठे
जैसे रस्ते में कोई हो बैठे
दो तरफ़ से था कुत्तों का रस्ता
काश जंगल में जा के मैं बसता
हो घड़ी दो घड़ी तो दुतकारूँ
एक दो कुत्ते हों तो मैं मारूँ
चार जाते हैं चार आते हैं
चार अफ़ अफ़[4] से मग़ज़ खाते हैं
किस से कहता फिरूं ये सुहबते नग़ज़[5]
कुत्तों का सा कहाँ से लाऊँ मग़ज़
वो जो ऐवां[6] था हुजरे के आगे
उस के अजज़ा[7] बिखरने सब लागे
कोठा बोझल हुआ था बैठ गया
पानी जुज़ जुज़[8] में उस के पैठ गया

---

१. प्रातःकाल तक नींद नहीं आई; २. तीस वर्ष पुरानी; ३. एक घर के निवासी; ४. भौंकना; ५. अद्भुत संसर्ग; ६. भवन; ७. अंश; ८. अंश-अंश में।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कड़ी तख़्ता हर एक छूट पड़ा
नागहाँ[1] आसमान टूट पड़ा
मैं तो हैरानकार था अपना
कोई उस दम न यार था अपना
ईंट पत्थर थे मट्टी थी यक सर
ख़ाक में मिल गया था घर का घर
चर्ख़[2] की कजरवी[3] ने पीसा था
पर ख़ुदा मेरा मुझ से सीधा था
कितने इक लोग इस तरफ़ धाये
ये मलक[4] आस्मान से आये
मट्टी ले ले गये दो हाथों में
काम ने शक्ल पकड़ी बातों में
सूरत उस लड़के की नज़र आई
हम जो मुर्दे थे जान सी पाई
आँख खोली इधर उधर देखा
इस ख़राबी को भर नज़र देखा
क़ुदरते हक़ दिखाई दी आकर
यानी निकला दुरुस्त वो गौहर[5]
दाश्त[6] की कोठरी में ला रक्खा
घर का ग़म ताक़ पर उठा रक्खा
मोमियाई खिलाई कुछ हलदी
फ़ुरसत उस को ख़ुदा ने दी जलदी
ग़म हुआ सुन के दोस्त दारों को
फिर बंधा ये ख़याल यारों को
कि मेरी बूदोबाश याँ न रहे
गो तसर्रुफ़[7] में ये मकाँ न रहे

---

१. अचानक; २. आकाश; ३. टेढ़ी चाल; ४. फ़िरिश्ता ५. मोती; ६. देख-रेख; ७. कब्जा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शहर में जा बहम न पहुँची कहीं
चार नाचार फिर रहा मैं वहीं
अब वही घर है वे सरोसाया
और मैं हूँ वही फ़िरो माया[1]
दिन को है धूप रात को है ओस
ख़्वाबे राहत है याँ से सौ सौ कोस
क़िस्सा कोतह[2] दिन अपने खोता हूँ
रात के वक़्त घर में होता हूँ
न असर बाम[3] का न कुछ दर[4] का
घर है काहे का नाम है घर का

मुर्ग़बाज़

दिल्ली से हम जो लखनऊ आए
गर्मे पर्ख़ाश[5] मुर्ग़ याँ पाए
आदमी जो बड़े कहाते हैं
मुर्ग़ मारे बग़ल में आते हैं
जम्अ मंगल को पाली की है धूम
गलियों में रोज़ हश्र[6] का है हुजूम
मुर्ग़बाज़ों को है क़ियामत जोश
जिस को देखो तो मुर्ग़ दर आग़ोश[7]
मुर्ग़ लड़ते हैं एक दो लातें
सैंकड़ों इन सफ़ीहों[8] की बातें
उन ने पर झाड़े ये फड़कने लगे
उन ने की नोक ये कड़कने लगे

---

१. अधम; २. संक्षेप में यह कि; ३. कोठा; ४. द्वार; ५. द्वेष-ग्रस्त; ६. प्रलय का दिन; ७. गोद में मुर्ग़ लिये; ८. नीच लोग, मूर्ख।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वो जो सीधा हुआ हो ये हैं कज[1]
साथ उस के बदलते हैं सज धज
मुर्ग़ की एक पर फ़िशानी[2] है
उन की सद रंग बद जुवानी है
एक बोले कि कारी आई चोट
एक कहता है बस गया अब लोट
झुकते हैं आप को तराते हैं
लातें गोया कि ये ही खाते हैं
एक के मुँह में मुर्ग़ की मिन्क़ार[3]
एक के लब पे नासज़ा गुफ़्तार[4]
मुँह पे आया जो कुछ वो बकने लगे
तीखो नज़रों से सब को तकने लगे
तुर्फ़ा[5] हंगामा तुर्फ़ा सोहवत है
बाद निस्फ़ुन्नहार[6] रुख़सत है
खाँचे सर पे बग़ल में मारे मुर्ग़
ले गए जीते हारे सारे मुर्ग़

कहता था किसी से कुछ तकता था किसी का मुँह
कल मीर खड़ा था याँ सच है कि दिवाना था

× × ×

होगा किसी दीवार के साए में पड़ा मीर
क्या काम मुहब्बत से उस आराम तलब को

× × ×

मीर साहिब को देखिए जो बने
अब बहुत घर से कम निकलते हैं

× × ×

जो इस शोर से मीर रोता रहेगा
तो हमसाया काहे को सोता रहेगा

× × ×

---

१. टेढ़ा ; २. पंख फड़फड़ाना ; ३. चोंच ; ४. अनुचित बात ; ५. अनोखा, विचित्र ; ६. मध्याह्न के उपरान्त ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शोरो शराब को रातों के हमसाये तुम्हारे क्या रोवें
ऐसे फ़ितने कितने उठेंगे मीर जी तुम जो सलामत हो

× × ×

रात तो सारी गयी सुनते परीशाँ गोई[1]
मीर जी कोई घड़ी तुम भी तो आराम करो

× × ×

आन में कुछ हैं आन में कुछ हैं
तोह्फ़ए रोज़गार[2] हैं हम भी

× × ×

लगा न दिल को कहीं क्या सुना नहीं तूने
जो कुछ कि मीर का इस आशिक़ी ने हाल किया

× × ×

शेख़ जो है मस्जिद में नंगा रात को था मैख़ाने में
जुब्बा[3] ख़िर्क़ा[4] कुरता टोपी मस्ती में इन्आम किया

× × ×

किस तर्ह मीर जी का हम तोबा करना मानें
कल तक थे दाग़ मै[5] के सब उन के पैरहन[6] पर

१. बकवास; २. ज़माने में अनोखा; ३. अंगरखा; ४. गुदड़ी; ५. शराब के धब्बे; ६. पोशाक।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नज़ीर अकबराबादी

शेख वली मुहम्मद नाम था और 'नज़ीर' तखल्लुस। मुहम्मद फारूख के बेटे थे और दिल्ली के वासी। जन्म १७३५ में हुआ था। जब छत्तीस वर्ष के थे, तभी अहमद शाह अब्दाली ने दिल्ली पर आक्रमण किया। इस हलचल में दिल्ली से निकले और आगरे जा पहुँचे। आगरे में रौज़ा ताजगंज के पास रहते थे और अध्यापक का काम करते थे। १३ अगस्त, १८३० को आगरे ही में देहान्त हुआ।

नज़ीर बड़े लोकप्रिय, विनोदी और प्रभावशाली कवि थे। नगर के तमाम मेलों-ठेलों, खेल-तमाशों और जलसों-जलूसों में सम्मिलित होते थे और उनके अनुभवों से लाभ उठाकर कविता करते थे। बात-बात पर बड़ी-बड़ी कविताएँ कह देना उनके लिए साधारण बात थी। मनुष्य-जीवन को उन्होंने प्रत्येक दृष्टिकोण से देखा था। शहर की मशहूर चीज़ों, खानों, मिठाइयों, इमारतों, मेलों, तमाशों, त्योहारों, पक्षियों और जानवरों का आँखों देखा हाल लिख कर उन्होंने कविता में चित्रकारी की है। रीति-रिवाजों, द्रव्य-निर्धनता, चोरी-चकारी, भंग-चरस, ऋतुओं और प्राकृतिक दृश्यों पर इन्होंने बड़ी अमूल्य कविताएँ लिखी हैं।

इनके हास्य-रस का कमाल, सच्ची बात, सीधे स्वभाव से कह देने में है। दिल की लगन से ज्यादा दिल्लगी इनका व्यवहार था। इन्हें हँस-हँस कर बात करना खूब आता था। इनके यहाँ व्यंग्य और हास्य का बड़ा अच्छा मेल है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बरसात की बहारें

कीचड़ से हो रही है जिस जा ज़मीं फिसलनी
मुश्किल हुई है वाँ से हर इक को राह चलनी
फिसला जो पाँव पगड़ी मुश्किल है फिर सँभलनी
जूती गिरी तो वाँ से क्या ताब फिर निकलनी
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

कितने तो कीचड़ों की दलदल में फँस रहे हैं
कपड़े तमाम गंदे दलदल में बस रहे हैं
कितने उठे हैं मर मर कितने उकस रहे हैं
वो दुख में फँस रहे हैं और लोग हँस रहे हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

गिर कर किसी के कपड़े दलदल में हैं मुअत्तर[1]
फिसला कोई किसी का कीचड़ में मुँह गया भर
इक दो नहीं फिसलते कुछ इस में आन अकसर
होते हैं सैकड़ों के सर नीचे पाँव ऊपर
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

ये रुत वो है कि जिस में ख़ुर्दो कबीर[2] ख़ुश हैं
अदना ग़रीब मुफ़लिस शाहो वज़ीर ख़ुश हैं
माशूक़ शादो ख़ुर्रम[3] आशिक़ असीर ख़ुश हैं
जितने हैं अब जहाँ में सब ऐ नज़ीर ख़ुश हैं
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

---

१. महकता हुआ ; २. छोटे और बड़े ; ३. प्रसन्न ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बरसात का जहान में लश्कर फिसल पड़ा
बादल भी हर तरफ़ से हवा पर फिसल पड़ा
झड़ियों का मेंह भी आके सरासर फिसल पड़ा
छत्ता किसी का शोर मचा कर फिसल पड़ा
कोठा झुका अटारी गिरी दर फिसल पड़ा

जिन के नए नए थे मकाँ और महल सरा
उन की छतें टपकती हैं छलनी हो जा बजा
दीवारें बैठती हैं छलों का है गुल मचा
लाठी को टेक कर जो सुतूँ[1] है खड़ा किया
छज्जा गिरा मुँडेरी का पत्थर फिसल पड़ा

याँ तक हर इक मकान की फिसलने को है ज़मीं
निकले जो घर से उस को फिसलने का है यक़ीं
मुफ़लिस ग़रीब पर हो ये मौक़ूफ़ कुछ नहीं
क्या फ़ील[2] का सवार है क्या पालकी नशीं
आया जो इस ज़मीन के ऊपर फिसल पड़ा

देखो जिधर उधर को यही गुल पुकार है
कोई फँसा है और कोई कीचड़ में ख़्वार है
प्यादा उठा जो मर के तो पिछड़ा सवार है
गिरने की धूमधाम ये कुछ बेशुमार है
जो हाथी रपटा ऊँट गिरा ख़र[3] फ़िसल पड़ा

चिकनी ज़मीं पे याँ तईं कीचड़ है बे-शुमार
कैसा ही होशियार पर फिसले है एक बार
नौकर का बस कुछ इस में, न आक़ा का इख़्तियार
कूचे गली में हम ने तो देखा है कितने बार
आक़ा जो डगमगाए तो नौकर फिसल पड़ा

---

१. खंभा ; २. हाथी ; ३. गधा ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कूचे में कोई और कोई बाज़ार में गिरा
कोई गली में गिर के है कीचड़ में लोटता
रस्ते के बीच पाँव किसी का रपट गया
इस सब जगह के गिरने से आया जो बच बचा
वो अपने घर के सेहन[1] में आकर फिसल पड़ा

दलदल जो हो रही है हर इक जा पे रस मसी
मर मर उठा है मर्द तो औरत रही फँसी
क्या सख़्त मुश्किलात हैं क्या सख़्त बेकसी
उस की बड़ी ख़राबी हुई और बड़ी हँसी
जो अपने जाज़रूर[2] के अंदर फिसल पड़ा

करती है गरचे सब को फिसलनी ज़मीन ख़्वार
आशिक़ को पर दिखाती है कुछ और ही बहार
आया जो सामने कोई महबूब गुल अज़ार[3]
गिरने का मक्र कर के उछल कूद एक बार
उस शोख़ गुल बदन[4] से लिपट कर फिसल पड़ा

पैसे की फ़िलासफ़ी

पैसे ही का अमीर के दिल में ख़याल है
पैसे ही का फ़क़ीर भी करता सवाल है
पैसा ही फ़ौज पैसा ही जाहो जलाल है
पैसे ही का तमाम ये तंगो दवाल है ?
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
पैसा न हो तो आदमी चर्ख़े की माल है

---

१. आँगन ; २. शौचालय ; ३. प्रिय जिस के गाल फूल जैसे हों ; ४. जिसका शरीर फूल जैसा हो ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पैसा जो होवे पास तो कुन्दन के हैं डले
पैसे बग़ैर मिट्टी के उस से डले भले
पैसे से चुन्नी लाख की इक लाल दे के ले
पैसा न हो तो कौड़ी को मोती कोई न ले
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
पैसा न हो तो आदमी चर्ख़े की माल है

पैसा जो हो तो देव की गर्दन को बाँध लाए
पैसा न हो तो मकड़ी के जाले से ख़ौफ़ खाए
पैसे से लाला भैया जी और चौधरी कहाए
बिन पैसे साहूकार भी इक चोर-सा दिखाए
पसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
पैसा न हो तो आदमी चर्ख़े की माल है

पसा ही जस दिलाता है इन्साँ के हात को
पैसा ही ज़ेब देता है ब्याह और बरात को
भाई सगा भी आन के पूछे न बात को
बिन पैसे यारो दूल्हा बने आधी रात को
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
पैसा न हो तो आदमी चर्ख़े की माल है

पैसे ने जिस मकाँ में बिछाया है अपना जाल
फँसते हैं उस मकाँ में फ़रिश्तों के पर-ओ-बाल
पैसे के आगे क्या हैं ये महबूब ख़ुश जमाल[1]
पैसा परी को लाए परिस्तान से निकाल
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
पैसा न हो तो आदमी चर्ख़े की माल है

---

१. सुन्दर।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दुनिया में दीनदार कहाना भी नाम है
पैसा जहाँ के बीच वो क़ायम मुक़ाम है
पैसा ही जिस्मोजान है पैसा ही काम है
पैसे ही का नज़ीर ये आदम ग़ुलाम है
पैसा ही रंग रूप है पैसा ही माल है
पैसा न हो तो आदमी चर्खे की माल है

आटे-दाल की फ़िलासफ़ी-१

आटे के वास्ते है हवस मुल्कोमाल की
आटा जो पालकी है तो है दाल नाल की
आटे ही दाल से है दुरुस्ती ये हाल की
इस से ही सब की ख़ूबी है जो हालो क़ाल की
सब छोड़ो बात तूती ओ पिदड़ी ओ लाल[1] की
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो आटे दाल की

इस आटे दाल ही का जो आलम में है ज़हूर
इस से ही मुँह पे नूर है और पेट को सुरूर
इस से ही आ के चढ़ता है चेहरे पे सब के नूर
शाहो गदा अमीर इसी के हैं सब मजूर
सब छोड़ो बात तूती ओ पिदड़ी ओ लाल की
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो आटे दाल की

मैना के पालने की अगर दिल में मैल है
सच पूछिये तो ये भी ख़राबी की ज़ैल है
सब इश्क़बाज़ी रोज़ी के होती तुफ़ैल है
रोज़ी न हो तो मैना भी फिर क्या चुड़ैल है
सब छोड़ो बात तूती ओ पिदड़ी ओ लाल की
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो आटे दाल की

१. पक्षी; २. बुद्धिमान।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आटा है जिस का नाम वही ख़ास नूर है
और दाल भी परी है कोई या कि हूर है
इस का भी खेल खेलना सब को ज़रूर है
समझे जो इस सुख़न को वो साहब शऊर[२] है
सब छोड़ो बात तूती ओ पिदड़ी ओ लाल की
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो आटे दाल की

छः पैसों के जो इश्क़ में दिल को लगाओगे
तो पेट भर के खाओगे कपड़े बनाओगे
तोते को पाल कर के हक़ अल्लाह पढ़ाओगे
नाहक़ को सर खपाओगे कौड़ी न पाओगे
सब छोड़ो बात तूती ओ पिदड़ी ओ लाल की
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो आटे दाल की

जिन पर हैं चार पैसे वही हैं यहाँ अमीर
और जितने पेशावर हैं वो क्या ख़ुर्द[१] क्या कबीर[२]
और जिनके पास कुछ नहीं वो हैं निरे फ़क़ीर
रोटी का सिलसिला है बड़ा क्या कहूँ 'नज़ीर'
सब छोड़ो बात तूती ओ पिदड़ी ओ लाल की
यारो कुछ अपनी फ़िक्र करो आटे दाल की

रोटियाँ

जब आदमी के पेट में आती हैं रोटियाँ
फूली नहीं बदन में समाती हैं रोटियाँ
आँखें परी-रुख़ों[३] से लड़ाती हैं रोटियाँ
सीने ऊपर भी हाथ चलाती हैं रोटियाँ
जितने मज़े हैं सब ये दिखाती हैं रोटियाँ

---

१. छोटा; २. बड़ा; ३. परी जैसी सुन्दरी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रोटी से जिस का नाक तलक पेट है भरा
करता फिरे है क्या वो उछल कूद जा बजा
दीवार फाँद कर कोई कोठा उछल गया
ठट्ठा हँसी शराब सनम साक़ी उस सिवा
सौ-सौ तरह की धूम मचाती हैं रोटियाँ

जिस जा पे हाँडी चूल्हा तवा और तनूर है
ख़ालिक़ की क़ुदरतों का उसी जा ज़हूर है
चूल्हे के आगे आँच जो जलती हुज़ूर है
जितने हैं नूर सब में यहीं ख़ास नूर है
इस नूर के सबब नज़र आती हैं रोटियाँ

आवे तवे तनूर का जिस जा ज़बाँ पे नाम
या चक्की चूल्हे के जहाँ गुलज़ार हों तमाम
वां सर झुका के कीजिए डंडौत और सलाम
इस वास्ते कि ख़ास ये रोटी के हैं मक़ाम
पहले इन्हीं मकानों में आती हैं रोटियाँ

इन रोटियों के नूर से सब दिल हैं नूर पूर
आटा नहीं है छलनी से छन-छन गिरे है नूर
पेड़ा हर एक उसका है बर्फ़ी ओ मोती चूर
हरगिज़ किसी तरह न बुझे पेट का तनूर
इस आग को मगर ये बुझाती हैं रोटियाँ

पूछा किसी ने ये किसी कामिल फ़क़ीर से
यें मेहरोमाह[1] हक़ ने बनाए हैं काहे के
वो सुन के बोला "बाबा ख़ुदा तुझ को ख़ैर दे
हम तो न चाँद समझें न सूरज हैं जानते
बाबा हमें तो ये नज़र आती हैं रोटियाँ"

१. सूरज और चाँद ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रोटी जब आई पेट में सौ क़ंद घुल गए
गुलज़ार फूले आँखों में और ऐश तुल गए
दो तर निवाले पेट में जब आके ढल गए
चौदह तबक़ के जितने थे सब भेद खुल गए
ये कश्फ़[1] ये कमाल दिखाती हैं रोटियाँ

रोटी न पेट में हो तो फिर कुछ जतन न हो
मेले की सैर ख़्वाहिशे बाग़ो चमन न हो
भूखे ग़रीब दिल की ख़ुदा से लगन न हो
सच है कहा किसी ने कि "भूखे भजन न हो"
अल्लाह को भी याद दिलाती हैं रोटियाँ

अब जिन के आगे माल पूए भर के थाल हैं
पूरी भगत उन्हीं की वो साहब के लाल हैं
और जिन के आगे रोग़नी और शीर माल हैं
आरिफ़ वही हैं और वही साहब कमाल हैं
पक्की पकाई अब जिन्हें आती हैं रोटियाँ

कपड़े किसी के लाल हैं रोटी के वास्ते
लम्बे किसी के बाल हैं रोटी के वास्ते
बाँधे कोई रूमाल है रोटी के वास्ते
सब कश्फ़ और कमाल हैं रोटी के वास्ते
जितने हैं रूप सब ये दिखाती हैं रोटियाँ

रोटी से नाचे प्यादा क़वायद दिखा दिखा
असवार नाचे घोड़े को कावा लगा लगा
घुँघरू को बाँधे पैक[2] भी फिरता है जा बजा
और इस सिवा जो ग़ौर से देखा तो जा बजा
सौ सौ तरह के नाच दिखाती हैं रोटियाँ

---

१. आत्मशक्ति द्वारा गुप्त बातों का ज्ञान; २. हरकारा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रौर वो जो नाचने में बताती हैं भाश्रो ताश्रो
चितवन इशारतों से कहें हैं कि रोटी लाश्रो
रोटी के सब सिंगार हैं रोटी के राश्रो चाश्रो
...की ताब क्या जो करे इस क़दर बनाश्रो
ये श्रान ये झमक तो दिखाती हैं रोटियाँ

रोटी का श्रब श्रज़ल से हमारा तो है ख़मीर
रूखी भी रोटी हक़ में हमारे है शहदोशीर
या पतली होवे मोटी ख़मीरी हो या फ़तीर[1]
गेहूँ की ज्वार बाजरे की जैसी हो "नज़ीर"
हम को तो सब तरह की ख़ुश श्राती हैं रोटियाँ

पेट की फ़िलासफ़ी

करता है कोई जौरो जफ़ा[2] पेट के लिए
सहता है कोई रंजो बला पेट के लिए
सीखा है कोई मक्रो दग़ा[3] पेट के लिए
फिरता है कोई बे सरोपा पेट के लिए
जो हैं सो हो रहा है फ़िदा पेट के लिए

श्राजिज़ हैं उसके वास्ते क्या शाह क्या वज़ीर
मुहताज हैं उसी के लिए बख़्शी श्रो श्रमीर
मुन्शी वकील एलची मुतसद्दी[4] श्रो मुशीर[5]
चाकर नफ़र ग़ुलाम तवंगर[6] ग़नी[7] फ़क़ीर
सब कर रहे हैं फ़िक्र सदा पेट के लिए

सर्राफ़ ख़ुर्दिये से लगा सेठ साहूकार
दल्लाल जौहरी श्रो किनारी के पेशादार
पनसारी श्रो बज़ाज़ श्रनाजों के कारोबार

१. चपाती; २. श्रत्याचार। ३. छल-कपट; ४. हिसाब-किताब करने वाला; ५. परामर्शदाता; ६. धनी; ७. उदार।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्योपार लेन देन बनज क़र्ज़ और उधार
है सब ने ठक ठका ये किया पेट के लिए

बैठे हैं मस्जिदों में मुसल्ले बिछा बिछा
जुब्बे[1] पहन के हाथ में तस्बीह को फिरा
वाइज़ के हर सुख़न में है खाने का मुद्दआ
आबिद भी दावतों की इबादत है कर रहा
ज़ाहिद भी माँगता है दुआ पेट के लिए

रंगरेज़ बैठे रंगते हैं रंगत हज़ारिया
सुर्ख़ो गुलाबी ज़र्द सियह सब्ज़ धारिया
मख़मल है कोई कोई है मशरू[2] कटारिया
जंगल में जाके देखा तो उस जा भी नियारिया
नित ख़ाक छानता है पड़ा पेट के लिए

नटखट उचक्के चोर दग़ाबाज़ राह मार
अय्यार जेब कतरे नज़र बाज़ होशियार
सब अपने अपने पेट के करते हैं कारोबार
कोई ख़ुदा के वास्ते करता नहीं शिकार
बिल्ली भी मारती है चुहा पेट के लिए

बाँका सिपाही ख़ूब शुजाअत में बे जिगर
वो भी उसी के वास्ते ले तेग़[3] और तबर[4]
लड़ता है तोप तीर तुफ़ंगों में आन कर
खाता है ज़ख़्म ख़ून में होता है तरबतर
आख़िर को सर भी दे है कटा पेट के लिए

फ़ाज़िल[5] के फ़ज़्ल में भी उसी की है इल्तिजा
आबिद[6] नजूमी का भी उसी पर है मुद्दआ

१. एक ढीला पहनावा; २. रेशम और चांदी के तारों वाला कपड़ा। ३. तलवार; ४. कुल्हाड़ा; ५. विद्वान; ६. उपासक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुल्ला भी दिन गुज़ारे है लड़के पढ़ा पढ़ा
शाइर भी देखिये तो क़सीदे[1] बना बना
क्या क्या करे है वस्फ़ो सना पेट के लिए

क़ाज़ी के हाल की भी यही बात है गवाह
मुफ़्ती के क़स्द की भी ये शाहिद[2] है ख्वाहमख्वाह
बैद ग्रौर हकीम की भी उसी पर है ग्रब निगाह
ग्रत्तार के भी दर्द को देखा तो वो भी ग्राह
दिन रात कूटता है दवा पेट के लिए

लाखों में कोई ले है मुहब्बत से हक़ का नाम
वरना सब ग्रपने पेट के हैं कल्मे ग्रौर कलाम
न ग्राक़बत की फ़िक्र न राहे ख़ुदा से काम
समझे न कुछ हलाल न जाना कि कुछ हराम
जो जिस से हो सका सो किया पेट के लिए

ज़रदार मालदार गदा शाह क्या वज़ीर
सरदार क्या ग़रीब तवंगर हो या फ़क़ीर
हर दम सभों को देखा इसी हाथ में ग्रसीर
ग्रपनी यही दुग्रा है शबो रोज़ ऐ नज़ीर
दे शर्मो ग्राबरू से ख़ुदा पेट के लिए

हीजड़े

बेटा हुग्रा किसी के जो सुन पावें हीजड़े
सुनते ही उस के घर में फिर ग्रा जावें हीजड़े
नाचें बजा के तालियाँ ग्रौर गावें हीजड़े
ले ले के बेल भाव भी बतलावें हीजड़े
उस के बड़े नसीब जहाँ जावें हीजड़े

१. प्रशंसा-काव्य; २. साक्षी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बातें भी उनकी साफ़ हैं मिलना भी साफ़ हैं
सीना भी उन का आइना मुखड़ा भी साफ़ है
ज़ाहिर भी उन का साफ़ है ज्योड़ा भी साफ़ है
आगा भी उनका साफ़ है पीछा भी साफ़ है
जब ऐसे ज़िन्दा दिल हों तो कहलावें हीजड़े

ये जान छल्ले अब जो कहाते हैं ख़ुश सफ़ीर[1]
है दिल हमारा उन की मुहब्बत में अब असीर
मुद्दत से हो रहा है इरादा ये दिल पज़ीर[2]
अल्लाह हमें भी देवे जो बेटा तो ऐ 'नज़ीर'
हम भी बुला के ख़ूब से नचवावें हीजड़े

आटे-दाल की फ़िलासफ़ी-२

क्या कहूँ यारो मैं नक़शा ख़ल्क़ के अहवाल का
अहले दौलत का चलन या मुफ़लिसो कंगाल का
ये बयाँ तो वाकई है हर किसी के हाल का
क्या तवंगर क्या ग़नी क्या पीर और क्या बाल का
सब के दिल को फ़िक्र है दिन रात आटे दाल का

गर न आटे दाल का अंदेशा होता सद्दे राह[3]
फिर न फिरते मुल्कगीरी को वज़ीरो बादशाह
साथ आटे दाल के ले हशमतो[4] फ़ौजो सिपाह
जा बजा गढ़ कोट से लड़ते हुए फिरते हैं आह
सब के दिल को फ़िक्र है दिन रात आटे दाल का

गर न आटे दाल का होता कदम याँ दरमियाँ
मुंशी ओ मीरो वज़ीरो बख्शी ओ नव्वाबो ख़ाँ
जागते दरबार में क्यों आधी आधी रात वाँ

---

१. अच्छा गाने वाला; २. हृदयग्राही; ३. रास्ते की रुकावट; ४. नौकर-चाकर।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्या अजब नक़्शा पड़ा है आह क्या कीजिये बयाँ
सब के दिल को फ़िक्र है दिन रात आटे दाल का

गर न आटे दाल का याँ खटका होता बार बार
दौड़ते काहे को फिरते धूप में प्यादे सवार
और जितने हैं जहाँ में पेशेवर और पेशादार
एक भी जीं पर नहीं है इस सिवा सब्रो क़रार
सब के दिल को फ़िक्र है दिन रात आटे दाल का

अपने आलम में ये आटा दाल भी क्या फ़र्द है
हुस्न की आनो अदा सब इस के आगे गर्द है
आशिक़ों का भी इसी के इश्क़ से मुँह ज़र्द है
ता कुजा[1] कहिए कि क्या वो मर्द क्या नामर्द है
सब के दिल को फ़िक्र है दिन रात आटे दाल का

दिलवरों की चश्म[2] अबरू[3] जुल्फ़ खत्तो ख़ाल है
नाज़ुकी शोख़ी अदाएँ हुस्न लालों लाल है
क्या कमर पतली है काफ़िर क्या ठुमकती चाल है
ग़ौर कर देखा है जो कुछ है सो आटा दाल है
सब के दिल को फ़िक्र है दिन रात आटे दाल का

अब जिन्हें अल्लाह ने याँ कर दिया कामिल फ़क़ीर
वो तो बेपरवा सख़ी दाता हैं आप ही दिल पज़ीर
और जितने हैं वो सब हैं दाल आटे के असीर
उन ग़रीबों की यही अब शक्ल होगी ऐ नज़ीर
सब के दिल को फ़िक्र है दिन रात आटे दाल का

आदमी की फ़िलासफ़ी

दुनिया में बादशा है सो है वो भी आदमी
और मुफ़लिसो गदा[4] है सो है वो भी आदमी

---

१. कहाँ तक ; २. आँख ; ३. भवें ; ४. फ़क़ीर ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज़रदार बेनवा है सो वो भी आदमी
नेमत जो खा रहा है सो है वो भी आदमी
टुकड़े जो माँगता है सो है वो भी आदमी

अब्दालो क़ुत्बो ग़ौस वली आदमी हुए
मुनकिर[1] भी आदमी हुए और कुफ़्र के भरे
क्या क्या करिश्मे कश्फ़ो करामात[2] के लिए
हत्ता[3] कि अपने ज़ुहदो रियाज़त[4] के ज़ोर से
ख़ालिक़ से जा मिला है सो है वो भी आदमी

फ़िरऔन[5] ने किया था जो दावा ख़ुदाई का
शद्दाद[6] भी बिहिश्त बना कर हुआ ख़ुदा
नमरूद[7] भी ख़ुदा ही कहाता था बर मला
ये बात है समझने की आगे कहूँ मैं क्या
याँ तक जो हो चुका है सो है वो भी आदमी

याँ आदमी ही नार है और आदमी ही नूर
याँ आदमी ही पास है और आदमी ही दूर
कुल आदमी का हुस्नो क़ुब्ह[8] में है याँ ज़हूर
शैताँ भी आदमी है जो करता है मक्रो ज़ूर
और हादी रहनुमा[9] है सो है वो भी आदमी

मस्जिद भी आदमी ने बनाई है याँ मियाँ
बनते हैं आदमी ही इमाम[10] और ख़ुतबा ख़्वाँ[11]
पढ़ते हैं आदमी ही क़ुरआन और नमाज़ याँ
और आदमी ही उन की चुराते हैं जूतियाँ
जो उन को ताड़ता है सो है वो भी आदमी

---

१. नास्तिक; २. चमत्कार; ३. यहाँ तक कि; ४. तपस्या; ५, ६, ७; इन तीनों ने ईश्वर होने का दावा किया किन्तु ये बुरी तरह मरे; ८. भलाई-बुराई; ९. मार्ग दर्शक; १०. नमाज़ पढ़ने वाला; ११. ख़ुतबा पढ़नेवाला।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

याँ आदमी पे जान को वारे है आदमी
और आदमी ही तेग़ से मारे है आदमी
पगड़ी भी आदमी की उतारे है आदमी
चिल्ला के आदमी को पुकारे है आदमी
और सुन के दौड़ता है सो है वो भी आदमी

नाचे है आदमी ही बजा तालियों को यार
और आदमी ही डाले है अपनी इज़ार उतार
नंगा खड़ा उछलता है हो कर ज़लीलो ख़्वार
सब आदमी ही हँसते हैं देख उस को बार बार
और वो जो मसख़रा है सो है वो भी आदमी

चलता है आदमी ही मुसाफ़िर हो लेके माल
और आदमी ही मारे है फाँसी गले में डाल
याँ आदमी ही सैद[1] है और आदमी ही जाल
सच्चा भी आदमी ही निकलता है मेरे लाल
और झूठ का भरा है सो है वो भी आदमी

याँ आदमी ही शादी है और आदमी ही ब्याह
क़ाज़ी वकील आदमी और आदमी गवाह
ताशे बजाते आदमी चलते हैं ख़ामख़ाह
दौड़े हैं आदमी ही मिशालें जला के राह
और ब्याहने चढ़ा है सो है वो भी आदमी

याँ आदमी नकीब हो बोले है बार बार
और आदमी ही प्यादे हैं और आदमी सवार
हुक़्क़ा सुराही जूतियाँ दौड़ें बग़ल में मार
काँधे पे रख के पालकी हैं आदमी कहार
और उस में जो चढ़ा है सो है वो भी आदमी

1. शिकार।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बैठे हैं आदमी ही दुकानें लगा लगा
कहता है कोई लो कोई कहता है ला रे ला
और आदमी हो फिरते हैं रख सर पे ख्वांचा
किस किस तरह वे बेचे हैं चीज़ें बना बना
और मोल ले रहा हैं सो है वो भी आदमी

याँ आदमी ही क़हर[1] से लड़ते हैं घूर घूर
और आदमी ही देख उन्हें भागते हैं दूर
चाकर गुलाम आदमी और आदमी मजूर
याँ तक कि आदमी ही उठाते हैं जाज़रूर[2]
और जिस ने वो फिरा है सो है वो भी आदमी

तबले मंजीरे दायरे सारंगियाँ बजा
गाते हैं आदमी ही हर इक तर्हं जा बजा
रंडी भी आदमी ही नचाते हैं गत लगा
वो आदमी ही नाचें हैं और देखो ये मज़ा
जो नाच देखता है सो है वो भी आदमी

याँ आदमी ही लालो जवाहर है बे बहा[3]
और आदमी ही ख़ाक से बदतर है हो गया
काला भी आदमी है और उलटा है जूँ तवा
गोरा भी आदमी है कि टुकड़ा सा चाँद का
बद शक्लो बदनुमा है सो है वो भी आदमी

इक आदमी हैं जिन के ये कुछ ज़र्क़बर्क़[4] हैं
रूपे के उन के पाँव हैं सोने के फ़र्क़[5] हैं
झमके तमाम ग़र्ब[6] से ले ता ब शर्क़ हैं

---

१. क्रोध ; २. पाख़ाना ; ३. अमूल्य ; ४. तड़क भड़क ; ५. सिर ; ६. पश्चिम से पूरब तक ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किमख़ाब ताश शाल दोशालों में ग़र्क़ हैं
ग्रौर चीथड़ों लगा है सो है वो भी ग्रादमी

इक ऐसे है कि जिन के बिछे हैं नए पलंग
फूलों की सेज उन पे झमकती है ताज़ा रंग
सोते हैं लिपटे छाती से माशूक़ शोख़ोशंग
सौ सौ तरह से ऐश के करते है रंग ढंग
ग्रौर ख़ाक में पड़ा है सो है वो भी ग्रादमी

हैरान हूँ यारो देखो तो क्या ये सवांग है
ग्रौर ग्रादमी ही चोर है ग्रौर ग्रापी थांग[1] है
है छीना झपटी ग्रौर कहीं मांग तांग हैं
देखा तो ग्रादमी ही यहाँ मिस्ले रांग[2] है
फ़ौलाद से गढ़ा है सो है वो भी ग्रादमी

मरने में ग्रादमी ही कफ़न करते हैं तयार
नहला धुला उठाते हैं कांधे पे कर सवार
कलमा भी पढ़ते जाते हैं रोते हैं ज़ार ज़ार
सब ग्रादमी ही करते हैं मुर्दे का कारोबार
ग्रौर वो जो मर गया है सो है वो भी ग्रादमी

ग्रशराफ़[3] ग्रौर कमीने से ले शाह ता वज़ीर
हैं ग्रादमी ही साहिबे इज़्ज़त भी ग्रौर हक़ीर[4]
याँ ग्रादमी मुरीद है ग्रौर ग्रादमी ही पीर
ग्रच्छा भी ग्रादमी ही कहाता है ऐ नज़ीर
ग्रौर सब में जो बुरा है सो है वो भी ग्रादमी

१. चोर को शरण देने वाला; २. रांगे की तरह; ३. भद्र; ४. तुच्छ, अधम।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

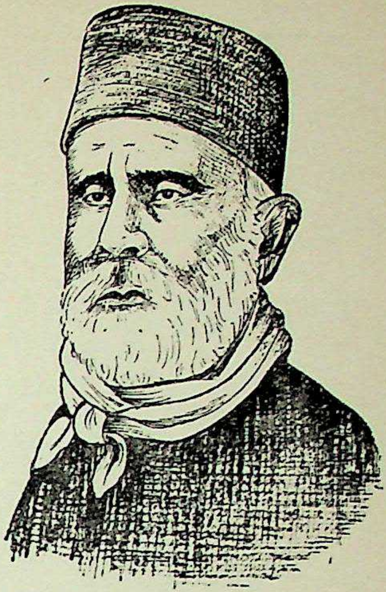

हाली

मौलाना अल्ताफ़ हुस्सैन हाली अनसारियों के एक श्रेष्ठ खानदान से सम्बन्ध रखते थे। आप के पिता का नाम ख्वाजा एज़दबख्श था। आप सन् १८३७ में पानीपत में पैदा हुए। अभी शिक्षा ग्रहण कर ही रहे थे कि पिता का देहान्त हो गया। विद्या और साहित्य से स्वाभाविक प्रेम था। १८५४ में घर-बार छोड़कर दिल्ली चले गए। शायरी में मिर्ज़ा ग़ालिब के शिष्य थे, परन्तु नवाब मुस्तफ़ा खां शेफ़ता के साथ रहकर भी बहुत कुछ ग्रहण किया। नौकरी के सिलसिले में लाहौर भी रहे। २१ दिसम्बर १९१४ को देहान्त हुआ। पानीपत में बू अली शा कलन्दर की दरगाह में दफ़न हैं।

हाली लेखक भी थे, समालोचक भी और उच्च कोटि के कवि भी। उर्दू की नई कविता के वह मार्ग-दर्शक थे। उन्होंने अपने काव्य संग्रह की जो प्रस्तावना मुकद्दमाए-शेरो-शायरी के नाम से लिखी है, वह उर्दू कविता की पुरातन परम्परा पर पहली कड़ी चोट है। उन्होंने व्यंग्य और हास्य में भी कमाल दिखाया है। इस में कहीं घटियापन अथवा फक्कड़पन नहीं मिलता। इन के हास्य को गुदगुदियां कहिए या चुटकियां। दिल और दिमाग इस से गद्गद हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो मुलाज़िम एक काला और गोरा दूसरा
दूसरा पैदल--मगर पहला सवारे रहवार[1]
थे सिविल सर्जन की कोठी की तरफ़ दोनों रवाँ
क्योंकि बीमारी की रुख़सत के थे दोनों ख़्वास्तगार[2]
राह में दोनों के बाहम हो गई कुछ हुश्त मुश्त
कोख में काले की इक मुक्का दिया गोरे ने मार
सदमा पहुँचा जिस से तिल्ली को बहुत मिस्कीन[3] की
आके घोड़े से लिया साईस ने उस को उतार
ठोक कर काले को गोरे ने तो अपनी राह ली
चोट के सदमे से ग़श काले को आया चंद बार
आख़िरश कोठी पे पहुँचे जाके दोनों पेशो पस[4]
ज़ारिब[5] अपने पाओं और मज़्रूब[6] डोली में सवार
डाक्टर ने आके दोनों की सुनी जब सर गुज़श्त
तह को जा पहुँचा सुख़न की सुन के क़िस्सा एक बार
दी सनद गोरे को लिखी जिस में तस्दीके मरज़
और ये लिक्खा था कि साइल[7] है बहुत ज़ारो नज़ार[8]
यानी इक काला न जिस गोरे के मुक्के से मरे
कर नहीं सकता हुकूमत हिन्द पर वो ज़ीनहार[9]
और कहा काले से तुम को मिल नहीं सकती सनद
क्योंकि तुम मालूम होते हो बज़ाहिर जानदार

१. घोड़े पर सवार; २. इच्छुक; ३. असहाय; ४. आगे-पीछे; ५. आघात करने वाला; ६. जिसको चोट लगी हो; ७. प्रार्थी; ८. दुबला और अशक्त; ९. कदापि।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक काला पिट के जो गोरे से फ़ौरन मर न जाय
आये बाबा उस की बीमारी का क्यों कर एतबार

× × ×

कहते हैं एक अमीर ज़ादे को
था ख़दंग अफ़्गनी[1] का शौक़ कहीं
ख़स्लतें जो अमीरज़ादों में
लाज़िमी हैं वो उसमें भी सब थीं
वाह-वा सुनते सुनते यारों की
हो गया था हुनर का अपने यक़ीं
अलग़रज़ एक रोज़ सहरा में
जब कि थे साथ सब जलीसो क़रीं[2]
मश्क़े तीर अफ़्गनी[3] में था मसरूफ़
कर रहे थे ख़ोशामदी[4] तहसीं
आके देखा जो इक जरीफ़[5] ने हाल
वज्हे तहसीं हुई न ज़िह्न नशीं
जा के भूले से भी न पड़ता था
तीर आमाजगह[6] के कोई क़रीं[7]
कुछ जो शोख़ी ज़रीफ़ को सूझी
रख के वालाए ताक़[8] सब तमकीं[9]
ख़ाक तूदे[10] पे हो के जा बैठा
लोग करते रहे चुनाँ[11] ओ चुनीं
नावक अंदाज़[12] बोला चिल्ला कर
कोई तुझ को जुनूँ[13] है ऐ मिस्कीं
अर्ज़ की चारा क्या है इस के सिवा
जब कि जाए गुरेज़[14] हो न कहीं

---

१. बाण चलाना; २. पार्षद और मित्र; ३. तीर चलाने में; ४. प्रशंसा; ५. विनोदी स्वभाव का व्यक्ति; ६. निशाने की जगह; ७. निकट; ८. छोड़कर; ९. गंभीरता; १०. मिट्टी का ढेर; ११. ऐसा और वैसा; १२. तीर चलाने वाला; १३. उन्माद; १४. भागने का स्थान।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज़द से इन बे पनाह तीरों की
कहीं जाँ दार को अमान नहीं
मुझको हिरफिरके शशजिहत[1] में हुज़ूर
अम्न की इक जगह मिली है यहीं

× × ×

सैयद अहमद ख़ाँ के इक मुनकिर[2] से ये पूछा कि आप
किस लिए सैयद से साफ़ ऐ हज़रते वाला नहीं
आप भी नामे ख़ुदा हैं तारिके सूमो सलात[3]
और सुलूक इस्लाम से ख़ुद आप का अच्छा नहीं
चश्मे बद दूर आप का भी जब कि है मशरब[4] वसी
फिर ये सैयद पर तबर्रा[5] आप को ज़ेबा नहीं
सुन के फ़रमाया अगर हो पूछते इन्साफ़ से
बात ये है सुन लो साहिब तुम से कुछ पर्दा नहीं
रंज कुछ इस का नहीं मुझ को कि वो ऐसा है क्यों
बल्कि सारी कोफ्त इस की है कि मैं वैसा नहीं

× × ×

आदत थी इक फ़क़ीर की करता था जब सवाल
अंग्रेज़ के सिवा न किसी से था माँगता
मुद्दत तक उस की जब यही देखी गयी रविश
पूछा किसी ने उस से कि इस का सबब है क्या
बोला कि आदत इसलिए की है ये इख्तियार
छुट जाए ताकि मुझ से ये लपका सवाल का
पहले जो भागवानों से मिलती थी रोज़ भीख
आता था माँगने में बहुत भीख का मज़ा
पर जब से है सवाल का इस क़ौम का मदार[6]
मिन्नत से अज्ज़[7] से कभी मिलता नहीं टका

१. छह दिशाएँ—चारों दिशाएँ और ऊपर-नीचे की दो दिशाएँ; २. विरोधी; ३. रोज़ा-नमाज़ न करने वाला; ४. मत; ५. निन्दा; ६. निर्भरता; ७. विनीत भाव।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुरा शेर कहने की गर कुछ सज़ा है
अबस[1] झूठ बकना अगर नारवा है
तो वो महकमा जिसका क़ाज़ी ख़ुदा है
मुक़र्रर जहाँ नेको बद की जज़ा है
गुनहगार वाँ छूट जायेंगे सारे
जहन्नुम को भर देंगे शाइर हमारे

ज़माने में जितने क़ुली और नफ़र हैं
कमाई से अपनी वो सब बहरावर[2] हैं
गवइये अमीरों के नूरे नज़र हैं
डफ़ाली भी ले आते कुछ माँग कर हैं
मगर इस तपेदिक़ में जो मुब्तिला हैं
ख़ुदा जाने वो किस मरज़ की दवा हैं

वो शेर और क़साइद[3] का नापाक दफ़्तर
उफ़ूनत[4] में संडास से जो है बदतर
ज़मीं जिस से है ज़लज़ले में बराबर
मलक[5] जिस से शर्माते हैं आस्माँ पर
हुआ इल्मो दीं जिस से ताराज[6] सारा
वो है हर्फ़ नज़र[7] इल्मे इन्शा[8] हमारा

× × ×

मान लीजिए शैख़ जो दावा करे
इक बुज़ुर्गे दीं को हम झुठलायें क्या

× × ×

लोग क्यों शैख़ को कहते हैं कि अय्यार[9] है वो
उस की सूरत से तो ऐसा नहीं पाया जाता

× × ×

१. बेकार; २. लाभान्वित; ३. प्रशंसात्मक कविता; ४. गंदगी; ५. फ़रिश्ते; ६. विनष्ट; ७. भगवान बुरी दृष्टि के प्रभाव से बचाये; ८. गद्य-रचना शास्त्र; ९. धूर्त ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देखिये शैख़ मुसव्विर से खिंचे या न खिंचे
सूरत और आप से बे ऐब बशर की सूरत
वाइज़ो आतशे दोज़ख़ से जहाँ को तुम ने
ये डराया है कि ख़ुद बन गये डर की सूरत

× × ×

शैख़ रिन्दों में भी हैं कुछ पाकबाज़
सब को मुलज़िम तू ने ठहराया अबस[1]
आ निकलते थे कभी मस्जिद में हम
तू ने ज़ाहिद हम को शर्माया अबस

× × ×

बात वाइज़ की कोई पकड़ी गई
इन दिनों कमतर है कुछ हम पर लताड़

× × ×

शैख़ अल्लाह रे तेरी अय्यारी
किस तवज्जोह से पढ़ रहा है नमाज़

× × ×

कहे अगर कोई तुम को वाइज़ कि कहते कुछ और करते कुछ हो
जमाने की ख़ू[2] है नुक्ताचीनी कुछ इसकी पर्वा न कीजिएगा

× × ×

ज़ाहिद कहता था जाँ है दीं पर क़ुरबान
पर आया जब इम्तिहाँ की ज़द पर ईमान
की अर्ज़ किसी ने कहिये अब क्या है सलाह
फ़रमाया कि भाई जान जी है तो जहान

× × ×

पूछा जो कल अंजामे तरक़्क़िये बशर[3]
यारों से कहा पीरे मुग़ाँ ने हँस कर
बाक़ी न रहेगा कोई इन्सान में ऐब
हो जायेंगे छिल छला के सब ऐब हुनर

× × ×

१. बेकार; २. स्वभाव; ३. मनुष्य की उन्नति का परिणाम ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देखो जिस सल्तनत की हालत दरहम[1]
समझो कि वहाँ है कोई बरकत का क़दम
या तो कोई बेगम है मुशीरे दौलत[2]
या है कोई मौलवी वज़ीरे आज़म

× × ×

यारों में न पाया जब कोई ऐबो गुनाह
काफ़िर कहा वाइज़ ने उन्हें और गुमराह
झूठे को नहीं मिलती शहादत जिस वक़्त
लाता है ख़ुदा को अपने दावे पे गवाह

× × ×

नसीहत बे असर है गर न हो दर्द
ये गुर नासिह[3] को बतलाना पड़ेगा

× × ×

वाइज़ आता है तो आने दो उसे
पर मज़ा आने का याँ क्या पायेगा
आयेगा और हम को शर्मायेगा मुफ़्त
और ख़ुद शर्मिन्दा हो कर जायेगा
ऐब से ख़ाली न वाइज़ है न हम
हम पे मुँह आयेगा मुँह की खायेगा

---

१. अस्त-व्यस्त; २. राज्य-परामर्शदाता; ३. उपदेशक ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज़रीफ़ जब्बलपुरी

२६ नवम्बर, १९१३ को कटनी, ज़िला जब्बलपुर में पैदा हुए। माता-पिता ने हामिद रजा नाम रखा, परन्तु बचपन ही से ज़रीफ़ाना शेर कहने लगे और 'ज़रीफ़' नाम से मशहूर हो गए। नसीम भरतपुरी इनके दादा के छोटे भाई थे। आजकल पाकिस्तान में हैं। इनकी कविताओं में 'गरीबी', 'मैकैनिक', 'शायर', 'मच्छर', इत्यादि बहुत मशहूर हैं। यह अपने शेरों में युद्ध, महँगाई और राजनीति पर व्यंग्य कसते रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हमारी क़ब्र के तख़्ते चुरा के कहते हैं
है कंटरोल की लकड़ी गिराँ नहीं मालूम ।

× × ×

फ़िरदौस तक थे दर खुले माहे सियाम[1] में
और वा[2] अगर न था तो तुम्हारा ही दर न था ।

× × ×

इश्क़ में और क्या हो हवसे[3] दवाम
हिज्र ख़ुद अंडेमान है प्यारे ।

× × ×

हम आप होंगे न होगा अदू[4] रहेगी कमी
कि जैसे ताँगे में इक बम नहीं तो कुछ भी नहीं ।

× × ×

आपकी याद बन गई अकसीर
ख़ाक में मिल गई हमारी याद ।

× × ×

सोना महँगा है तो फिर ताँबे के सिक्के ही सही
नोट और वो भी फटा हो मुझे मंज़ूर नहीं ।

× × ×

क्या नमक उठ गया ज़माने से
फीका पकवान खा रहा हूँ मैं ।

× × ×

---

१. रमजान का महीना जब मुसलमान रोज़े रखते हैं; २. खुला हुआ
३. हमेशा की कैद ; ४. शत्रु ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अक़्लें दुरुस्त हो गईं महँगाई के सबब
सब बेवक़ूफ़ जंग में चालाक हो गये

× × ×

क्या सियासत है कि हैं वो जंग से बेज़ार भी
ग़ैर की जानिब भी हैं और ग़ैर जानिबदार[१] भी

× × ×

कपड़ा रूपोश है उरियानी[२] छुपाएँ कबतक
चंद इक दिन में लँगोटी उतर जायेगी

× × ×

मेरे बालों से वो उलझते हैं
उनकी ज़ुल्फ़ों में फँस गया हूँ मैं

× × ×

ढूँढ़ते हैं वो मेरे सज्दों को
संगे दर पर बड़ी खुदाई है

× × ×

इक ग़ैर था कि पा गया दस साल की सज़ा
अब कोई दरमियान में हाइल नहीं रहा

× × ×

मैं तो निपट ही लूँगा तुम मुँह से 'हाँ' तो कह दो
आख़िर अदू अदू[३] है या तीस मार ख़ाँ हैं

× × ×

ज़ाहिदोरिन्द[४] दोनों यकसाँ हैं
अपनी अपनी मगर तबीअत है

× × ×

तिरे ईमान की नैया भटकती फिरती है ज़ाहिद
कभी कौसर[५] के मौजों में कभी गंगा के धारों में

× × ×

१. निष्पक्ष; २. नग्नता ३. शत्रु; ४. संयमी और मद्यप; ५. स्वर्ग का एक कुंड।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महफ़िल की इनायत से ज़रीफ़े सुख़नआरा[1]
वो दाद मिली है कि खुजाया नहीं जाता

× × ×

उन से मिलने को जो पूछा तो तुनक कर बोले
तुम तो सुनते ही नहीं कह तो दिया ईद के दिन

× × ×

पढ़ते पढ़ते हो गये कालिज से ओवर एज हम
नौकरी करने का भी अब हम को डर जाता रहा

× × ×

दरियाए ज़राफ़त में तूफ़ाँ कुछ ऐसा ज़रीफ़ उठाता है
अशआर हमारे सुन सुन कर सब ही ही हा हा करते हैं

× × ×

शबे फ़िराक़[2] जिसे आशिक़ी में कहते हैं
वो रात ख़ुद नहीं आती बुलाई जाती है

× × ×

हुजूमे आशिक़ाँ देखा जो दरवाज़े पे वो बोले
हमें ये टीम तो आल इंडिया मालूम होती है

× × ×

हुआ कोएजुकेशन[3] जब से राइज इंडिया भर में
हर इक तालीमगाह इंदरसभा मालूम होती है

× × ×

मुझे दफ्तर से और घर से तो फ़ुरसत ही न मिलती थी
गुनह फिर कब किये आख़िर करामन कातिबीं[4] मैंने
बताया इस तरह पुर लुत्फ़ क़िस्सा अपनी उल्फ़त का
फ़साना था किसी का अपनी बातें ठूँस दीं मैंने

× × ×

१. कविता को सुशोभित करने वाला जरीफ़ (स्वयं कवि); २. विरह की रात; ३. सह-शिक्षा; ४. दो फ़िरिश्ते जो आदमी के पाप-पुण्य का लेखा रखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उश्शाक़े सलफ़[1] में और हम में तालीम के बाइस फ़र्क़ ये है
वो हिज्र में रोया करते थे हम हिज्र में गाया करते हैं

× × ×

जिसे चाहें अपना दिल दें कि ये दिल तो है हमारा
न अदू का इसमें झगड़ा न तुम्हारा कुछ इजारा
तुझे मर के भी न छोड़ूँ कि ज़रीफ़े ज़िन्दा दिल हूँ
इसे यूँ समझ ले हमदम[2] तू नदी है मैं किनारा

× × ×

वो दिल में घुस रहे हैं और मैं महसूस करता हूँ
कि सिंगापूर में जापान दाख़िल होता जाता है

× × ×

उल्फ़त के मोजिज़े[3] जो दिखाने लगा हूँ मैं
नासिह[4] को राहे इश्क़ पे लाने लगा हूँ मैं

× × ×

झुकाने को हर दर पे सर को झुका दूँ
नुमाइश[5] का सज्दा इबादत[6] नहीं है

१. पहले ज़माने के प्रेमी; २. मित्र; ३. चमत्कार; ४. उपदेशक; ५. दिखावा; ६. उपासना।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अकबर इलाहाबादी

पूरा नाम सैयद अकबर हुसैन रिजवी था परन्तु अकबर इलाहाबादी के नाम से मशहूर हैं। १६ नवम्बर १८४६ को इलाहाबाद ज़िले के एक नगर बारह में पैदा हुए। प्रारम्भिक शिक्षा सरकारी स्कूलों में पाई। अंग्रेज़ी अपने परिश्रम से सीखी। १८६६ में नायब तहसीलदार हुए, और बढ़ते-बढ़ते १८८८ में जज की पदवी पर पहुँच गए। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के फैलो भी थे। ६ सितम्बर, १६२१ को देहान्त हुआ।

आप के यहाँ हर प्रकार का हास्य और व्यंग्य मिलता है और वह भी ऐसा जो हर ज़माने में सर्वप्रिय रहेगा। आप ने नवीन और पश्चिमी सभ्यता का मज़ाक भी उड़ाया है परन्तु इसके साथ-साथ पाखण्डी धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक नेताओं को भी लताड़ा है।

१८७७ में जब मुन्शी सज्जाद हुसैन ने अवध पंच निकाला तो उसमें आप निरन्तर लिखते रहे। और उसके पश्चात् उर्दू साहित्य को हास्य-रस की अमूल्य निधियाँ प्रदान करते रहे। उर्दू के प्रसिद्ध लेखक और इनके श्रद्धालु अब्दुल माजिद दरयाबादी लिखते हैं, "इनके नाम को कहकहों ने उछाला। इनकी शोहरत को मुस्कुराहटों ने चमकाया। हिन्दुस्तान में जो घर-घर इनका नाम है—इस इमारत की सारी दाग बेल इनकी शोखनिगारी और लतीफागोयी की डाली हुई है।" इनकी कविताओं के अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दुनिया का दीदनी वो तमाशा निकल गया
अब गर्द रह गई है ये मेला निकल गया
अब माद्दे[1] के छानने वाले ही रह गये
रूहानियात[2] का वो अखाड़ा निकल गया
मैं खुश हुआ जो आप ने दीं मुझ को गालियाँ
अच्छा हुआ बुख़ार तो दिल का निकल गया
बाज़ारे मग़्रिबी की हवा से ख़ुदा बचाये
मैं क्या महाजनों का दिवाला निकल गया

× × ×

अबस[3] बिलकुल है हाले दिल किसी से आजकल कहना
बहुत जोशे तबीअत हो तो जाइज़ है ग़ज़ल कहना
फ़क़त तामीरे कालिज पर मैं फूलूँ ये नहीं मुमकिन
मुबारक आप ही लोगों को हो पत्ती को फल कहना

× × ×

बदली वो हवा गुज़रा वो समाँ वो राह नहीं वो लोग नहीं
तफ़रीह कहाँ और सैर कुजा घर से भी निकलना छोड़ दिया
हर गाम पे चंद आँखें निगराँ[4] हर मोड़ पे इक लैसेंस तलब
उस पार्क में आख़िर ऐ अकबर मैंने तो टहलना छोड़ दिया
अल्लाह की राह अब तक है खुली आसारो निशाँ[5] सब क़ायम हैं
अल्लाह के बंदों ने लेकिन उस राह में चलना छोड़ दिया
इस हूरलिक़ा को घर लाये हो तुम को मुबारक ऐ अकबर
लेकिन ये क़ियामत की तुम ने घर से जो निकलना छोड़ दिया

---

१. जड़ पदार्थ ; २. आध्यात्मिकता ; ३. बेकार ; ४. निरीक्षक ; ५. चिह्न या निशान।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिरा दिल तो हमेशा अम्रे खातिर ख़्वाह[1] चाहेगा
मगर होगा वही अकबर कि जो अल्लाह चाहेगा
ग़ज़ल सुननी हो अकबर की तो उसको उज्र ही क्या है
मगर हर शेर पर वो अंजुमन[2] में वाह चाहेगा

× × ×

ठन गयी आज यही दिल में कि पहुँचूँ उन तक
या मिरी ख़ैर नहीं या नहीं दरबान की ख़ैर
उसने मैदान में सर देके किया क़ौम का नाम
आप बंगले में मनाया ही किये जान की ख़ैर
उस मिसे बर्क़े कलीसा[3] का है लैक्चर अकबर
आज तो इल्म भी मांगेगा मुसलमान की ख़ैर

× × ×

किस तर्ह पर्दे में रहे ऐ शैख़ औरत इक तरफ़
सारे ख़यालात इक तरफ़ मुल्की ज़रूरत इक तरफ़
मश्रिक़ के वाइज़ इक तरफ़ मग़्रिब की ज़ीनत[4] इक तरफ़
अक़्ली दलीलें इक तरफ़ और दिल की रग़बत[5] इक तरफ़
इस्पेन्सरो मिल के वरक़ हैं किस क़ियामत के सबक़
कुल तोपख़ाना इक तरफ़ बाबू की जुरअत इक तरफ़
अकबर दरे बुतख़ाना पर ऐसा जमा टलता नहीं
सारी ख़ुदाई इक तरफ़ उस बुत की सूरत इक तरफ़
ज़िक्रे ख़ुदा यादे अजल[6] काफ़ी हैं उसके वास्ते
मैदाने आनर इक तरफ़ अकबर की हिम्मत इक तरफ़

× × ×

लुत्फ़ चाहो इक बुते नौख़ेज़[7] को राज़ी करो
नौकरी चाहो किसी अंग्रेज़ को राज़ी करो
लीडरी चाहो तो लफ़्ज़े क़ौम है मेहमाँनवाज़[8]
गप नवीसों को और अह्ले मेज़ को राज़ी करो

१. अभीष्ट बात; २. सभा; ३. गिरजा की बिजली अर्थात् ईसाई सुन्दरी जो बिजली के समान है; ४. शोभा; ५. रुचि; ६. मृत्यु की याद; ७. नव युवती; ८. अतिथि-सत्कर्ता

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ताअ़तो[1] अम्नो सुकूँ का दिल को लेकिन हो जो शौक़
सब्र पर तब्‌ए हवस अंगेज़[2] को राज़ी करो
ज़क़ ज़क़ो बक़ बक़ में दुनिया के न हो अकबर शरीक
चुप ही रहने पर ज़बाने तेज़ को राज़ी करो।

× × ×

वज़्अ बदली घर को छोड़ा काग़ज़ों में छप गये
चन्द रोज़ा खेल था आख़िर को सब मर खप गये

× × ×

बहुत ही उम्दा है ऐ हम नशीं ब्रिटिश राज
कि हर तरह के ज़वाबित[3] भी हैं उसूल भी हैं
जो चाहे खोल ले दरवाज़ए अदालत को
कि तेल पेच में है ढीली उसकी चूल भी है
जगह भी मिलती है कौंसिल में आनरेबली की
जो इल्तिमास[4] हो उम्दा तो वो क़बूल भी है
चमक-दमक की वो चीज़ें हैं हर तरफ फैली
कि आँख महृव है ख़ातिर[5] अगर मलूल[6] भी है
अंधेरी रात में जंगल में है रवाँ इंजन
कि जिसको देख के हैरान चश्मे ग़ुल[7] भी है
शगुफ़्ता पार्क में हर सम्त रहरवों के लिए
नज़रनवाज़[8] है पत्ती हसीन फूल भी है
जब इतनी नेमतें मौजूद हैं यहाँ अकबर
तो हर्ज क्या है जो साथ उसके डैमफ़ूल भी है

× × ×

कौंसिलों में सवाल करने लगे
क़ौमी ताक़त ने जब जवाब दिया

× × ×

१. उपासना ; २. लोभी मन ; ३. नियम; ४. प्रार्थना; ५. मन; ६. दुखी; ७. प्रेत की आँख; ८. नेत्र प्रिय।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐ दोस्त मुझे तो है ख़ुदा ही पे भरोसा
दुश्मन को मुबारक हो मिरी घात में रहना

× × ×

अकबर न थमा बुतख़ाने में ज़हमत भी हुई और ज़र भी गया
कुछ नामे ख़ुदा से उन्स भी था कुछ ज़ुल्मे बुताँ[1] से डर भी गया
परवाने का हाल इस महफ़िल में है क़ाबिले रश्क ऐ अह्ले नज़र
इक शब ही में ये पैदा भी हुआ आशिक़ भी हुआ और मर भी गया
काबे से जो बुत निकले भी तो क्या काबा ही गया जब दिल से निकल
अफ़सोस कि बुत भी हम से छुटे क़ब्ज़े से ख़ुदा का घर भी गया
जो गूँज रहा था ख़ुशियों से उस क़स्र[2] पे कल रोया मैं बहुत
कोई मुतनफ़्फ़िस[3] था न वहाँ बाहर भी फिरा अंदर भी फिरा
क्या गुज़री जो इक पर्दे के अदू[4] रो रो के पुलिस से कहते थे
इज्ज़त भी गई दौलत भी गई बीबी भी गई ज़ेवर भी गया
अकबर के जो मर जाने की ख़बर साक़ी ने सुनी तो ख़ूब कहा
मरना तो ज़रूरी था ही उसे रिंदों के लिए कुछ कर भी गया

× × ×

तंग दुनिया से दिल इस दौरे फ़लक में आ गया
जिस जगह मैंने बनाया घर सड़क में आ गया
आस्माँ को तो ग़लत साबित किया साइंस ने
अर्श बाक़ी था सो वो भी मद्दे शक[5] में आ गया

× × ×

एक साअत की यहाँ कह नहीं सकता कोई
ये भला कौन बताये तुम्हें कल क्या होगा
एक दिन और क़ियामत खिसक आयेगी इधर
और क्या अर्ज़ करूँ आपसे कल क्या होगा

× × ×

१. प्रिय का अत्याचार; २. महल; ३. प्राणी; ४. शत्रु; ५. संशय के अंतर्गत ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शेख़ साहब जम्अबंदी में न क्यों उलझे रहें
हिन्द का इस्लाम ही खेवट में दाख़िल हो गया

× × ×

उमीदे चश्मे मुरव्वत[1] कहाँ रही बाक़ी
ज़रिया बातों का जब सिर्फ़ टेलीफ़ून हुआ
निगाह गर्म क्रिसमस में भी रही हम पर
हमारे हक़ में दिसम्बर भी माहे जून हुआ

× × ×

बज्मे साक़ी की कहाँ वो मस्तियाँ
छुप के अकबर ने अगर पी भी तो क्या

× × ×

मग़्रबी ज़ौक है और वज़अ की पाबंदी भी
ऊँट पर चढ़के थियेटर को चले हैं हज़रत

× × ×

हम उर्दू को अरबी क्यों न करें उर्दू को वो भाषा क्यों न करें
बहसों के लिए अख़बारों में मज़मून तराशा क्यों न करें
आपस में अदावत कुछ भी नहीं लेकिन इक अखाड़ा क़ायम है
जब इससे मुल्क[2] का दिल बहले हम लोग तमाशा क्यों न करें

× × ×

बूज़िने[3] को रक़्स[4] पर किस बात की मैं दाद दूँ
हाँ ये जायज़ है मदारी को मुबारकबाद दूँ

× × ×

चर्ख़[5] ने पेशे कमीशन कह दिया इज़हार में
क़ौम कालिज में और उसकी ज़िंदगी अख़बार में

× × ×

---

१. शील संकोच की आश; २. देश; ३. बन्दर; ४. नृत्य; ५. आकाश।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जहाँ दर्शन तुम्हारे हों वहीं धूनी रमाऊँगा
इलाहाबाद का क़ैदी न पाबंदे बनारस हूँ

× × ×

बंगलों ही की छतों पे करें शाइर अब निगाह
दौरे जदीद[1] में कोई शय आस्माँ नहीं

× × ×

पड़ जायें अभी आबले[2] अकबर के बदन में
पढ़ कर जो कोई फूँक दे अप्रेल मई जून

× × ×

कोर्स तो लफ़्ज ही सिखाते हैं
आदमी आदमी बनाते हैं
जुस्तजू हमको आदमी की है
वो किताबें अबस[3] मंगाते हैं

× × ×

बढ़ाता जाता है ज़ोफ़ अपना ज़ोर आहिस्ता-आहिस्ता
लिये जाती है पीरी[4] सूए गोर[5] आहिस्ता-आहिस्ता
तुम्हारी एहतियातें मुतमइन करतीं नहीं मुझको
समझता हूँ क़दम रखता है चोर आहिस्ता-आहिस्ता

× × ×

ये तो सच है जी लगाकर चाहिये पढ़ना नमाज़
ये भी सुन लो जी लगा कर साँस लेना चाहिये

× × ×

कमेटी में चंदा दिया कीजिए
तरक़्क़ी के हिज्जे किया कीजिए

× × ×

दरिया में तो साहब के अगनबोट से हारे
मैदाने इलेक्शन में गये वोट से हारे

× × ×

---

१. आधुनिक युग; २. छाले ३. बेकार; ४. बुढ़ापा; ५. कब्र की ओर।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तहज़ीब दम बखुद है तमअ[1] की घसीट से
हज़रत भी काम लेने लगे मारपीट से
इज़्ज़त की तो शनाख़्त नहीं है मगर मुझे
लज्ज़त ज़रूर मिलती है कौंसिल की सीट से

× × ×

इतना जिये कि जानने वाले गुज़र गये
पुरसाँ रहा न कोई तो चुपचाप मर गये

× × ×

डेढ़ सौ मेहराब मस्जिद में ज़रा दुश्वार हैं
सायए होटल में बसिये या फ़क़त दस लीजिए
हज़रते अकबर से कह दो क़ाफ़िला तैयार है
इक रिज़ुल्यूशन का टट्टू आप भी कस लीजिए

× × ×

सेठ जी को फ़िक्र थी एक इक के दस दस कीजिए
मौत आ पहुँची कि हज़रत जान वापस कीजिए
मातमे शामे अवध में मैं तो अब मसरूफ़ हूँ
आप ही नज्ज़ारए सुब्हे बनारस कीजिए

× × ×

शुक्र है सुन्नी ओ शीअ का इरादा नेक है
तर्ज़े ताअत[2] दो सही तरकीबे कालिज एक है
घर में गो ये फ़र्क ज़ाहिर हो कि हलवा या पुलाव
ख़्वाने मग़्रिब[3] पर मगर दोनों के आगे केक है

× × ×

सदियों फ़िलासोफ़ी की चुनाँ और चुनीं[4] रही
लेकिन ख़ुदा की बात जहाँ थी वहीं रही

× × ×

१. लालच; २. उपासना की रीति; ३. पश्चिमी थाल; ४. ऐसा और वैसा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस्लाम के दावे से मैं बाज़ आता हूँ साहब
ये कौन बताये तुम्हें अल्लाह कहाँ है
सर्विस में मैं दाख़िल नहीं हूँ क़ौम का ख़ादिम
चंदों की फ़क़त आस है तनख़ाह कहाँ है

× × ×

भंडार से दे दूँगा बख़ुशी सीधा जो गुरूजी माँगेंगे
हाँ काम ज़रा टेढ़ा होगा बिस्कुट को जो सूजी माँगेंगे

× × ×

कर ली है मैंने ख़ूब नई रोशनी की जाँच
मुझ से बहुत न कीजिए अब आप तीन-पाँच
इन लीडरों की शोला ज़बानी[1] से क्या हुआ
हांडी तो सर्द रह गई मज़हब पर आई आँच

× × ×

मिरे अमल से न शैख़ ख़ुश हैं न भाई ख़ुश हैं न बाप ख़ुश हैं
मगर मैं समझा हूँ इस को अच्छा दलील ये है कि आप ख़ुश हैं
जो देखा साइंस का ये चक्कर धरम पुकारा कि ऐ बिरादर
हमारे दौरे में पुन मगन थे तुम्हारे दौरे में पाप ख़ुश हैं

× × ×

मुझ को हैरत है कि हैं ये किस गुरू की चेलियाँ
हश्र[2] बरपा कर रही हैं मग़्रिबी अलबेलियाँ
अपने हाथों अपने साँचे का करेंगी बंदोबस्त
ये नहीं वो गुड़ कि तुम उनकी बनाओ भेलियाँ

× × ×

आदम छुटे बिहिश्त से गेहूँ के वास्ते
मस्जिद से हम निकल गये बिस्कुट की चाट में

---

१. ऐसा भाषण जिस में अग्नि जैसी गर्मी हो ; २. प्रलय ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साहिब सलामत अब भी मिरी शैख़ जी से है
लेकिन-छटे छमाहे वही राह हाट में

× × ×

ख़्वाह साहब को तुम सलाम करो
ख़्वाह मंदिर में राम राम करो
भाई जी का फ़क़त ये मतलब है
जिसमें रुपया मिले वो काम करो

× × ×

मेरी निस्बत जो हुआ इर्शाद वो मैंने सुना
ये तो कहिये अपनी निस्बत आपकी क्या राय है

× × ×

तालीम की ख़राबी से हो गई बिल आख़िर
शौहर परस्त बीबी पब्लिक पसंद लेडी

× × ×

क्यों ने अपने दिल को हो उन से मिलाप
लाट साहब हैं हमारे माई-बाप
उनके हक़ में भी दुआ करते हैं हम
मंदिरों में जब कभी करते हैं जाप
उनकी बढ़ती सब मनाते हैं यहाँ
ख़्वाह वो हों ख़्वाह हम हों ख़्वाह आप
हर तरफ़ सामान हैं आराम के
खुल गई है हर तरफ़ हर शय की शाप
हो गये रौशन हुदूदे आस्माँ[1]
इल्म चमका हो गई तारों की नाप
सारी धरती दब गई साइंस से
लग गये पाइप गया दुनिया से पाप

---

१. आकाश की सीमाएँ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हज़रते वाइज़ हैं राज़ी रक़्स[1] पर
देर क्या है अब पड़े तबले पे थाप

× × ×

मैं भी ग्रेजुएट हूँ तू भी ग्रेजुएट
इल्मी मुबाहसे[2] हों ज़रा पास आ के लेट

× × ×

मुन्शी कि क्लर्क या ज़मींदार
लाज़िम है कलक्टरी का दीदार

× × ×

हंगामा ये वोट का फ़क़त है
मतलूब हर इक से दस्तख़त है
हर सम्त में हुई है हलचल
हर दर पे ये शोर है कि चल चल
टमटम हो कि गाड़ियाँ कि मोटर
जिस पर देखो लदे हैं वोटर
शाही वो है या पयम्बरी है
आख़िर क्या शय ये मिम्बरी है
नेटिव है नमूद ही का मुहताज
कौंसिल तो है उन की जिन का है राज

× × ×

उसका घोड़ा जिसकी काठी
भैंस उसी की जिसकी लाठी
ज़ोर बठावे थाने थाने
दुनिया देखे दुनिया माने
तुझ को तो है ख़ाली छपना
इससे अच्छा हर को जपना

× × ×

---

१. नृत्य ; २. शास्त्रीय विवेचन ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मालवी का माल कुछ और मोलवी का मोल कुछ
कहते हैं बाज़ार में अकबर से तू भी बोल कुछ
बोला वो दुनिया का सौदा तो फ़क़त इक खेल है
उम्दगी है माल में और मोल में जब मेल है

× × ×

सदाक़त के निशाँ इस मिस्रए अकबर में मिलते हैं
कलें साइंस से चलती हैं दिल मज़हब से हिलते हैं

× × ×

शैतान ने तरकीबे तनज़्ज़ुल[1] ये निकाली
इन लोगों को तुम शौक़ तरक़्क़ी का दिला दो

× × ×

अज़ीज़ लड़ते हैं आपस में ये सितम क्या है
ख़ुदा की मार से वोटों की मार कम क्या है

× × ×

दिल में अब नूरे ख़ुदा के दिन गये
हड्डियों में फ़ासफ़ोरस देखिये

× × ×

मिरी खेती तो इक मुद्दत हुई चिड़ियों ने चुग ली है
मै क्यों पूछूँ जगह ठाकुर की जमना है कि हुगली है

× × ×

आप में सब जमअ हैं मुझ से न पी पी कीजिए
आप इस बोतल को मेरे घर पे वी पी कीजिए

× × ×

क़द्रदानों की तबीअत का अजब रंग है आज
बुलबुलों को है ये हसरत कि वो उल्लू न हुए

× × ×

---

१. अवनति की युक्ति।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खेंचो न कमानों को न तलवार निकालो
जब तोप मुक़ाबिल है तो अखबार निकालो

× × ×

शैख़ जी के दोनों बेटे बाहुनर पैदा हुए
एक हैं ख़ुफ़िया पुलिस में एक फाँसी पा गये

× × ×

ख़याले हालते क़ौमी से दिल को पस्त करता हूँ
मगर जब अपना बंगला देखता हूँ जस्त करता हूँ

× × ×

डाढ़ी ख़ुदा का नूर है बेशक मगर जनाब
फ़ैशन के इंतिज़ामे सफ़ाई को क्या करूँ

× × ×

जो सच्ची बात है कह दूँगा बेख़ौफ़ो ख़तर उस को
नहीं रुकने का मैं हरगिज़ परी टोके कि जिन टोके
अनार आते जो काबुल से तो पड़ते सब के हिस्से में
अमीर आये तो क्या आये मज़े हैं लार्ड मिंटो के

× × ×

बूए वफ़ा[१] नहीं है मिसों के उसूल में
बस रंग देख लीजिए गमले के फूल में

× × ×

मज़हब की कहो तो दिल्लगी में उड़ जाये
मतलब की कहो तो पालिसी में उड़ जाये
बाक़ी सरे क़ौम में अभी है कुछ जोश
ग़ालिब[२] है कि ये भी इस सदी में उड़ जाये

× × ×

और ही थी सांत तीरों की निशाना और था
ये ज़माना और है और वो ज़माना और था

१. भक्ति की सुगंध ; २. बहुत संभावना है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थी न ये लीडर की रक़्क़ासी[1] न ये क़ानून ग़र्ब[2]
सुनने वाले और थे उस वक़्त गाना और था

× × ×

होटलों को कथा मुबारक हो
रेल को ये जथा मुबारक हो
घर में खाने को कुछ न था कल रात
क़ौम को ये "न था" मुबारक हो

× × ×

तालीम जो दी जाती है हमें वो क्या है फ़क़त बाज़ारी है
जो अक़्ल सिखाई जाती है वो क्या है फ़क़त सरकारी है

× × ×

जा लोग तरफ़दार अलीगढ़ के रहेंगे
इस दौर में बेशक वही बढ़-चढ़ के रहेंगे
मुफ़लिस रहें गुमनाम रहें ख़ैर जो कुछ हो
कालिज के ये सब इल्म तो हम पढ़ के रहेंगे

× × ×

मुंशी निसार हुसैन से आमों की फ़रमाइश

नामा कोई न यार का पैग़ाम भेजिये
इस फ़स्ल में जो भेजिये बस आम भेजिये
ऐसे ज़रूर हों कि उन्हें रख के खा सकूं
पुख़्ता[3] अगर हों बीस तो दस ख़ाम[4] भेजिये
मालूम ही है आप को बंदे का ऐडरेस
सीधे इलाहाबाद मेरे नाम भेजिये
ऐसा न हो कि आप ये लिक्खें जवाब में
तामील होगी पहले मगर दाम भेजिये

× × ×

---

१. नृत्य; २. पश्चिमी बाजा ; ३. पका हुआ ; ४. कच्चा ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सैयद इशरत हुसैन[1] साहब का बंगला

फ़ज़्ल हो अल्लाह का हों जम्अ साले-सालियाँ
वो उछालें बाल ये चमकाएँ अपनी बालियाँ
लम्प की हो जगमगाहट और बजे फ़ोनोग्राफ़
इशरती झूमा करें बच्चे बजायें तालियाँ
घर रहे आबाद समधी और समधिन ख़ुश रहें
डोमनी इनआम पाये गाये प्यारी गालियाँ
गिर्द बंगले के रहे सरसब्ज़ हर शाख़े दरख़्त
नह्र के पानी से लहराती रहें सब नालियाँ
ढेर हो फूलों का गुलदस्ते बनाये बाग़बाँ
पेड़ फल देते रहें माली लगायें डालियाँ
सोने-चांदी की बहें मौजें दुल्हन के हाथ से
लें बलायें और दुआएँ दें उन्हें घर वालियाँ
ग़ुल मचायें खेल में बच्चे रहे बंगले में धूम
मेहमानों के लिए पकवान की हों थालियाँ
झाँककर देखें तो जज साहिब[2] का दिल भी हो निहाल
कमरे की दीवार में दो इक बनी हों जालियाँ

× × ×

जल्वए दरबारे देहली

सर में शौक़ का सौदा देखा
देहली को हम ने भी जा देखा
जो कुछ देखा अच्छा देखा
क्या बतलायें क्या क्या देखा

× × ×

नज़्म है मुझ को बादए साफ़ी[3]
शग़ल यही है दिल को काफ़ी

---

१. अकबर के सुपुत्र ; २. अकबर जज थे ; ३. स्वच्छ और निर्मल मदिरा ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

माँगता हूँ यारों से मुश्रा
खैर अब देखिये लुत्फ़े क़वाफ़ी[1]

× ×

जमना जी के पाट को देखा
अच्छे सुथरे घाट को देखा
सब से ऊँचे लाट को देखा
हज़रत ड्यूक कनाट को देखा

× ×

पलटन और रिसाले देखे
गोरे देखे काले देखे
संगीनें और भाले देखे
बैंड बजाने वाले देखे

× ×

ख़ेमों का इक जंगल देखा
इस जंगल में मंगल देखा
ब्रह्मा और वरंगल देखा
इज़्ज़त ख़्वाहों[2] का दंगल देखा

× × ×

सड़कें थीं हर कम्प से जारी
पानी था हर पम्प से जारी
नूर की मौजें लम्प से जारी
तेज़ी थी हर जम्प से जारी

× × ×

कुछ चेहरों पर मर्दी देखी
कुछ चेहरों पर ज़र्दी देखी
अच्छी खासी सर्दी देखी
दिल ने जो हालत कर दी देखी

---

१. अनुप्रास; २. सम्मानाभिलाषी ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

डाली में नारंगी देखी
महफ़िल में सारंगी देखी
बेरंगी बारंगी देखी
दह्र[1] की रंगारंगी देखी

× × ×

अच्छे अच्छों को भटका देखा
भीड़ में खाते झटका देखा
मुँह को अगर्चे लटका देखा
दिल दरबार से अटका देखा

× × ×

हाथी देखे भारी भरकम
उनका चलना कम कम थम थम
ज़र्री[2] झोलें नूर का आलम
मीलों तक वो चम चम चम चम

× × ×

सुर्खी सड़क पे कुटती देखी
साँस भी भीड़ में घुटती देखी
आतशबाज़ी छुटती देखी
लुत्फ़ की दौलत लुटती देखी

× × ×

चौकी इक चौलक्खी देखी
ख़ूब ही चक्खी पक्खी देखी
हर सू नेमत[3] रक्खी देखी
शहद और दूध की मक्खी देखी

× × ×

---

१. संसार; २. स्वर्ण; ३. अत्युत्तम वस्तु।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक का हिस्सा मन्नो सलवा[1]
एक का हिस्सा थोड़ा हलवा
एक का हिस्सा भीड़ और बलवा
मेरा हिस्सा दूर का जलवा

× × ×

जश्ने अज़ीम इस साल हुआ है
शाही फ़ोर्ट में बाल[2] हुआ है
रौशन हर इक हाल हुआ है
क़िस्सए माज़ी[3] हाल[4] हुआ है

× × ×

हमनशीं कहता है कुछ परवा नहीं मजहब गया
मैं ये कहता हूँ कि भाई ये गया तो सब गया

× × ×

एक लोबतें चीं[5] को लंदन से जो ब्याह के लाये मफ़ाईलुन
अहबाब ने तीरे मताइन[6] से उनके दिल को मजरूह[7] किया
बाप उन के ये बोले कश्ती मिरी वल्लाह डुबो दी हाय ग़ज़ब
इस लड़के ने सोहबते बद पा कर ये कारे इब्ने नूह[8] किया
तालीम को मैंने भेजा था तज़वीज[9] की उस ने ठैराई
ममदूह[10] तो बनना भूल गया बस अपने तईं मनकूह[11] किया
लड़के ने जवाब में अर्ज़ किया ऐ क़िबला ओ काबा सुनिये तो
ये कौन बुराई मैंने की जो फ़ातेह[12] को मफ़तूह[13] किया

× × ×

मैंने कहा बहुत सी ज़बानें हूँ जानता
मुद्दत तक इम्तिहान दिये इम्तिहान पर

---

१. हज़रत मूसा के अनुयायियों के लिए ईश्वर की ओर से भोजन आता था, उसे मन्नो सलवा कहते हैं; २. नाच ; ३. अतीत की कहानी; ४. वर्तमान ; ५. चीनी गुड़िया ; ६. निन्दा ; ७. घायल ; ८. हज़रत नूह के बेटे का काम ; ९. विवाह ; १०. प्रशंसा-पात्र ; ११. विवाहित ; १२. विजेता; १३. पराजित ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जर्मन फ्रेंच लैटिनो इंग्लिश पे है उबूर[1]
साबित मिरा कमाल है सारे जहान पर
इक शोख़ तब्अ मिस ने दिखाई ज़बाँ मुझे
बिजली थी अब्र में कि क़मर[2] आस्मान पर
बोली रहोगे ज़ीस्त[3] की लज़्ज़त से बेख़बर
क़ुदरत न पाई तुम ने अगर इस ज़बान पर

× × ×

हस्ती के शजर[4] में जो ये चाहो कि चमक जाओ
कच्चे न रहो बल्कि किसी रंग में पक जाओ
मैंने कहा क़ाइल मैं तसव्वुफ़[5] का नहीं हूँ
कहने लगे इस बज़्म[6] में आओ तो थिरक जाओ
मैंने कहा कुछ ख़ौफ़ कलक्टर का नहीं है
कहने लगे आ जायें अभी वो तो दबक जाओ
मैंने कहा वर्ज़िश की कोई हद भी है आख़िर
कहने लगे बस इस की यही हद है कि थक जाओ
मैंने कहा अफ़कार[7] से पीछा नहीं छुटता
कहने लगे तुम जानिबे मैख़ाना लपक जाओ
मैंने कहा अकबर में कोई रंग नहीं है
कहने लगे शेर उस के जो सुन लो तो फड़क जाओ

× × ×

आता नहीं मुझ को क़िबला क़िबली
बस साफ़ ये है कि भाई शिबली
तकलीफ़ उठाओ आज की रात
खाना यहीं खाओ आज की रात
हाज़िर जो कुछ हो दाल-दलिया
समझो उस को पुलाव क़लिया

× × ×

---

१. निपुणता; २. चाँद; ३. जीवन; ४. पेड़; ५. सूफ़ी मत; ६. सभा;
७. चिन्ता।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ भी नहीं चाहते वो चंदे के सिवा
इस बाग़ में क्या धरा है फंदे के सिवा
गुलचीं[1] है हर इक नहीं है बुलबुल कोई
इस नुकते को कौन समझे बंदे के सिवा

× × ×

हाज़िर हुआ मैं ख़िदमते सैयद में एक रात
अफ़सोस है कि हो न सकी कुछ ज़ियादा बात
बोले कि तुझ को दीन की इस्लाह[2] फ़र्ज़ है
मैं चल दिया ये कह के आदाब अर्ज़ है

× × ×

ये बात ग़लत कि मुल्के इस्लाम है हिन्द
ये झूठ कि मुल्के लछमनो राम है हिन्द
हम सब हैं मती ओ खैरख़्वाहे[3] इंग्लिश
योरप के लिए बस एक गोदाम है हिन्द

× × ×

पंडित बैठा है अपनी पोथी लेकर
बनिया बैठा है मोठ मोथी लेकर
सौदा[4] उस को है जो सिधारा लंदन
वो दौलतो जिन्स घर में जो थी लेकर

× × ×

हुए इस क़दर मुहज़्ज़ब[5] कभी घर का मुँह न देखा
कटी उम्र होटलों में मरे अस्पताल जा कर

× × ×

मैं रैयत हूँ वो शाहाना दिलेरी है कहाँ
मुझ को क्यों रश्क आये वज़्ए मिल्लते अंग्रेज़[6] पर

---

१. फूल तोड़ने वाला ; २. सुधार ; ३. अंग्रेजों के आज्ञा-पालक और शुभ-चिंतक ; ४. उन्माद ; ५. सभ्य ; ६. अंग्रेजों का आचार-व्यवहार ।

. CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काँटे बिछ जाते हैं उन लोगों की राहे रिज़्क़[1] में
ख़ौफ़ आता है छुरी चलती है उनकी मेज़ पर

× × ×

वाँ शौकतो ज़ीनत[2] के जो असबाब बहुत हैं
मानी[3] के यहाँ गौहरे नायाब बहुत हैं
साहब की सी महफ़िल तो मुयस्सर नहीं लेकिन
सद शुक्र कि अकबर के भी अहबाब बहुत हैं

× × ×

तरक़्क़ी पाते हैं लड़के हमारे नूरे दीं[4] खो कर
ये क्या अंधेर है बुझ लेते हैं ये तब चमकते हैं

× × ×

हवाए तूबा[5] है अब न सर में न मौजे कौसर[6] है अब नज़र में
हवस अगर है तो बस यही है कि हम भी छप जायें पानियर[7] में

× × ×

इनायत मुझ पे फ़रमाते हैं शैख़ो बरहमन दोनों
मुआफ़िक़ अपने अपने पाते हैं मेरा चलन दोनों
तराने मेरे हम आहंगे दैरो काबा[8] हैं यकसाँ
ज़बाँ पर मेरी मौज़ूँ होती है हम्द[9] और भजन दोनों
मुझे उल्फ़त है सुन्नी से भी शीआ से भी यारी है
अखाड़े में दिखा सकते हैं दिलकश बाँकपन दोनों

× × ×

मुझे होटल भी ख़ुश आता है और ठाकुर द्वारा भी
तबर्रुक है मिरे नज़दीक परशाद[10] और मटन दोनों

× × ×

---

१. जीविका का मार्ग ; २. आडम्बर और शोभा ; ३. सान ४. धर्म की ज्योति; ५. स्वर्ग का एक वृक्ष ; ६. स्वर्ग का एक कुंड ; ७. एक समाचार-पत्र का नाम ; ८. मन्दिर और काबा ; ९. ईश्वर की स्तुति ; १०. प्रसाद ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक सैयद क्या करें या बैठ कर दस क्या करें
हज़रते हाली के अशआरे मुसद्दस[1] क्या करें
सच तो ये है मेहरबानी आप की दरकार है
हम ग़रीबो नातवानो ज़ारो बेकस क्या करें

× × ×

गोलियों के ज़ोर से करते हैं वो दुनिया को हज़्म
इससे बेहतर इस ग़िज़ा के वास्ते चूरन नहीं

× × ×

पानियर के सफ़्हए अव्वल में जिसका ज़िक्र हो
मैं वली समझूँ जो उसको आक़िबत[2] की फ़िक्र हो

× × ×

ज़िन्दगी और क़यामत में रिलेशन समझो
इसको कालिज और उसे कान्वोकेशन समझो

× × ×

ले ले के क़लम के लोग भाले निकले
हर सम्त से बीसियों रिसाले निकले
अफ़सोस के मुफ़लिसी ने छापा मारा
आख़िर अहबाब[3] के दिवाले निकले

× × ×

जो लोग तरफ़दार अलीगढ़ के रहेंगे
इस दौर में बेशक वही बढ़-चढ़ के रहेंगे
मुफ़लिस रहें गुमनाम रहें ख़ैर जो कुछ हो
कालिज के ये सब इल्म तो हम पढ़के रहेंगे

× × ×

---

१. एक काव्य-रूप जिस के हर खंड में छह मिस्रे होते हैं; २. यमलोक; ३. मित्र।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पड़ा है क़ह्त[1] बशर[2] मर रहे हैं फ़ाक़ों से
ख़ुशी हो क्या मुझे शबरात के पड़ाकों से
बुझी हुई है तबीग्रत ये रौशनी है फ़ज़ूल
उतार लीजिए साहब चिराग़ ताक़ों से

× × ×

चालीस साल से है नई रौशनी का दौर
क्योंकर इसे कहूँ कि सरासर फ़ज़ूल है
ग्रलबत्ता एक ग्रर्ज़ करूँगा दबी ज़बान
गो ख़ुशनुमा[3] बहुत है मगर बेउसूल है

× × ×

तरकीब तो देखो ये ज़माने के चलन की
ग्रफ़सोस कि इससे कोई वाक़िफ़ भी नहीं है
गिरजा में तो करनैलो कमिश्नर भी हैं मौजूद
मस्जिद में कोई डिप्टी ग्रो मुनसिफ़ भी नहीं है

× × ×

ख़ूब फ़रमाया ये शाहे जर्मनी ने पोप से
वाज़ हम भी कहते हैं लेकिन दहाने तोप[4] से
जद्दे ग्रमजद ख़ोद[5] में करते थे ये मौसिम बसर
हम को ग्रपने ग्रहद में पाला पड़ा कंटोप से

× × ×

रह गए ना ग्राशना ग्रहबाब ग़ाइब हो गए
हम नफ़स दो इक जो बाक़ी थे वो साहिब हो गए
वक़्ते बद में कौन रखता है रफ़ाक़त[6] का ख़याल
हमनशीं[7] ग्रपने रक़ीबों के मुसाहिब हो गए

× × ×

---

१. ग्रकाल; २. मनुष्य; ३. रोचक; ४. तोप का मुँह; ५. लोहे की टोपी जो सैनिकों के सिर पर होती है; ६. मित्रता; ७. साथ बैठने वाले ग्रर्थात मित्र ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ख़्वाहाने नौकरी[1] न रहें तालिबाने इल्म[2]
क़ायम हुई है राय ये अहले शऊर[3] की
कालिज में धूम मच रही है पास पास की
ओहदों से आ रही है सदा दूर दूर की

× × ×

पाओं को बहुत झटका पटका ज़ंजीर के आगे कुछ न चली
तदबीर बहुत की ऐ अकबर तक़दीर के आगे कुछ न चली
योरप ने दिखा कर रंग अपना सैयद को मुरीद बना ही लिया
सब पीरों से तो वो बच निकले इस पीर के आगे कुछ न चली

× × ×

तमाशा देखिये बिजली का मग़्रिब और मश्रिक़ में
कलों में है वहाँ दाख़िल यहाँ मज़हब पे गिरती है

× × ×

देखिये क़व्वाल बेचारे का अब क्या हश्र हो
शैख़ साहब को तो लिकचर पर भी वज्द[4] आने लगा
क्यों करेगा पेश हम पर जल्वए हूरे बिहिश्त[5]
जब थेटर का समाँ वाइज़ को तड़पाने लगा

× × ×

पर्दे का किया है ख़ुद अड़ंगा पैदा
ख़ुद हमने किया इज़ार और अंगा पैदा
क्या ख़ूब कहा है मौलवी महदी ने
नेचर ने किया है हमको नंगा पैदा

× × ×

बकरी को साग-पात का सौदा नहीं रहा
बंगालियों को भात का सौदा[6] नहीं रहा

---

१. नौकरी के इच्छुक; २. विद्यार्थी; ३. बुद्धिमान; ४. आनन्दाधिक्य से आत्म-विस्मृति; ५. स्वर्ग वधू; ६. उन्माद।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चोरों को अपनी घात का सौदा नहीं रहा
और शातिरों को मात का सौदा नहीं रहा

× × ×

गाहक को मोल-भाव की परवा नहीं रही
माँझी को अपनी नाव की परवा नहीं रही
दिल को कहीं लगाव की परवा नहीं रही
चूहों को नान पाव की परवा नहीं रही

× × ×

लेता है कौन गर्मीए दिल से ख़ुदा का नाम
अब कौन ध्यान बाँध के करता है राम राम
मज़हब को दूर ही से किया जाता है सलाम
कोठी को है फ़रोग़[1] न रौनक़ पे है गुदाम

× × ×

इस्कूल ही में इल्म है जिससे कि है शरफ़
लड़का न सीखे इल्म तो कहते हैं नाख़लफ़[2]
लेकिन कुछ और धंदे भी हैं पेश सफ़ ब सफ़
ये क्या कि सारी क़ौम ही झुक जाये इक तरफ़

× × ×

पंडित परा जमा के बनारस पे आ रहे
मरकट के शैख़े शह्र भी नो-यस पे आ रहे
हाली ग़ज़ल को छोड़ मुसद्दस[3] पे आ रहे
हम फ़र्द[4] थे सो हम भी मुख़म्मस[5] पे आ रहे

× × ×

ज़माना कह रहा है सबसे फिर जा
न मंदिर जा न मस्जिद जा न गिरजा

× × ×

---

१. उन्नति; २. कपूत; ३. एक काव्य-रूप जिसके हर खण्ड में छः मिस्रे होते हैं; ४. एक अद्वितीय व्यक्ति या काव्य की एक पंक्ति; ५. एक काव्य रूप जिसके हर खण्ड में पाँच मिस्रे होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐसा शौक़ न करना अकबर
गोरे को न बनाना साला
भाई रंग यही है अच्छा
हम भी काले यार भी काला

× × ×

पानी पीना पड़ा है पाइप का
हर्फ़ पढ़ना पड़ा है टाइप का

× × ×

पंडित हो कि मौलवी हो दोनों बेकार
इन्सान को ग्रेजुएट होना अच्छा

× × ×

दिखाई फ़लसफ़ए मग़्रिबी ने वो मर्दी
कि पर्दा खुल गया इस क़ौम में ज़नानों का
परी की ज़ुल्फ़ में उलझा न रीशे वाइज़[1] में
दिले ग़रीब हुआ लुक़मा इम्तिहानों का
वो हाफ़िज़ा[2] जो मुनासिब था एशिया के लिए
ख़ज़ाना बन गया योरप की दास्तानों का

× × ×

पका लीं पीसकर दो रोटियाँ थोड़े से जौ लाना
हमारी क्या है ऐ भाई न मिस्टर हैं न मौलाना

× × ×

हर रंग की बातों का मिरे दिल में है झुरमुट
अजमेर में कुलचा हूँ अलीगढ़ में हूँ बिस्कुट
पाबंद किसी मशरबो-मिल्लत[3] का नहीं हूँ
घोड़ा मिरी आज़ादी का जाता है बगटुट

× × ×

---

१. उपदेशक की दाढ़ी; २. स्मरण-शक्ति ; ३. मत और सम्प्रदाय ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो दोनों साथ पड़ें तो यही मुनासिब है
कि अपने घर में क्रिसमिस भी कर तू ईद भी कर
ख़ुदा करे कोई बुत ये कहे मुझ से
बैठा भी लो मुझे घर में मुझे मुरीद भी कर
जो सुन चुके मिरी ग़ज़लें तो बोले ला चंदा
जो हिनहिनाया है इतना तो आज लीद भी कर

× × ×

आपकी फ़ुरकत[1] में मैं कल रात भर सोया नहीं
लेकिन इतनी बात थी गाता रहा रोया नहीं
नोशजाँ फ़रमायें हज़रत शौक़ से ये नाश्ता
छः बजे हैं मैंने तो मुँह भी अभी धोया नहीं

× × ×

ख़िलाफे शर्अ कभी शैख़ थूकता भी नहीं
मगर अँधेरे - उजाले ये चूकता भी नहीं

× × ×

सुनता नहीं लैकचर मैं पड़ा रहता हूँ दिन-रात
लगता है फ़क़त लेडियों में वक़्ते डिनर जी

× × ×

वज़्ए मग्रिब सीखकर देखा तो ये काफ़ूर[2] थी
अब मैं समझा वाक़िई डाढ़ी ख़ुदा का नूर थी

× × ×

साइंस से ज़ियादा है मज़हब की जड़ बड़ी
तोपों की मार से भो ख़ुदा की पकड़ बड़ी

× × ×

---

१. विरह ; २. लुप्त ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कचहरियों में है पुर्सिश[१] ग्रेजुएटों को
सड़क पे माँग है क़ुलियों की और मेटों की
तुम्हें है क़द्र तो बस इल्मे दीनो तक़वा[२] की
ख़राबी है तो फ़क़त शैख़ जी के बेटों की

× × ×

उनके दस्ते नाज़नीं से पाई टी
अब कहाँ बाक़ी है हम में पाइटी[३]

× × ×

मिरी फ़ुग़ाँ पे मिसे नाशनास[४] बोल उठी
कि बाबुओं में तो आदत है ग़ुल मचाने की
बजायें शौक़ से नाक़ूस बरहमन अकबर
यहाँ तो शैख़ को धुन है बिगुल बजाने की

× × ×

अपनी गिरह से कुछ न मुझे आप दीजिए
अख़बार में तो नाम मिरा छाप दीजिए
देखो जिसे वो पानियर आफ़िस में है डटा
बहरे ख़ुदा[५] मुझे भी कहीं छाप दीजिए
चश्मे जहाँ[६] से हालते अस्ली छुपी नहीं
अख़बार में जो चाहिए वो छाप दीजिए
दावा बहुत बड़ा है रियाज़ी में आपको
तूले शबे फ़िराक़[७] को तो नाप दीजिए
सुनते नहीं हैं शैख़ नई रौशनी की बात
इंजन की उनके कान में अब भाप दीजिए
उस बुत के दर पे ग़ैर से अकबर ने कह दिया
ज़र ही मैं देने लाया हूँ जान आप दीजिए

× × ×

१. पूछ; २. धर्म और सदाचार का ज्ञान; ३. Piety पवित्रता; ४. अपरिचित; ५. भगवान के लिए; ६. संसार की आँख; ७. वियोग-रात्रि की लम्बाई।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न कुछ इंतिज़ारे गज़ट कीजिए
जो अफ़सर कहे बस वो झट कीजिए
बहुत भाती है उसको फुर्ती मुझे
दुआ है कि लड़की ये नट कीजिए
कहाँ का हलाल और कैसा हराम
जो साहब खिलायें वो चट कीजिए
सिखाते हैं तक़लीदे इंग्लिश[1] जो आप
कहीं मुफ़लिसों को न पट कीजिए
बिगड़ जायेगा मेम से सारा खेल
बस इन लोबतों[2] पर न हट कीजिए
बहुत शौक़ अंग्रेज़ बनने का है
तो चेहरे पे अपने गिलट कीजिए
अजल आई अकबर गया वक़्ते बहस
अब इफ़ कीजिए और न बट कीजिए

× × ×

मुअक्किल[3] छुटे उनके पंजे से जब
तो बस क़ौमे मरहूम[4] के सर हुए
पपीहे पुकारा किये पी कहाँ
मगर वो प्लीडर से लीडर हुए

× × ×

शैख़ जी घर से न निकले और मुझ से कह दिया
आप बी० ए० पास हैं और बंदा बीबी पास है

× × ×

मुम्किन नहीं ऐ मिस तिरा नोटिस न लिया जाये
गाल ऐसे परीज़ाद हों और किस न लिया जाये

× × ×

१. अंग्रेज़ों का अनुकरण; २. गुड़िया; ३. मुक़दमे में वकील की सहायता लेने वाले लोग; ४. मरा हुआ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जौके माना[1] नहीं तुझे अकबर
सुनले ये बात गर तुझे शक है
शैख़ से छूटे उलझे इंजन में
उसमें बक बक थी इसमें भकभक है

× × ×

हम से शबे विसाल[2] वो बेमेल हो गये
अफ़सोस इंट्रेंस में हम फ़ेल हो गये
दरगाह के चिराग़ को छोड़ा बराय लैम्प
सबकी नज़र में घो से मगर तेल हो गये

× × ×

बूढ़ों ने पहले लड़कों को ख़ुद ही बनाया खेल
उनकी नज़र में आप ही अब खेल हो गये
ऐ शैख़ जब नकेल नहीं दस्ते क़ौम में
फिर क्या ख़ुशी जो ऊँट निरे रेल हो गये

× × ×

उनको क्या काम है मुरव्वत से
अपने रुख़ से ये मुँह न मोड़ेंगे
जान शायद फ़िरिश्ते छोड़ भी दें
डाक्टर फ़ीस को न छोड़ेंगे

× × ×

इस अखाड़े में अड़ंगे देख कर क़ानून के
शैख़ ने तहमद से हिज्रत की तरफ़ पतलून के

× × ×

राह तो मुझको बता दी खिज्र[3] ने
ऊँट का लेकिन किराया कौन दे

× × ×

---

१. अर्थ-ज्ञान की रुचि; २. मिलन की रात; ३. एक पैगम्बर जो भटके हुए लोगों को रास्ता दिखाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आशिक़ी का हो बुरा उसने बिगाड़े सारे काम
हम ता ए० बो० में रहे अग़ियार[1] बी० ए० हो गये

× × ×

पर्दे का मुख़ालिफ़ जो सुना बोल उठीं बेगम
अल्लाह की मार उस पे अलीगढ़ के हवाले

× × ×

क़िस्सए मनसूर सुनकर बोल उठी वो शोख़ मिस
कैसा अहमक़ लोग था पागल को फाँसी क्यों दिया

× × ×

जाहोज़र के रहे इंगलिश से हमेशा तालिब
अहदेपीरी में बदल सकते हैं क्योंकर क़ालिब
मुशतहर कर दें यह 'हमदम' में जनाबे जालिब[2]
ज़िन्दगी भर तो रहा इश्क़े बुत्ताँ ही ग़ालिब
आख़िरी वक्त में क्या ख़ाक मुसलमाँ होंगे

× × ×

कूचा सर्विसे इंगलिश में रहे हम साकिन
जाहो ज़र ही की तमन्ना में किए ज़ीस्त के दिन
वाज़े गांधी से बदल सकते हैं क्योंकर बातिन
उमर तो सारी कटी इश्के बुत्ताँ में मोमिन
आखिरी वक्त में क्या खाक मुसलमाँ होंगे

× × ×

करो आनर को वापस भाई जी की चिट्ठी आई है
अरे यह क्या ग़ज़ब है लाट साहिब की दुहाई है
इसकी कुछ परवा नहीं बर्बत[3] बजे या नै[4] बजे,
वक्त हो नग़मा है मुझको यह बताओ कै बजे

× × ×

---

१. पराये; २. हमदम के सम्पादक; ३. एक साज; ४. बंसरी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाई गांधी ने मुल्क से जय ली
लाट साहिब की पालिसी फैली
थे जो चलते हुए वह रुक ही गए
लद गई उन पै कैश की थैली

हैं खलक की आफीयत पै हमले
फरयाद को जा रहा हूँ शमले
कुछ ऐब नहीं है सर उठाना
लेकिन पहले कदम तो जम ले

आप क्यों अपना खिताब ऐ खान वापस कीजिए
खुद उन्हीं से कहिए मेरी शान वापस कीजिए

आप जिसको नज़ा[1] समझे थे गशी थी वह फकत
लाइए कुर्ता कफन का थान वापस कीजिए

आगे तुम्हारे रंग किसी का नहीं जमा
जय हो तुम्हारी ए मेरे गांधी महात्मा
लेने के तुम नहीं हो गवर्नमेंट की मदद
चूरन को क्या ज़रूर पिपरमेंट की मदद

अपनी जगह हर इक का अरमान निकल रहा है
तोपें भी चल रही हैं जूता भी चल रहा है

सब दे गए दौड़ने मैं कांधी
जीते मैदान भाई गांधी

वह कहते हैं कि लो घर की गवर्नमेंट
मगर चूरन में शामिल हो पिपरमेंट

१. मृत्यु काल।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शेख़ जो तुमको मुबारक[1] रूमो[2] रे
हम तो कहते हैं कि गांधी जी की जय

हज़रते गांधी फिरे है शमलाए[3] पुरनूर से
वापसी मूसा की याद आई है कोहे तूर से

बुझी जाती है शमे मशरिकी मगरिब की आंधी से
उमेदे रोशनी कायम है लेकिन भाई गांधी से

उधर ताईदेबारी[4] है उधर तालीम गांधी है
दुरे[5] मकसूद को बख्शे खुदा हिम्मत तो बांधी है

महात्मा जी से मिलके सीखो तरीक क्या है स्वभाव क्या है
पड़ी है चक्कर में अक्ल सबकी बिगाड़ क्या है बनाओ क्या है

१-२. दो मुसलमान प्रदेशों के नाम; ३. शिमला; ४. ईश्वर की मदद; ५. ध्येय का मोती।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रियाज़ ख़ैराबादी

आपका नाम सैयद रियाज़ अहमद और रियाज़ तखल्लुस था। १८५५ में ख़ैराबाद जिला सीतापुर में आपका जन्म हुआ। जवानी का ज़माना गोरखपुर में गुज़रा। यह शेर गोरखपुर के प्रेम का प्रमाण है—

वह गलियाँ याद आती हैं; जवानी जिनमें खोई है।
बड़ी हसरत से लब पर ज़िक्रे गोरखपूर आता है॥

अमीर मिनाई के शिष्य थे। रियाज़ुल अखबार, गुलकदाए रियाज़, फ़ितन; और इतरे फ़ितना नाम की पत्रिकाएँ निकालीं। अंग्रेज़ी नाविलों का अनुवाद भी किया। नाविल नाशाद उनकी यादगार है। २० जुलाई, १९३२ को देहान्त हुआ। सात सौ पृष्ठों का इनका दीवान 'रियाज़े रिजवाँ' के नाम से छप चुका है।

रियाज़ बड़े चंचल स्वभाव के थे। शराब के विषय पर उन्होंने सैकड़ों शेर कहे हैं जिनका जवाब कहीं और नहीं मिलता। वह रोज़ा और नमाज़ के पाबन्द थे। उन्होंने शराब उमर भर नहीं पी। परन्तु शराब पीने वालों से अधिक रोचकता और रंगीनी उनकी कविता से प्रगट होती है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तौबा के पास ने टोका लबे कौसर मुझको
आज पीने को तबीअत मिरी चाही कैसी

बड़े नेक तीनत बड़े साफ़ बातिन[1]
रियाज़ आपको कुछ हमीं जानते हैं

कुछ अजब तरह के हैं रिंद रियाज़
आप पीते नहीं पिलाते हैं

दस्ते[2] शफ़क़त इस तरह इक रिंद ने फेरा रियाज़
बैठ कर यादे ख़ुदा में झूमना जाता रहा

याँ वो ले दे हुई आकर कि इलाही तौबा
हम समझते थे कि महशर में तमाशा होगा

ये दिन है हश्र का होकर रहेगा वो जो होना है
अरे झूठे कुछ अब क़ौलो-क़सम से हो नहीं सकता

छुप के रातों को कहीं आप न आये न गये
बेसबब नाम हुआ आपका रौशन कैसा

मय छीन कर किसी से जो पीते तो थी ख़ता
जब दाम देके पी तो गुनह क्या किसी का था
ये अपनी वज़्अ और ये दुश्नामे[3] मय फ़रोश
सुन कर जो पी गये ये मज़ा मुफ़लिसी का था

---

१. जिसका मन स्वच्छ हो; २. मेहरबानी का हाथ; ३. शराब बेचने वाले की जाली।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चुन चुन के आज शैख़ ने अंगूर खा लिये
अब क्या रहा है ताक[१] का हासिल निकल गया

नीची दाढ़ी ने आबरू रख ली
कर्ज़ पी आये इक दुकान से आज

जनाबे शैख़ ने जब पी तो मुँह बना के कहा
मज़ा भी तल्ख़[२] है कुछ बू भी खुशगवार नहीं
हिना[३] लगा के पहुँचते हैं गुलरुखों में रियाज़
कुछ उनकी रीशे[४] मुबारक का ऐतिबार नहीं

ये उलझे हैं रिन्दों से क्यों शैख़ साहिब
बुढ़ापे में क्यों दाढ़ी रंगवा रहे हैं

शब को मैखाने में क्यों पहुँचे थे ऐ हज़रते शैख़
कहिये अच्छी तो कटी क़िबलए हाजात की रात

इक टीप मारी ज़ोर से ज़ाहिद के ए रियाज
अब हाथ मल रहे हैं कि अच्छी पड़ी नहीं

शैख़ साहिब क्या छुपाकर ले चले रूमाल में
कुछ न कुछ हिस्सा रहे यारों का भी इस माल में

मय रियाज़ आप भी पीते हैं बईं रीशे सफ़ेद[५]
हाय ये नूर की शक्ल और सियहकारों में

उठवाओ मेज़ से मय ओ साग़र रियाज़ जल्द
आते हैं इक बुज़ुर्ग पुराने खयाल के

रियाज़ आये तो लोगों ने मैकदे में कहा
कहाँ ये आज बुज़ुर्गे फ़िरिश्ता ख़ू[६] आये

---

१. अंगूर की बेल ; २. कड़वा ; ३. मेंहदी; ४. दाढ़ी ; ५. यह सफेद दाढ़ी होते हुए ; ६. जिसका स्वभाव फ़िरिश्तों का सा हो ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अहले हरम में जाके बना आज शैख़-ए-वक़्त
काफ़िर रियाज़ पीरे किलीसा[१] कहें जिसे

आये मयख़ाने में जब मस्जिदे जामे से रियाज़
साथ ही आपके क़िबले[२] से घटा भी आई

सरे बज़्म वाइज़ से दबना पड़ा
वो ख़ुम[३] से सिवा था तनोतोश में

वाइज़ अंगूर में है दुख़तरे रज़ा[४] रू ब निक़ाब[५]
आँखें फूटें जो उधर ताक लगाये कोई

हमारा ऐब खुलता है न खुलती है छुपी बोतल
हमारे काम क्या क्या जामए[६] अहराम आता है

वो आ रहा है असा[७] टेकता हुआ वाइज़
बहा दे इतनी कि साक़ी कहीं न थाह मिले

मुँह ज़ेरे ताक[८] खोला वाइज़ बहुत ही चूका
बेलों ने दाढ़ी पकड़ी ख़ोशों[९] ने मुँह में थूका

कातिबे आमाल[१०] निकले काम के
मिल गये दो दो शरीक इलज़ाम के

उतर गई सरे बाज़ार शैख़ की पगड़ी
गिरह में दाम न होंगे उधार पी होगी

शैख़ जी गिर गये थे हौज़ में मयख़ाने के
डूब कर चश्मए कौसर के किनारे निकले

---

१. गिरजा का धर्म गुरु; २. काबा; ३. शराब की मटकी; ४. अंगूर की बेटी अर्थात् शराब; ५. आवृत; ६. हज करते समय जो कपड़े पहने जाते हैं। ७. लाठी; ८. अंगूर की बेल के नीचे; ९. गुच्छा १०. मनुष्य के कर्मों को लिखने वाले फ़िरिश्ते।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाँस पर मयकदे में तुझको चढ़ाया ऐ शैख़
फिर भी ऊँचे तिरी मस्जिद के मिनारे निकले

ये क्या मज़ाक़ फ़िरिश्तों को आज सूझा है
हुजूमे हश्र[१] में ले आये हैं पिला के मुझे

छोड़कर मजमा-ए-जुह्हाद[२] को डरता हूँ रियाज़
कुहना[३] मस्जिद के इवज़ हो न मरम्मत मेरी

शैख़ ने माँगी है अपनी उम्र की
मैकदे से अब पुरानी जायेगी

उतरी है आस्मान से जो कल उठा तो ला
ताक़े हरम[४] से शैख़ वो बोतल उठा तो ला
नासिह का मुँह हो बंद चखा दो शराबे ख़ुल्द[५]
साक़ी ज़रा रियाज़ की बोतल उठा तो ला

सुनके ये क़िबले से अब्र उट्ठे तो पीना है सवाब
लुट रहा था मयकदे में हमने भी लूटा सवाब

आगे कुछ बढ़ कर मिलेगी मस्जिदे ज़ामे रियाज़
इक ज़रा मुड़ जाइयेगा मयकदे के दर से आप

पी पी के उसने सज्दे किये हैं तमाम रात
अल्लाह रे शग़्ल ज़ाहिदे शब ज़िन्दादार[६] का

ये मए तल्ख़[७] तिरे मुँह से लगी है कि नहीं
सच बता दे अरे ज़ाहिद कभी पी है कि नहीं

क्या उधर होके बहा है कोई दरियाए शराब
झूमती क़िबले से क्या मस्त घटाए आईं

१. प्रलय के दिन होने वाली भीड़; २. तपस्वी लोगों की भीड़; ३. पुरानी; ४. काबे का ताक़; ५. स्वर्ग की मदिरा ६. रात में जागने वाला तपस्वी; ७. कटु मदिरा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उठे कभी घबरा के तो मयख़ाने में हो आये
पी आये तो फिर बैठ रहे यादे ख़ुदा में

आयेंगे जब फ़िरिश्ते तो मुँह खुलेगा उसका
बोतल कोई छुपा कर रख दे मिरे कफ़न में

शैख़ ये कहता गया पीता गया
है बहुत ही बदमज़ा अच्छी नहीं

बड़े मौक़े से थी हर चंद वो जन्नत से बाहर थी
हरम से हट के रस्ते में मिली मय की दुकाँ मुझको

झूमती क़िबले से आई थी सितम ढाने को
लो घटा झुक के उड़ा ले गई मयख़ाने को

दरे तौबा नहीं जो बंद भी हो
खुला हर वक़्त मयख़ाने का दर है

कैसा पीना कहाँ की तौबा
अब मैं हूँ ख़ुदा है बेख़ुदी[1] है

शर्मात्रो रियाज़ मयकशी से
लम्बी दाढ़ी है हाथ भर की

शैख़ जी मयकदा वो जन्नत है
तुम भी जाकर जवान हो जाते

शोरे वाइज़ कम नहीं होता है तो ललकार दे
इक ज़रा ओ क़ुलक़ुले मीना[2] बलंद आवाज़ से
ये मयकदा ये भीड़ ये अंबोह[3] ये हुजूम
हम तो निकल के खोये गये ख़ान्क़ाह से

१. आत्म-विस्मृति; २. बोतल से शराब उँडेलते समय होने वाली आवाज़; ३. समूह।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शरीक मय में किया होगा आबे ज़म ज़म[1] भी
रियाज़ ने पसे तौबा कभी जो पी होगी
हुजूम देख के समझे ये रोज़े महशर[2] हम
खुली दुकान किसी मय फ़रोश की होगी

ख़िदमते मय ख़ाना कर ले वरना शैख़
रायगाँ[3] ये ज़िन्दगानी जायेगी

पीने आयें तो फ़िरिश्त: खू रियाज़
हूर के दामन में छानी जायेगी

शराबख़ाने में है रंग मयकशों का वही
न ख़ान्क़ाह[4] न वो अहले ख़ान्क़ाह रहे

तौबा कर के आज फिर पीली रियाज़
क्या किया कमबख़्त तूने क्या किया

क्या क्या ख़ुशामदें हैं कि पी लूँ बहार में
बादल के टुकड़े सर पे मिरे छाये जाते हैं

कहती है ऐ रियाज़ दराज़ी ये रीश[5] की
टट्टी की आड़ में है मज़ा कुछ शिकार का

ख़ुम से न हों वो सेर मैं चुल्लू में सेर हूँ
ये ज़र्फ़[6] शैख़ का है ये मुझ ख़ाकसार का

वो भी बख़्शे गये हम बादाकशों के हमराह
आज जन्नत में हमें नासिहे मग़फ़ूर[7] मिले

ऐ शैख़ तू चुरा के पिये जब कभी पिये
तेरी तरह किसी की न नीयत ख़राब हो

---

१. मक्के के एक कुएँ का पानी जो बहुत पवित्र समझा जाता है; २. प्रलय के दिन; ३. व्यर्थ; ४. मठ; ५. दाढ़ी की लम्बाई; ६. योग्यता; ७. स्वर्गीय उपदेशक।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बोतल जब उसके झोले में भूले भरी मिली
वाइज़ भी आदमी है बड़े एतिबार का

है रियाज़ इक जवाने मस्त ख़िराम[1]
मय पिये और झूमता जाये

काबे में नज़र आये जो सुबह अज़ाँ देते
मैख़ाने में रातों को उनका भी गुज़र देखा

अच्छी पी ली ख़राब पी ली
जैसी पाई शराब पी ली
पी ली हमने शराब पी ली
थी आग मिसाले आब पी ली
आदत सी है नशा है न अब कैफ़[2]
पानी न पिया शराब पी ली

काटे कटती नहीं मुझ मस्त से बरसात की रात
मयकदे वाली मिले आज तो कुछ काम चले

जो मेरे जाम में है फूल वो चमन में कहाँ
अब उसके सामने फूलों में रंगो बू क्या है

किस ग़ज़ब की हवा में मस्ती है
कहीं बरसी है आस्माँ से आज

हाय सब्ज़े में वो सियह बोतल
कभी ऐसी घटा उठी ही नहीं

हम भी पियें तुम्हें भी पिलायें तमाम रात
जागें तमाम रात जगाएँ तमाम रात

१. जिसकी चाल में मस्ती हो; २. आनन्द।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जहाँ हम ख़िश्ते ख़ुम[1] रख दें बिनाए काबा[2] पड़ती है
जहाँ साग़र पटक दें चश्मए ज़म ज़म[3] निकलता है

पाको साफ़ ऐसी है जिस ने पी फ़िरिश्ता हो गया
ज़ाहिदो ये हूर के दामन में है छानी हुई

डराता है हमें महशर से तू वाइज़ अरे जा भी
ये हंगामे तो हम ने रोज़ कूए यार[4] में देखे

मयख़ाने में क्यों यादे ख़ुदा होती है अकसर
काबे में तो ज़िक्रे मय ओ मीना[5] नहीं होता

कमर सीधी करने ज़रा मयकदे में
असा[6] टेकते क्या रियाज़ आ रहे हैं

ता मयकदा रियाज़ का जाना मुहाल था
किस तरह ये बुज़ुर्गे ख़मीदा कमर[7] गये

संजीदगी से महफ़िले साक़ी में बात की
नासिह से बेवक़ूफ़ भी आक़िल निकल गया

तौबा से हमारी बोतल अच्छी
जब टूटी है जाम हो गई है

मर गये पर भी तअल्लुक़ ये है मयख़ाने से
मेरे हिस्से की छलक जाती है पैमाने से

इतनी कसरत से अरे साक़ी और इतनी तुंदोतेज़
अच्छे अच्छे पीने वाले आज तौबा कर उठे

---

१. शराब की मटकी की ईंट; २. काबे की नींव; ३. मक्के का एक कुआँ जिसका जल बहुत पवित्र माना जाता है; ४. प्रिय की गली; ५. मदिरा और मदिरा की बोतल; ६. लाठी; ७. जिसकी कमर बुढ़ापे से झुक गई हो।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इतनी तो हो बयान में वाइज़ शिगुफ़्तगी[1]
हम रिंद सुन के क़ुलक़ुले मीना[2] कहें जिसे

बुरी क्या थी फ़ाक़ामस्ती बड़े लुत्फ़ से गुज़रती
लिये कुछ जो मय की तल्ख़ी ग़मे रोज़गार होता

ये सर ब मुह्र[3] बोतलें जो हैं शराब की
रातें हैं उन में बंद हमारे शबाब की

काम मयख़ाने का हो जायेगा बंद
चश्मे साक़ी की हया अच्छी नहीं

दमे सुबह कहता हुआ यही लिये जाम पीरे मुग़ाँ उठा
उठो मयकदे के पुजारियो कि हरम से शोरे अज़ाँ उठा
कोई मस्ते मयकदा आ गया मैए बेख़ुदी वो पिला गया
न सदा नग़मए दैर[4] उठी न हरम से शोरे अज़ाँ उठा
गये साथ शैख़े हरम के हम न कोई मिला न लिये क़दम
न तो ख़ुम बढ़ा न सुबू झुका जो उठा तो पीरे मुग़ाँ उठा
तुझे मयफरोश ख़बर भी है कि मक़ाम कौन है क्या है शै
ये रहे हरम में दुकाने मय तू यहाँ से अपनी दुकान उठा

लोग कहते हैं कि है ज़ाहिदे मुर्ताज़[5] रियाज़
रिंद कहते हैं उसे चोर है मयख़ाने का

आई आवाज़े अज़ाने सुबह उठो भी रियाज़
मयकदे[6] में भी शोरे क़ुलक़ुले मीना हुआ

नमाज़े ईद हुई मयकदे में धूम है आज
रियाज़ बादाकशों ने हमें इमाम किया

---

१. खिलावट; २. बोतल से शराब उँडेलते समय होने वाली आवाज़; ३. मोहर लगाकर बंद की हुई; ४. मन्दिर के गीत का स्वर; ५ बहुत तपस्वी; ६. मधुशाला।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बादल उमड़े हुए थे रात से मयख़ाने पर
मुह्रे ख़ुम[1] टूटते ही टूट के बरसे क्या क्या

राहिये ख़ुल्द[2] हुए मयकदे में आज रियाज़
ख़ुम[3] किधर सज्दा करें काबए ईमाँ[4] न रहा

हमारी नज़र हश्र[5] में शैख़ पर थी
वो सर पर लिये हौज़े कौसर न निकले

बन के मेहमाँ एक रिंदे रोज़ादार आने को है
शाम होने को है मेरे घर उधार आने को है

मयकदे में ईद मुझ मुफ़लिस की हो जाय रियाज़
दे के इक चुल्लू कोई ले तीस रोज़ों का सवाब

इस शैख़े कुहन[6] साल की अल्लाह री बुज़ुर्गी
जन्नत में भी ये जा के जवाँ हो नहीं सकता

ऐ पीरे मुग़ाँ दुख़्तरे रज़[7] उम्र रसीदा
बूढ़ा हूँ मिले नूरे नज़र चर्ख़े कुहन की

किस शौक़ से शरीके जमाअत हुए थे हम
देखा सलाम फेर के तो शैख़ जी नहीं

सर है तिरा बजाय सुबू झूठ क्यों कहूँ
वाइज़ हराम चीज़ कभी मैंने पी नहीं

साय ए ताक में वाइज़ को जगह दी हम ने
आज शीशे में उसे हम ने उतारा कैसा
क़र्ज़ लाया है कोई भेस बदल कर शायद
मयफ़रोशों का है वाइज़ से तक़ाज़ा कैसा

---

१. मटकी की मोहर; २. स्वर्ग की ओर अग्रसर; ३. शराब की मटकी; ४. ईमान का काबा; ५. प्रलय का दिन; ६. बूढ़ा; ७. अँगूर की बेटी अर्थात् मदिरा ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कमबख्त ने शराब का ज़िक्र इस क़दर किया
वाइज़ के मुँह से आने लगी बू शराब की

अछूते जाम हैं जन्नत के कुछ अलग रक्खे
किसे पिलायें कोई पारसा नहीं मिलता

शैख साहिब सूए मयख़ाना रियाज़ आते हैं आज
फ़र्शे राहे मयकदा दस्तार[1] रहने दीजिए

जलवए साक़ी ओ मय जान लिये लेते हैं
शैख जी ज़ब्त करें हम तो पिये लेते हैं

वज़्अ रिंदाना रहे दीश रहे साफ़ रियाज़
खौफ़ की चीज़ है इस वक़्त मुसलमाँ होना

१. पगड़ी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज़फ़र अली खाँ

मौलाना ज़फ़र अली खाँ १८७० में सियालकोट के एक गाँव कोट महरथ में पैदा हुए थे। इनके पिता मौलवी सिराजुद्दीन अहमद डाक और तार विभाग के एक ऊँचे अधिकारी थे। १८९८ में आपने अलीगढ़ से बी० ए० की परीक्षा पास की और हैदराबाद जाकर मुलाज़िम हो गए। उन्नति करते-करते गृहमन्त्री के पद तक पहुँच गए। परन्तु रियासत का वातावरण उन्हें रास न आया और वह अपने घर वापिस आ गए।

तराबलस और बल्कान की लड़ाई के ज़माने में आप दैनिक 'ज़मींदार' के सम्पादक थे। इनकी लेखनी के ज़ोर से अखबार कहीं-का-कहीं पहुँच गया। वह उच्च कोटि के साहित्यकार, प्रभावशाली वक्ता, निडर पत्रकार, कुशल कवि और चंचल मनोवृत्ति के राजनीतिज्ञ थे। वह मुसलमानों का दुख-दर्द अधिकता से महसूस करते और हर आग में कूद पड़ते। कांग्रेस और खिलाफ़त के आन्दोलनों में भी आपने बड़ा भाग लिया। आप कुल मिलाकर १२ साल कारागार में रहे होंगे। २७ नवम्बर, १९५६ को आपने अन्तिम साँस ली।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मग़रिब के कफ़न चोर

मशरिक़ में ग़रीबों की नहीं कोई रही गोर[1]
सर पकड़े हुए बैठे हैं मग़रिब के कफ़न चोर
लिखता हूँ फ़लस्तीन के शहीदों की कहानी
आलूदा[2] लहू से हैं मेरी उंगलियों के पोर
हैं तीरा-ओ-तारीक[3] कलीसा[4] की फ़िज़ाएँ
छाई हुई है जिस पे घटा जंग की घनघोर
ग़ल्ताँ[5] है इधर ख़ाक में जिस्मे हबशिस्ताँ
हस्पानिया की नाश उधर ख़ूँ में शराबोर
सुन सुन के अतातुर्क[6] की तलवार की झंकार
रूमा का दबा शोर तो बर्लिन की दबी कोर
फ़िस्ताइयों[7] और नाज़ियों की फितनागरी[8] से
चर्चिल हैं सरासीमा[9] तो वहशतज़दा[10] हैं होर[11]
मिलता है किसी को न ये ज़ारी[12] से न ज़र से
इन्साफ़ मिलेगा उसे हासिल हो जिसे ज़ोर

इंतिज़ार[13]

फिरता है मेरी आँख में क़िस्मत का नया फेर
शेरों को नयस्ताँ[14] में शेग़ालों[15] ने लिया घेर

---

१. क़ब्र; २. दूषित; ३. अंधकारमय; ४. चर्च; ५. लोटता हुआ; ६. मुस्तफ़ा कमाल जिन्होंने टर्की को स्वाधीनता दिलाई; ७. फ़ासिस्ट; ८. उपद्रव; ९. घबराये हुए; १०. त्रस्त; ११. सेमुएल होर; १२. विलाप; १३. प्रतीक्षा; १४. जंगल; १५. गीदड़ ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नगरी अगर अंधी है तो राजा भी है अंधा
भाजी भी टके सेर है खाजा भी टके सेर
छीने हैं यहूदी ने मसीही की मदद से
दौलत के लगा रखे थे इस्लाम ने जो ढेर
कब होगी नमूदार[1] ख़ुदाया सहर[2] उसको
जिस रात ने डाला है फ़लस्तीन में अंधेर
हम से तिरा वा'दा है कि है ख़ौफ़ के बाद अम्न
या रब तिरे इस वा'दे के ईफ़ा[3] में है क्या देर

आजकल के मियाँ बीवी

उसको ज़रगर से जड़ाऊ नथ के बनवाने की फ़िक्र
इसको बाज़ारों में फिर कर नाक कटवाने की फ़िक्र
उसको ये ख़्वाहिश कि घर की आबरू ज़ाया न हो
इसको क़ैदे पर्दा से आज़ाद हो जाने की फ़िक्र
उसको बच्चों का तमाशा देखने की आरज़ू
इसको सिनेमा जा के जी हर रात बहलाने की फ़िक्र
उसको ये कोशिश कि घर में चार पैसे जम्अ हों
इसको घर रखकर गिरो आइने और शाने[4] की फ़िक्र
उसको मिहनत कर के दो आने कमाने का ख़याल
इसको आठ आने की फ़रमाइश के दुहराने की फ़िक्र
उसको गाढ़े ही के तहमद में मगन रहने की धुन
इसको रेशम और लवंडर में समा जाने की फ़िक्र

× × ×

अगर सरकार मुर्शिद[5] थी तो अहरारी वली निकले
और उनकी गोशमाली[6] को मलिक बर्कत अली निकले
इलेक्शन सर पै आया कामयाबी इसको कहते हैं
कि हर तक़रीर आज़ादी के साँचे में ढली निकले

---

१. प्रगट; २. प्रभात; ३. वचन पूरा करना; ४. कंघी; ५. धर्म-गुरु; ६. कान उमेठना।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दुआएँ माँगती है रात-दिन अहरार की टोली
कि जिस कूचे से हम निकलें लफ़ंगों की गली निकले
सुना दे जाके अंग्रेज़ों को सच्ची बात कौंसिल में
खुदाया हम में भी टोली इक ऐसी मनचली निकले

× × ×

वर्क़ पा[१] मोटर है मोहसिन शाह की
वाह क्या मोटर है मोहसिन शाह की
कर नहीं सकती हमारा इन्तिज़ार
बेवफ़ा मोटर है मोहसिन शाह की
छीने जाती है दिले सरकार को
दिलरुबा मोटर है मोहसिन शाह की
ग़ैर से है बसकि[२] उसकी रस्मोराह
बेहया मोटर है मोहसिन शाह की
रुख़ नहीं करती थियेटर की तरफ़
पारसा मोटर है मोहसिन शाह की
ख़ुद तो महसिन शाह हैं ख़ाकी नज़ाद[३]
बाद पा[४] मोटर है मोहसिन शाह की

× × ×

नई तहज़ीब ने लन्दन से आकर
बताया हमको क्या होती है टाकी
हुआ रुख़सत लठैती का ज़माना
कि है क़ायम मुक़ाम आज उसकी हाकी
दिये गंजे को परमेश्वर ने नाख़ुन
ये हैं तम्हीद अर्ज़ें मुद्दआ[५] की
ख़ुदाई कर रहे हैं आजकल बुत
हुकूमत उठती जाती है ख़ुदा की

× × ×

१. बिजली की भाँति तेज़ चलने वाली; २. अधिक; ३. जो मिट्टी से बना हो अर्थात् मनुष्य; ४. पवन की तरह तेज़ चलने वाली; ५. तात्पर्य की भूमिका।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिलाते हैं ये इत्मीनान चेम्बरलेन पोलों को
छुड़ा सकते हैं हम अब भी उक़ाबों[1] से ममोलों को
मुक़द्दर हो चुकी है फ़त्ह अंग्रेज़ी असाकिर[2] की
पड़ा फोड़ा करे हिटलर जले दिल के फफोलों को
बबातिन[3] हेच हैं खुल जायेगा पोल एक दिन उनका
बजा ले जर्मनी अपने बलंद आहंग[4] ढोलों को
मुसोलिनी का सर इटली में मूँडा जायेगा जिस दिन
बरसता देख लोगे उस पर इंग्लिस्ताँ के ओलों को
हमारे साथ हैं तुर्क और बेढब है ख़ुदा उनका
मनों का वज़न जिसने बारहा बख़्शा है तोलों को

× × ×

सुनो अच्छी तरह ऐ मगरिबी तहज़ीब के पुतलो
कि हम उतना ही उभरेंगे दबाओगे हमें जितना
संभलकर डालियेगा हाथ साहिब सिन्फ़े नाज़ुक[5] पर
कहीं महशर[6] न बन जाय ये औरत ज़ात का फ़ितना
कचोके उनकी संगीनें कहाँ तक देंगी सीनों में
ज़रा हम भी तो देखें उनके बाज़ू में है दम कितना

× × ×

ख़िलाफ़त पर फ़िदा होने को सब दींदार बैठे हैं
गये ज़िंदाँ[7] में फ़ाख़िर माजिद अब तैयार बैठे हैं
वो हम पर जब्र करते हैं हम उस पर सब्र करते हैं
वो गर बाकार हैं हम भी नहीं बेकार बैठे हैं
ये माना हम कभी जिस बज़्म[8] की मस्नद[9] की ज़ीनत[10] थे
अब उस पर डटके बासद कर्रोफ़र अग़ियार[11] बैठे हैं

---

१. गरुड़ (जर्मनी); २. सेना; ३. भीतर से; ४. ऊँची आवाज़ वाले; ५. स्त्री वर्ग; ६. प्रलय; ७. कारागार; ८. सभा; ९. गद्दी; १०. शोभा; ११. बहुत शान के साथ पराये लोग बैठे हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हमारा दर्दे दिल किस तरह पहुँचे जार्ज पंजुम तक
कि वो क़स्रे बकिंघम[1] में समन्दर पार बैठे हैं

× × ×

फ़ितनए महशर से नहीं कुछ कम हक़ में हमारे फ़ितना ये हक्क़ा[2]
मस्नदे काबुल पर मुतमक्किन[3] होने लगा है बच्चा सक्क़ा
कुफ्र के फ़तवे हाथ में लेकर आये हैं पीरो, सूफ़ी ओ मुल्ला
दीने मुबीं[4] की अज़मतो शौकत होने लगी है ग़ाइबग़ुल्ला
ऐ मेरे मौला 'दूर नहीं है उनसे तेरी तक़दीर का डंडा
गाड़ दे उनकी क़ब्र पे या रब ग़ाज़ी अमानुल्लाह का झंडा

× × ×

दुर्रानियों की फ़ौज जो मैदाँ में डट गयी
सक़्क़े की मश्क एक ही ठोकर में फट गयी
ख़ुद कोह दामन ही गिरे उस पे टूट कर
अच्छा हुआ कि जूतियों में दाल बट गयी
सक़्क़े का हाथ गर्चे पड़ा था तुला हुआ
क़िस्मत मगर ख़राब थी तलवार उचट गयी
माँझा न तेज़ था तो लड़ाया था क्यों पतंग
पड़ते ही एक पेच के झट डोर कट गयी
ख़ुशियों की साअत[5] आ गई अय्यामे ग़म[6] गये
नूरे सहर तुलू[7] हुआ रात कट गयी

× × ×

जब आयें साइमन इस तरह इस्तिक़बाल हो जाय
कि पहुँचें जिस जगह नाज़िल वहीं हड़ताल हो जाय
हमारा ये वतन आज़ाद हो चुटकी बजाते में
हर इक हिन्दू अगर पंडित जवाहरलाल हो जाय

---

१. बकिंघम पैलेस; २. ईश्वर की शपथ; ३. प्रतिष्ठित; ४. स्पष्ट धर्म; ५. घड़ी; ६. दु:ख के दिन; ७ उदय।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संभालें चोंच बर्किनहेड और उनके हम-नवा[1] तायर[2]
ज़रा गर अंदलीब[3] इस्लाम की चोंचाल हो जाय
ख़िलाफ़त कांग्रेस और लीग का एका ये कहता है
कि उलटी आस्माने पीर[4] की हर चाल हो जाय
अगर हिन्दोस्ताँ को नेमत आज़ादी की हासिल हो
तो मक्खन तोस का बरतानिया में काल हो जाय

× × ×

मेरी तरह सिड़ी नहीं लठ वो पुलिस के खाये क्यों
बैठ के वैसरा के साथ शैख़ पिये न चाय क्यों
क़ैदे फ़रंगा बंदे ज़ीस्त[5] फ़र्क़ से बेनियाज़ हैं
मौत से पहले आदमी जेल से बाहर आये क्यों
टोडियों की हरइक दलील जबकि है ख़स[6] से भी ज़लील
बैठ के गोल मेज़ पर देने लगे वो राय क्यों
इल्लते मुफ़्लिसी[7] में जब वोट भी हम न दे सकें
जेल में भेजकर ये नाच आपने फिर नचाये क्यों
बिरहमन और शैख़ के दिल हों अगर मिले हुए
टाम[8] नये नये सितम आये दिन उनपे ढाये क्यों

× × ×

कटे हैं जिस क़दर सर गंगसर के गुरदुआरे में
है दर्ज उन सबकी क़ुरबानी जज़ा[9] के गोश्वारे[10] में
न घायल कर सकी थी जिनको नंकाना में आँख उनकी
उन्हें भी उसने तड़पाकर ही छोड़ा इक इशारे में
बचे जिनकी तुफ़ंगों[11] से न नन्हे-नन्हे बच्चे भी
है क्या तहज़ीबे मगरिब का अब इर्शाद उनके बारे में

---

१. सहमत (साथ गाने वाले); २. पक्षी; ३. बुलबुल; ४. बूढ़ा आकाश या विधाता; ५. जीवन की क़ैद; ६. सूखी घास; ७. निर्धनता के कारण; ८. अंग्रेज; ९. प्रत्युपकार; १०. तालिका; ११. बंदूक़।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभी देखा ही क्या है तुमने इस खूनी तमाशे को
बहुत से खेल बाक़ी हैं मदारी के पिटारे में
जफ़ा[1] की गर्मीए बाज़ार[2] मज़लूमी की रौनक़ है
रहा करती है ज़ालिम की तिजारत ही ख़सारे में

× × ×

कल शाम के वक़्त एक फटे हाल ज्ञानी
गलियों में बजाता हुआ फिरता था दोतारा
हर ज़ख्मे[3] से लगती थी नई चोट जिगर पर
हर नग़मे से करता था दिलों को वो दोपारा[4]
हर गत से मिलाता था ख़ला[5] में वो मला[6] को
और छेड़ता जाता था ये आहंगे दिलआरा[7]
कुछ तुमको ख़बर भी है कि बरतानिया ने क्यों
गद्दी से महाराजा-ए नाभा को उतारा
क्यों ख़ालसा की नाव पड़ी आके भँवर में
क्यों डूब गया पंथ की क़िस्मत का सितारा
उसकी ये ख़ता थी कि है मिल्लत[8] से उसे इश्क़
उसका ये गुनह था कि है मज़हब उसे प्यारा
इस जुर्म की ताज़ीर[9] में हम क़ैद थे कल तक
और आज गिरफ़्तार है सरदार हमारा
है कोई हक़ आगाह[10] जो बातिल से न झिझके
है कोई जो अंग्रेज से पूछे ये ख़ुदा रा[11]
क्यों फ़लसफ़ा अपना ही किया तुमने फ़रामोश
क्यों अपने ही मकतब का सबक़ तुमने बिसारा
क्यों तुमसे है मख़्फ़ी[12] ये हक़ीक़त कि हमेशा
बहता नहीं इक सम्त में तक़दीर का धारा

१. अत्याचार; २. ग्राहकों की बहुतायत, यहाँ तात्पर्य बहुलता से है; ३. सितार आदि बजाने का नुकीला छल्ला; ४. दो टुकड़े; ५. शून्य; ६. प्रकट; ७. आनन्दप्रद स्वर; ८. सम्प्रदाय; ९. दण्ड; १०. सत्य का ज्ञाता; ११. ईश्वर के लिए; १२. गुप्त।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ढलती हुई फिरती हुई इक छाँव है दौलत
तुम कौन हो जिनसे न करे गर ये कनारा
दुनिया में न यूनाँ है, न रूमा है, न ईरान
बाक़ी न सिकंदर है, न सीज़र है, न दारा
इक हम थे कि हमने जिसे पकड़ा उसे छोड़ा
इक तुम हो कि तुमने जिसे ताका उसे मारा
तुम कर न सकोगे कभी उस जज़्बे को पामाल
गिरती हुई क़ौमों को सदा जिसने उभारा
वो ख़ून जो सिखों ने बहाया है किसी दिन
बन जायगा पंजाब की तामीर का गारा
चैन आ नहीं सकता हमें जब तक न बिठालें
गद्दी पे महाराज-ए नाभा को दुबारा

× × ×

एक सरफिरे अंग्रेज़ ने जब बरसरे इजलास
लगवाये प्यादों से महाबीर को चाँटे
इतना भी न बटलर की हुकूमत से बन आया
इस अपने नुमाइंदाए इन्साफ़ को डाँटे
जिस रोज़ बिखेरे गये इन्साफ़ के ये फूल
बरतानिया के रस्ते में बोये गये काँटे
इस ज़ुल्म पे इस ज़ौर[१] पे जो पैकरे बेदाद[२]
अद्ल और मुसावात का भी फ़लसफ़ा छाँटे
अच्छा है कहीं उससे तो लंदन का वो अंधा
फिर फिर के मटनचाप जो अपनों ही में बाँटे

× × ×

दे रहा है हमें ज़िन्दाँ से ये पैग़ाम पटेल
मंज़िल आज़ादिए कामिल की है इस अहद में जेल

१. अत्याचार; २. अन्याय की मूर्ति।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आये दिन अपनों में होती जो न दांता किलकिल
होने पाते न वो इस तरह परायों के दबेल
जान बुल बिरहमनो शैख़ से है बर सरे जंग[1]
अब न होगा तो फिर इन दोनों में होगा कब मेल
सर हथेली पे लिये जब निकल आया पंजाब
तो ये समझो कि मंढे चढ़ गई इस देस की बेल
फैलती जाती है गांधी की लगाई हुई आग
कोई इर्विन से ये कह दो कि न इस आग से खेल
डेढ़ सौ साल तक अंग्रेज़ शुतुरबान[2] रहा
अब हम इस ऊँट की ख़ुद हाथ में थामेंगे नकेल

× × ×

हुकूमत इल्तिजाओं[3] से कभी हासिल नहीं होती
कोई अल्लाह का बंदा ये कह दे मालवी जी से
कभी भी सीधी उंगली से न निकला है न निकलेगा
चुपड़ना चाहते हैं अपने फुल्के आप जिस घी से
रिज़ोल्यूशन कहाँ तक पास करते हम चले जायें
ये चक्की कांग्रेस बैठी हुई किस वक़्त तक पीसे
नहीं मिलती जुलूसों और तक़रीरों से आज़ादी
जो मिलती है तो मिलती है पचैती और लठैती से
अभी तो बोलबाला है जवाहरलाल नेहरू का
और उनसे आ मिला है देस सारा कटके गांधी से
वो गोकुल का गोआला जो मीठी बाँसरी वाला
ये कहता है कि भैंस उसकी जो हाँके उसको लाठी से

× × ×

है इस अक़ीदे पे हिन्द क़ायम कि राम भी है रहीम भी है
इधर अलिफ़ वाओ मीम[4] भी है उधर अलिफ़ लाम मीम भी है

---

१. युद्ध में व्यस्त; २. ऊँट हाँकने वाला ; ३. प्रार्थना; ४. ओ३म् ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बँधा हुआ पेट पर है पत्थर मगर हिमाला से सर है ऊँचा
मैं हूँ मुसलमान वज़ा मेरी जदीद[1] भी है क़दीम[2] भी है
जब आये हम जेल में तो हम पर खुला कि योरप अज़ल के दिन से
दरोग़ गो[3] भी है हीला जू[4] भी कमीना भी है लईम[5] भी है
वो पैसे पैसे का चन्द दिन में फ़रंगियों से हिसाब लेगा
लंगोटी वाला हमारा गांधी महात्मा भी मुनीम भी है

---

१. नवीन; २. पुरानी; ३. झूठा; ४. चालबाज; ५. अत्यधिक कंजूस। न तो स्वयं खाये और न दूसरों को खाने दे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इकबाल

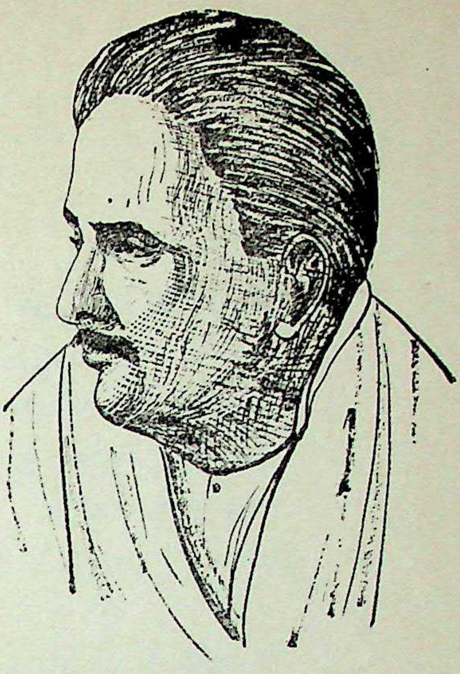

दार्शनिक कवि और चिन्तक इकबाल २२ फरवरी, १८७३ को सियालकोट में पैदा हुए। उनके पिता शेख नूर मुहम्मद के छः बच्चे थे। दो लड़के और चार लड़कियाँ। अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में इकबाल के एक पितामह ने जो काश्मीरी ब्राह्मण थे इस्लाम धर्म अपना लिया था।

इकबाल ने १८९७ में गवर्नमेंट कालेज लाहौर से बी० ए० पास किया। यहीं उनको सुविख्यात प्राध्यापक आरनोल्ड के शिष्यत्व का अवसर मिला। १८९९ में इकबाल ने दर्शनशास्त्र में एम० ए० की परीक्षा पास की। १९०५ में उच्च शिक्षा के लिए वह यूरोप गए। इसी यात्राकाल में उन्होंने "असरारे खुदी" नाम की प्रसिद्ध पुस्तक की रचना की।

'हिन्दोस्तां हमारा', 'नया शिवाला' और 'हिमालय पर्वत' का रचयिता कवि, राष्ट्रीयता की संकुचित परिधि से निकलकर, विश्व कवि बन गया। १९२२ में उनको सर की पदवी मिली। विधान सभा के सदस्य भी बने और गोलमेज कांफ्रेंस में सम्मिलित भी हुए। २१ अप्रैल, १९३८ को इकबाल ने अंतिम सांस ली।

उर्दू और फ़ारसी में उनकी कविताओं के अन्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। अकबर इलाहाबादी का अनुकरण करते हुए उन्होंने कुछ हास्य रस के शेर भी लिखे हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लड़कियाँ पढ़ रही हैं अंग्रेजी
क़ौम ने ढूंडली फ़लाह[1] की राह
रविशे मगरिबी[2] है मद्देनज़र
वज्ए मशरिक़[3] को जानते हैं गुनाह
ये डरामा दिखायेगा क्या सीन
पर्दा उठने की मुन्तज़िर है निगाह

× × ×

शैख साहिब भी तो पर्दे के कोई हामी नहीं
मुफ़्त में कालिज के लड़के उन से बदज़न[4] हो गये
वाज़ में फ़रमा दिया कल आप ने ये साफ़ साफ़
पर्दा आख़िर किस से हो जब मर्द ही ज़न[5] हो गये

× × ×

ये कोई दिन की बात है ऐ मर्दे होशमंद
ग़ैरत न तुझ में होगी न ज़न ओट चाहेगी
आता है अब वो दौर के औलाद के इवज़
कौंसिल की मिम्बरी के लिए वोट चाहेगी

× × ×

तहज़ीब के मरीज को गोली से फ़ायदा
दफ़ए मरज़[6] के वास्ते पिल[7] पेश कीजिए
थे वो भी दिन कि ख़िदमते उस्ताद के इवज़
दिल चाहता था हदियए दिल[8] पेश कीजिए

---

१. कल्याण; २. पाश्चात्य आचार-व्यवहार; ३. पूर्व का आचार-व्यवहार; ४. किसी के प्रति बुरी धारणा रखने वाला; ५. स्त्री; ६. रोग निवारण; ७. गोली ८. दिल की भेंट।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बदला ज़माना ऐसा कि लड़का पस अज़ सबक़[1]
कहता है मास्टर से कि बिल पेश कीजिए

× × ×

इंतिहा भी इसकी है आख़िर ख़रीदें कब तलक
छत्रियाँ रुमाल मफ़लर पैरहन[2] जापान से
अपनी ग़फ़लत की यही हालत अगर क़ायम रही
आयेंगे ग़स्साल[3] काबुल से कफ़न जापान से

× × ×

हम मशरिक़ के मिस्कीनों का दिल मगरिब में जा अटका है
वाँ कंटर सब बिल्लौरी हैं याँ एक पुराना मटका है
इस दौर में सब मिट जायेंगे हाँ बाक़ी वो रह जायेगा
जो क़ायम अपनी राह पे है और पक्का अपनी हट का है

× × ×

ऐ शैख़ो बिरहमन सुनते हो क्या अह्ले बसीरत[4] कहते हैं
गर्दूं[5] ने कितनी बुलंदी से इन क़ौमों को दे पटका है
या बाहम प्यार के जलसे थे दस्तूरे महब्बत क़ायम था
या बहस में उर्दू हिन्दी है या क़ुर्बानी या झटका है

× × ×

वो मिस बोली इरादा ख़ुदकुशी का जब किया मैंने
मुहज़्ज़ब है तू ऐ आशिक़ क़दम बाहर न धर हद से
न जुर्अत[6] है न ख़ंजर है तो क़स्दे ख़ुदकुशी[7] कैसा
ये माना दर्द नाकामी गया तेरा गुज़र हद से
कहा मैंने कि "ऐ जानेजहाँ कुछ नक़द दिलवा दो
किराये पर मंगा लूँगा कोई अफ़ग़ान सरहद से"

× × ×

मिम्बरी इम्पीरियल कौंसिल की कुछ मुश्किल नहीं
वोट तो मिल जायेंगे पैसे भी दिलवायेंगे क्या

---

१. सबक के पश्चात्; २. लिबास; ३. शव स्नापक; ४. ज्ञानवान; ५. आकाश; ६. साहस; ७. आत्म-हत्या का इरादा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिर्ज़ा ग़ालिब ख़ुदा बख़्शे बजा फ़रमा गये
"हम ने ये माना कि दिल्ली में रहें खायेंगे क्या"

× × ×

रात मच्छर ने कह दिया मुझ से
माजरा अपनी नातमामी का
मुझ को देते हैं एक बूँद लुहू
सिला[1] शब भर की तश्नाकामी[2] का
और ये बिसवादार बेज़हमत
पी गया सब लुहू असामी का

× × ×

जान जाये हाथ से जाये न सत
है यही इक बात हर मज़हब का तत
चट्टे-बट्टे एक ही थैली के हैं
साहूकारी, बिसवेदारी, सल्तनत

× × ×

तकरार थी मुज़ारे ओ मालिक में एक रोज़
दोनों ये कह रहे थे मिरा माल है ज़मीं
कहता था वो करे जो ज़राअत उसी का खेत
कहता था ये कि अक़्ल ठिकाने तिरी नहीं
पूछा ज़मीं से मैंने कि है किसका माल तू
बोली मुझे तो है फ़क़त इस बात का यक़ीं
मालिक है या मुज़ारे ए शोरीदा हाल[3] है
जो ज़ेरे आस्माँ है वो धरती का माल है

× × ×

उठा कर फेंक दो बाहर गली में
नई तहज़ीब के अंडे हैं गंदे

---

१. बदला ; २. प्यास ; ३. दुर्दशा-ग्रस्त ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इलेक्शन मिम्बरी कौंसिल सदारत
बनाये ख़ूब आज़ादी ने फंदे
मियाँ नज्जार[1] भी छीले गये साथ
निहायत तेज़ हैं योरप के रंदे

× × ×

सुना है मैंने कल ये गुफ़्तगू थी कारख़ाने में
पुराने झोंपड़ों में है ठिकाना दस्तकारों का
मगर सरकार ने क्या ख़ूब कौंसिल हाल बनवाया
कोई इस शह्र में तकिया न था सरमायादारों का

---

१. बढ़ई।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज़रीफ़ लखनवी

सैयद मकबूल हुसैन ज़रीफ़ २४ फ़रवरी, १८७० को लखनऊ में पैदा हुए। आपके पिता, बड़े चचा और बड़े भाई सब के सब विनोदी स्वभाव के थे। इस प्रकार आपका हास्य-रस पैतृक था। स्वर्गीय ज़रीफ़ सुप्रसिद्ध कवि सफ़ी लखनवी के सगे छोटे भाई और उन्हीं के शिष्य थे।

इन्होंने राष्ट्रीय और धार्मिक विषयों पर शेर कहे हैं। देश की सहानुभूति में आंसू बहाए हैं। ऊंचे आचार की बातें कुछ इस तरह कही हैं कि जादू का काम कर गई हैं। इन्होंने स्वयं अपने हास्य-रस के विषय में लिखा है—

ज़राफ़त में हम अपनी कौम का अफ़साना कहते हैं,
खरी कहते हैं जब कहते हैं आज़ादाना कहते हैं।

हास्य रस उनके निकट गन्दी हँसी या ठठोल नहीं। वह सभ्यता का दामन कभी नहीं छोड़ते थे। स्वयं ही लिखते हैं :—

पिन्हाऊँ फिक्र को इस हुस्न से जाना ज़राफ़त का,
कुशादा हर तरफ़ तहज़ीब का जिसमें कि दामन हो।

इनका दीवान "दीवान जी" के नाम से उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ है। इनका कविता पढ़ने का ढंग भी बड़ा रोचक था। पूर्वी भाषा के शब्दों का प्रयोग स्थान-स्थान पर करते थे और ऐसी निपुणता से उनका उच्चारण करते थे कि सुनने वालों के पेट में बल पड़ जाते थे। १९३७ में यह हँसता-बोलता और सब को हँसाता हुआ कवि सदैव के लिए खामोश हो गया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वो बैठने की चीज़ है मोंढा कहें जिसे
वो लेटने की शै है खटोला कहें जिसे
काला-सा एक परिन्द है कौश्रा कहें जिसे
वो दूसरा सफ़ेद है बगला कहें जिसे
मीठा है एक क़िस्म का हलवा कहें जिसे
रोटी है एक तरह की मांडा कहें जिसे
वो मर्द माँ का बाप है नाना कहें जिसे
माँ की बहन वो ज़न है कि ख़ाला कहें जिसे
कहते हो गरचे दीद के क़ाबिल है रूएयार[1]
ऐसा तो हो कि लोग तमाशा कहें जिसे
श्राता है दो पहर में बनारस से लखनऊ
क्या तेज़ रौ[2] वो श्राम है लंगड़ा कहें जिसे
क्या ख़ूब के श्रलावा बताश्रो तो श्रब ज़रीफ़
ऐसा भी कोई है कि सब श्रच्छा कहें जिसे

× × ×

ऐ क़हत कुछ दिनों जो श्रभी श्रौर तू रहे
बाक़ी न मैं रहूँ न मिरी श्रारज़ू रहे
कुछ नेको-बद[3] की श्राप को पहचान ही नहीं
श्रब तक हुज़ूर श्राप वही बाँगड़ू रहे
ख़ूबी इसी में है कि ये कौदन[4] बने रहें
चेले गुरु बनें तो कहाँ फिर गुरु रहें

---

१. प्रिय का मुख ; २. द्रुत गामी ; ३. श्रच्छा-बुरा ; ४. मूर्ख ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धोबी का है वो कुत्ता न घर का न घाट का
साथ आप के वही कि जो हो फ़ालतू रहे
म्यूनीसपलटी को वही पाखाना है पसन्द
घर भर में तारकोल की जिससे कि बू रहे
चालान हो जो बम्बे पर जाकर नहाइये
किस तरह ये बताइये फिर आबरू रहे
लैला के वास्ते जो बनाया था इक मकान
मजनूँ का बाप कहता था उसमें बहू रहे
गर 'मीर' की ज़बान में फ़रमाओते हैं आप
कहिये कभी रहे की जगह पर कभू रहे
हम उनको क्या कहें जो ज़माने में ऐ ज़रीफ़
कहने को मर्द देखने में मादा रू[1] रहे

× × ×

शोला बार[2] आहें भी कीं घूमा किये मुज़्तरे[3] बने
गर्दिशे तक़दीरे आशिक़[4] बन के घनचक्कर बने
तेज़ रफ़्तारी समन्दे नाज़[5] की बढ़ जाय और
ज़ुल्फ़े पेचाँ का अगर उसके लिए हण्टर बने
क्यों न साक़ी की सुराहीदार गर्दन देख कर
मैकशे नादार[6] का कुल्हिया-सा मुँह सागर बने
बे अमल आलिम अगर सारी किताबें चाट जाय
आदमी तो बन नहीं सकता वही झींगर बने

× × ×

यार गोया इक मसाला पीसने की सिल भी है
जब तो बट्टे की तरह पत्थर के उसका दिल भी है
जिस जगह पर हो सिड़ी सौदाइयों का इक हुजूम
है वो पागलखाना भी और यार की महफ़िल भी है

१. मादा की शक्ल वाला; २. अग्निवर्षक; ३. व्याकुल; ४. प्रेमी के भाग्य का चक्र; ५. हाव-भाव के घोड़े अर्थात् हाव-भाव की; ६. दरिद्र मद्यप।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूछ-गछ करने को मुर्दे से नकीरैन[1] आयेंगे
फिर तो इक थाना पुलिस का क़ब्र की मंज़िल भी है
जब दहन[2] ग़ायब कमर मादूम[3] निकला ये हिसाब
हुस्न में माशूक़ के ज़ीरो भी है और निल भी है

× × ×

कमर बाँधे अदम[4] के वास्ते तैयार हो जाय
ग़ज़ल ख़ानी का जिसको शौक़ या आज़ार हो जाय
मुकर्रर हम पढ़ेंगे जब तो कोई क्या बनायेगा
किसी जल्से में जब पाबंदीए अशआर[5] हो जाय
यहाँ तक सुहबते शेरो-सुख़न में रात भर जागे
कि मर जाय नहीं तो कम से कम बीमार हो जाय
मईशत[6] का जिसे खटका न कोई फ़िक्र दुनिया की
वही शाइर है जो इस अहद में बेकार हो जाय
ख़याले हिफ़्ज़े सेहत[7] जब पढ़े-लिक्खे नहीं रखते
तो शिरकत करने वाला फिर न क्यों बीमार हो जाय
जरीफ़ एक आध लेक्चर साल भर में दे दिया जाकर
वो खुश क़िस्मत है जो शाइर न हो नस्सार[8] हो जाय

सियाहते ज़रीफ़

मक़बूल जब वतन से सूए करबला[9] चले
हमराह सब अज़ीज़ चले आशना चले
कुछ लोग साथ कान में पढ़कर दुआ चले
ख्वाहिश किसी की ये थी कि साथी चला चले

---

१. दो फ़िरिश्ते जो मरने वाले से कब्र में सवाल-जवाब करते हैं; २. मुँह; ३. अस्तित्वहीन; ४. परलोक; ५. शेर का बहुवचन; ६. जीविका; ७. शुद्धता; ८. गद्य लिखने वाला; ९. इराक़ का एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ हजरत इमाम हुसैन शहीद हुए थे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहुँचे जो रेलघर पै बड़ा इज़् दिहाम[1] था
मायल मुयानक़े[2] पै हर इक खासो ग्राम था
कुछ रेल घर का हाल करूँ मुख्तसर बयाँ
वो नौ बजे का वक़्त वो हंगामे का समाँ
क़ुलियों का लाद-लाद के लाना वो पेटियाँ
बजना वो घण्टियों का वो इंजन की सीटियाँ
गड़बड़ मुसाफ़िरों की भी इक यादगार थी
ग्रौरत पै मर्द मर्द पै ग्रौरत सवार थी
ग्रलक़िस्सा रेल जब सूएझाँसी[3] रवाँ हुई
ग्रौर शक्ल लखनऊ की नज़र से निहाँ[4] हुई
जो थर्ड में थे उनके लिए भी ग्रमाँ[5] हुई
बंचों पै धक्के खा के जगह कुछ ग्रयाँ हुई
पहुँची जो कानपूर तो फिर गड़बड़ी हुई
ठहरी जो थोड़ी देर तो फिर चल खड़ी हुई
ठहरी उरी में झाँसी में फिर जाके दम लिया
बीना में पानी पीने को चिल्ला के दम लिया
भोपाल ताल पहुँची तो घबरा के दम लिया
वाँ से इटारसी में जगह पा के दम लिया
खंडवे में थोड़ी देर ठहर कर रवाँ हुई
मन्माड में जो सुबह को पहुँची ग्रज़ाँ हुई
वाँ से ग्रगनपुरी पै ज़रा सा किया क़ियाम
कलियान जा के थोड़े ही ग्रर्से हुग्रा मुक़ाम
था तीसरा पहर न बख़ूबी हुई थी शाम
छूटा जो साथ रेल का हम सब से वस्सलाम[6]
यानी सवादे[7] बम्बई उस दम नज़र पड़ा
ठहरी ट्रेन इक इक मुसाफ़िर उतर पड़ा

१. भीड़ २. गले मिलना ; ३. झाँसी की ग्रोर ; ४. ग्रोझल ; ५. शान्ति ; ६. सलामती से मुक्ति मिली ; ७. यात्रा भूमि ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ले चल अपालो की तरफ़ अब मुझ को बहरे सैर[1]
घबरा रहा है दिल मेरा चौपाटी के बग़ैर
दिखला दे पवन चक्की मुझे तेरे दम की खैर
ले चल टरेम्वे पै न जाऊँगा पैर पैर

विक्टोरिया पै मुझ को चढ़ा कर फिरा कहीं
जल्दी ग्रांड रोड की सूरत दिखा कहीं

कुछ बम्बई का हाल करूँ मुख्तसर बयाँ[2]
चौड़ी सड़क दुरोया[3] कई मिंज़ले मकाँ
हर सू मिलों का शहर में फैला हुआ धुआँ
हर एक माले के लिए दस-बीस सीढ़ियाँ

कमरा हर एक काठ का पिंजरा सला हुआ
हर एक मकीं फंदैत हो जैसे पला हुआ

अशिया[4] सफ़र के वास्ते कुछ मुख्तसर से लाये
कमरा भी ख़ुद जहाज़ पे हम जा के देख आये
जाने को पंजशम्बा की ठहरी जो सब की राय
बदला लिबास खत बना हम्माम में नहाये

शब भर यही ख़याल रहा नींद उचट गयी
कुछ सोये कुछ न सोये यूं ही रात कट गयी

गोदी पे जब कि पहुँचे तो देखा ये माजरा
अम्बार[5] चार सम्त है अस्बाब का लगा
बैठा है और कोई मुसाफ़िर खड़ा हुआ
कोई ये कह रहा है कुली से कि जल्द ला

दस बज चुके थे दिन के हर इक बेक़रार था
बस डाक्टर के आने ही का इंतिज़ार था

शौहर[6] से ज़ौजा ज़ौजे[7] से शौहर अलग अलग
भाई बहन से भाई से ख्वाहर[8] अलग अलग

१. सैर के लिए; २. वर्णन; ३. दोनों ओर; ४. वस्तुएँ; ५. ढेर; ६. पति; ७. पत्नी; ८. बहन।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मादर से बेटा बेटे से मादर[1] अलग अलग
बेटी से बाप बाप से दुख़्तर[2] अलग अलग
है अस्ल ये बजा न किसी के भी होश थे
ये हाल देखते थे मगर सब ख़मोश थे

लो डाक्टर भी आ गया क़िस्सा हुआ तमाम
इक मेम साथ-साथ लिए बा सद एहतिराम[3]
बाहर बिछा के मेज़ उन्होंने किया क़ियाम
पर्दे में लेडी आई तअज्जुब का है मुक़ाम
बेकार इतने वक़्त को बरबाद कर दिया
हर इक की नब्ज़ देख के आज़ाद कर दिया

पहले उन्हें दिया गया इक सार्टिफ़िकेट
अव्वल दुवुम जहाज़ में जिन का कि था टिकट
फिर थर्ड वाले जितने थे उन से हुई झपट
चढ्ढे टटोले सीने को देखा उलट-पलट
बेचारे थर्ड वालों को पर्चे कहाँ दिए
भेड़ों की तर्ह आदमियों पर निशाँ दिये

हंगामा वो जहाज़ पै चढ़ने का अलहज़र[4]
थे पास पर किसी को किसी की न थी ख़बर
पुल तख़्ता ला के रख दिया पानी में तरबतर
कानिस्टेबल खड़ा था जहाँ से थी रह गुज़र
जो बे-निशाँ थे उनको न बढ़ने का हुक्म था
जिन के निशान थे उन्हें चढ़ने का हुक्म था

बैठे हुए सभों को न गुज़रे थे दो पहर
पहुँचा जहाज़ क़ुब्बे[5] के अन्दर हुआ गुज़र
मौजों का उठना और वो तलातुम[6] कि अलहज़र
वे ख़ुद हुए ये सब कि न अपनी रही ख़बर

---

१. माँ; २. बेटी; ३. बहुत आदर के साथ; ४. भगवान रक्षा करे; ५. बुर्जी; ६. जल प्लावन।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क़ै से मुसाफ़िरों का बहुत ग़ैर हाल था
चक्कर वो था कि सर का उठाना मुहाल था
ऊ ऊ की आ रही थी हर इक सम्त से सदा
सर पकड़े कोई बैठा था कोई पड़ा हुआ
कपड़े लथड़-पथड़ थे किसी का ये हाल था
कोई ये कह रहा था ख़बर लो कि मैं चला
मुँह तो खुला हुआ था मगर आँखें बन्द थीं
चारों तरफ़ से क़ै की सदायें बलन्द थीं
थीं जिन के साथ औरतें उनका न पूछो हाल
ले जाना और लाना था इक जान का बवाल
सीढ़ी से उनको लेके उतरना था इक कमाल
बेपर्दगी का ध्यान न पर्दे का था ख़याल
ये पर्दादारी जान के ऊपर अज़ाब थी
इन औरतों से मर्दों की मट्टी ख़राब थी
कहती थी कोई लो मिरा बुर्क़ा अटक गया
है है नया था तीन जगह से मसक गया
साहिब सँभालो सर से दुपट्टा खिसक गया
लो पायंचा उलझ गया मिक़ना[1] सरक गया
क्या गत बनी है सब की निगोड़े जहाज़ पर
फिसलन है किस ग़ज़ब की निगोड़े जहाज़ पर
लो बीवी पानदान का ढकना भी गिर गया
आफ़त पड़े जहाज़ पे कत्था भी गिर गया
तौबा है मेरे बच्चे का बबुआ भी गिर गया
ए लो निगोड़े तोते का पिंजरा भी गिर गया
कश्ती पे बुक़ची[2] रह गई है है ग़ज़ब हुआ
बिटिया की टोपी बह गई है है ग़ज़ब हुआ

---

१. सिर से पाँव तक ओढ़ने की बारीक चादर ; २. गठरी ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्या छोटी सीढ़ियाँ हैं निगोड़ी ख़ुदा की मार
ऐसा जहाज़ नौज दर गोर[1] दूर पार
हिलती भी हैं निगोड़ियाँ जिन को नहीं क़रार
रस्सी में डंडे बाँध दिये हेंगे पाँच-चार
ज़ीना निगोड़े मारों ने कैसा बनाया है
ये तो मूश्रों ने नट का तमाशा बनाया है
कप्तान से कोई नहीं कहता कि क्यों मूए
भर मुट्ठी दाम तू ने तो हम सब से ले लिये
रोका वहाँ जहाज कनारे को छोड़ के
आ आ के जिस जगह पे सताते हैं रुख चढ़े
बीवी की झाड़ू ऐसे मूए बदमआश पर
उतरे यहाँ पे कोई कहाँ उस की लाश पर
हो जान भारू जिस को वो ऐसा सफ़र करे
दीदे का पानी जिसके ढला हो न वो डरे
और पर्दे वाली तो मूई बेमौत ही मरे
या तो उठा के पर्दे ही को ताक़ पर धरे
मर्दों का हौसला न जहाँ पर वफ़ा करे
निकली न हो जो घर से बिचारी वो क्या करे
दस-बारह छोटे-छोटे शनूचे भी हम रिकाब
दो-चार शानियों के मुँह पर पड़ी निक़ाब
कुछ नीली-भूरी बुढ़ियाँ लगाये हुए ख़िज़ाब
हल्क़े में इन सभों के थे वो आस्माँ जनाब[2]
ग़ुल्ला सी आँखें उन में भी काजल घुला हुआ
कल्ले में थी गिलौरी मगर मुँह खुला हुआ
चीं-पीं वो बाल-बच्चों की वो उनका इंतिशार[3]
ले ले के गोद में उन्हें चढ़ना वो बार बार

---

१. नष्ट हो ; २. सम्मानित ; ३. परेशानी ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सीढ़ी पे बैठ-बैठ के गह चीख़ गह पुकार
मैला लबादा छींट की कुहना-सी इक इज़ार[1]
टोपी दुपल्ली ख़ाक में बिल्कुल अटी हुई
इस से भी बे-ख़बर कि म्यानी फटी हुई
ग़ल बल वो गुफ़्तगू में वो सच जिसमें लाख झूट
वो पीक का निगलना कि शरबत के जैसे घूँट
रुक रुक के बात करना कि जुमला[2] न जाये छूट
दो बीवियाँ तो साथ मगर उन में ऐसी फूट
इक अपना राग गाती थी इक अपना गाती थी
रोती थी एक दूसरी तबला बजाती थी
दो चार बक्स चोड़ के हमराह बे-कड़े
गब्भे लिहाफ़ तोशकें दस-बीस पोतड़े
दरियाँ चटाई टाट मगर सब सड़े सड़े
बर्तन तमाम घर के वो छोटे हों या बड़े
चूल्हा भी था अंगीठी भी हमराह आई थी
फुकनी तवा था दस्त पनाह[3] और कढ़ाई थी
हर इक को ये सुनाते भी जाते थे बारहा
मुम्किन हुई न जिन्स बहुत ढूँडता रहा
छुटपन से मुझ को शौक़ इसी बात का रहा
खाने-पकाने आते हैं मुझ को हज़ारहा
जर्दा, पुलाव, खीर, पराठे पकाता हूँ
और मैं कबाब बीस तरह के पकाता हूँ
चटनी, अचार का तो बनाना है मेरा खेल
हलवाइयों में बैठूँ तो खा जाएँ मुझ से मेल
बढ़ जाये घी से खाने में डालूँ अगर्चे तेल
पा जाऊँ जिन्स गर तो हो खाने की रेल-पेल

१. पाजामा ; २. वाक्य ; ३. चिमटा ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सौ नेमतें मैं रोज़ खिलाता चला चलूँ
अब देखियेगा आप ज़रा कर्बला चलूँ

× × ×

इस पर हुजूम वो कि न मिलता था रास्ता
खच्चर उधर से आया इधर से गधा चला
इन्सान सौ-पचास तो हैवाँ हज़ारहा
धक्का लगा किसी के कोई लात खा गया
सच तो ये है कि जान हर इक को अज़ीज़[1] थी
इन्सान और गधों में न मुतलक़ तमीज़[2] थी
वाँ से गुज़र के आये जहाँ है ट्रेम्वे
फिसले कई मुक़ाम से अक्सर गिरे पड़े
इस तर्ह राह काटी कि कुछ ठैरे कुछ चले
कुछ धक्के खाये राह में कुछ औरों को दिये
देखा अभी जो देर है गाड़ी के जाने में
आख़िर को जा के बैठ गये क़हवाख़ाने[3] में
सुनिये ट्रेम्वे को जो है ताब काज़िमैन[4]
इस वास्ते कि पायें मुसाफ़िर कुछ उससे चैन
चलती हैं चार गाड़ियाँ गो एक ही है लैन
तेज़ इतनी गाड़ी और है छकड़े के बैन बैन
इस पर भी झटका वो कि ठहरना मुहाल था
करता था उट्ठा-बैठी हर इक का ये हाल था
गाड़ी चली तो लौंडों की पीछे थी इक बरात
चढ़ आये दस तो कूद पड़े दन से पाँच-सात
कोई किसी को जड़ता था टीप और कोई लात
ढेला जमाया फट से कही गर किसी ने बात

---

१. प्रिय ; २. भेद ; ३. वह स्थान जहाँ लोग बैठकर चाय या क़हवा पीते हैं।
४. काज़िमैन नगर तक अर्थात् बहुत लम्बी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अक्सर छली चलैया थी अक्सर कुलेल थी
गाड़ी नहीं थी अस्ल में लड़कों का खेल थी
और मुन्तज़िम[1] वो जिनसे फ़क़ीरों को शर्म आये
नाज़िल हुए बला की तरह चीथड़े लगाये
काग़ज़ के टुकड़े हाथ में इक थैली भी दबाये
उनके टिकट का बाँटना पूछो न हाय हाय
बूढ़ों से आधा बच्चों से सारा वो लेते थे
जो दे चुका हो उससे दुबारा वो लेते थे
रोटी किसी ने दी तो कहा उससे बैठ जाओ
बिस्कुट किसी ने दूर से दिखलाये बोले आओ
चढ़ आया रास्ते से तो उससे कहा कि लाओ
उसने जगारा दे दिया ये बोले हाँ चलाओ
ये सब टिकट क्लक्टरों के भाईबंद थे
जितने टिकट थे उससे मुसाफ़िर दो चन्द[2] थे

कौंसिल इलेक्शन रेस

जब कौंसिल के जिमख़ाने में सूबे वाली घुड़ दौड़ हुई
अक्तूबर में लोकल रेसेज़ का हाल खुला हम पर सारा
हर सू था चमारों में चर्चा हँस हँस कर कहते थे चाकर
घोड़े की बधिया बैठ गयी फिर पोनी ने पाला मारा
जितनी टट्टू में गुर्बत[3] थी उतनी घोड़े में चालाकी
इक सूखा सहमा डग्गा सा इक खाये हुए दाना चारा
इन दोनों देसी घोड़ों में पोनी के ट्रेनर कांग्रेसी
इँग्लिश अस्तबल का एक अड़ियल आगे न बढ़ा यूँ जी हारा
इतने में कहा इक ज़ाकी ने अब दूसरी दौड़ का हाल सुनो
जिस में कि बिलट गये बुक मेकर इतना हारा हर दुखियारा

१. प्रबन्धक; २. दुगुने। ३. दरिद्रता;

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो सन् पचीस में दौड़ा था उस का था भाव बराबर का
जो अब की साल शरीक हुआ उस पर थे इक के दस बारा
नस्लन अरबी दो घोड़े ये मैदान में आये रेस के जब
इक इन में बाँसों आगे था इक पीछे-पीछे बेचारा
कम्पू के जुआरी घबराये जब चार तरफ़ से शोर हुआ
दूनी और चोपड़ दिलवाओ सब्ज़ा जीता मुश्की हारा
कुछ दिन ये ज़रीफ़ तमाशा है फिर आगे चल के कुछ भी नहीं
सब ठाठ पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

हमारे लीडर

क़ौम में दम नहीं और क़ौम के लीडर बश्शाश[1]
जैसे गिध होते हैं ख़ुश देख के लावारिस[2] लाश
वाह क्या बात है ऐ क़ौम के बच्चो शाबाश
सहल[3] से दो ही ये लटके हैं पये फ़िक्रेमआश[4]
ज़र कमाना है तो पढ़-लिख के प्लीडर बन जाओ
जब वकालत न चले क़ौम के लीडर बन जाओ
देखिये क़ौम की तारीख़ ये देती है पता
जब किसी क़ौम का लीडर हुआ सिर्फ़ एक हुआ
ख़ित्तए हिन्द में बहने लगी उलटी गंगा
हर तरफ़ लीडरी की आई हुई है बहिया
कहीं चालाक कहीं हैं बड़े भोले लीडर
छोटे लीडर, बड़े लीडर, हैं मंझोले लीडर
लेले मोटर नई इक चाहे वो ख़ुद मिट कर ले
घर में जिस तर्ह बने बिजली की रौ फ़िट कर ले
जमअ दावत के लिए एक डिनर सेट कर ले
और अंग्रेजी में कुछ थोड़ी-सी गिट-पिट कर ले

---

१. खुश ; २. जिस का कोई उत्तराधिकारी न हो ; ३. आसान ; ४. जीविका की चिन्ता ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जब ये सामान मुहैया हो तो फिर क्या डर है
क़ौम तस्लीम करेगी कि बड़ा लीडर है

ज़ेबे तन ता बक़दम[1] सर से हो खद्दर का लिबास
चट्टी पैरों में हो जूतों की जगह बारह मास
घूमे चर्ख़े की तरह चाहे न हो सूत कपास
जोहला[2] जमग्र हों जब गिर्द करो तुम बक़वास

मज्मए ग्राम में लाज़िम है कि बोले लीडर
क़ौम कह देगी कि हाँ ये हैं मंभोले लीडर

या बना लो कोई खद्दर की तिरंगी झंडी
धावा उस सिम्त करो तुम कि जिधर हो मंडी
खाग्रो सड़कों पे हवा गश्त में ठंडी ठंडी
जिस्मे नाज़ुक पे हो गाढ़े की फ़क़त इक बंडी

कुछ ब्रैहना[3] हों तो कुछ बाँधे लंगोटे लीडर
शोर हो जायेगा वो ग्राते हैं छोटे लीडर

लीडरी के हैं बहर कैफ़ बहुत से ग्रक़साम[4]
एक वो जिन का है जीने के लिए लीडर नाम
इक वो दावत से रिसेप्शन से फ़क़त जिन को काम
इक वो जो काम करें ग्रौर न सोचें ग्रन्जाम

वाक़िफ़े कार तो कम ग्रौर ग्रनाड़ी सदहा[5]
क़ौम फ़ुटबाल है लीडर हैं खिलाड़ी सदहा

जिस तरफ़ देखिये तैयार है इक टीम नई
दिल का इंजन तो पुराना है पर इस्टीम नई
ये सिखाती है फ़क़त ग्रब हमें तालीम नई
न ग्रमल कुछ हो बने रोज़ इक इस्कीम नई

१. सर से पाँव तक पहना हुग्रा; २. ग्रज्ञानी; ३. नंगे; ४. क़िस्में; ५. सैंकड़ों।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लीडरी के लिए औसाफ़[1] को हाजत[2] क्या है
दर्दे क़ौमी की भला उस में ज़रूरत क्या है
सब से पहले तो यही चाहिए ज़रदार[3] बनो
फिर कभी दोस्त कभी दुश्मने सरकार बनो
इक नई चीज़ ग़रज़ ये है कि हर बार बनो
गह[4] नमक साज[5] बनो गाह नमकख्वार[6] बनो
काम आता नहीं कुछ बंदए बे-ज़र[7] बनना
शानोशौकत ही से बनना भी तो लीडर बनना
क़ौम के नाम से लंडन की कभी सैर करो
क़ौमी सरमाये का सब खातमा बिलखैर[8] करो
ख़ादिमे काबा[9] बनो रुख़ तरफ़े दैर[10] करो
दोस्ती ग़ैरों से अपनों से कभी वैर करो
क़श्क़ा[11] माथे पे लगाओ कभी ग़ाज़ी[12] बन जाओ
गह पुजारी बनो तुम गाह नमाजी बन जाओ
मादरे हिन्द के बन कर कभी ले पालक पूत
रिश्ता जोड़ो कभी गांधी से कभी कातो सूत
क़भी तनज़ीम में अफ़राद[13] की होकर मब्हूत[14]
हिन्द को सर पे उठा लो कभी तारी हो[15] सुकूत
गाओ इक राग नया रोज़ पए ख़ुशहाली
कभी दरबारी आलापो तो कभी भोपाली
कभी तकबीर कभी नअ़मए जयकार सुनो
कौमी अफ़साना कभी क़िस्साए सरकार सुनो
मह्व[16] करदो उसे तुम दिल से जो इक बार सुनो
बात मतलब की जो हो उस को ग़रज़ यार सुनो

---

१. सद्गुण ; २. आवश्यकता ; ३. धनी ; ४. कभी ; ५. नमक बनाने वाला ; ६. नमक खाने वाला अर्थात् नौकर ; ७. ऐसा दास जिसे खरीदा न गया हो किन्तु फिर भी वह स्वामी-भक्त हो ; ८. अच्छी तरह समाप्त करो ; ९. काबे का सेवक ; १०. मन्दिर की ओर ; ११. तिलक ; १२. धर्म-योद्धा ; १३. व्यक्तियों ; १४. चकित ; १५. छा जाए ; १६. भुला दो ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जेल में तुम कभी रोटी बफ़राग़त[1] खाओ
शिमले की चोटी पे चढ़ कर कभी दावत खाओ
रंग गिरगिट की तरह अपना बदलते जाओ
रुख़ हवा का हो जिधर आप भी चलते जाओ
शम्अ की तर्ह ग़मे ज़र[2] में पिघलते जाओ
अलग़रज़ रोज़ नये साँचे में ढलते जाओ
कर दो अंधेर बपा बन के फ़िदाए मिल्लत[3]
क़ौमी अंधे तुम्हें कह देंगे ज़ियाए मिल्लत[4]

शामते इलेक्शन

जमअ कर दे क़र्ज़ ही ले कर ज़मानत के पचास
दूर होती जाये ग़ैरत जब इलेक्शन आए पास
वोटरों के हाथ जोड़े ख़ूब हो कर बद हवास
गिड़गिड़ा कर हर कसो नाकस से हो ये इलतिमास[5]
रहन[6] पर्चेके इवज़ इज्जत मिरी कर लीजिए
अपने बच्चों का तसद्दुक़[7] वोट मुझ को दीजिए
सुनिये इक साहिब का क़िस्सा जब हुई शामत सवार
ये ज़मानत कर के दाख़िल बन गये उम्मीदवार
छोड़ा पेशा तर्क फ़रमाया जो कुछ था कारोबार
कुछ असासुल बैत[8] बेचा कुछ लिया सूदी उधार
मुज़तरिब[9] रहते थे ये नाम आवरी के वास्ते
घर से निकले वोट लेने मिम्बरी के वास्ते
सब से पहले उन को जिस वोटर के घर जाना पड़ा
शैख़ बुद्ध नाम था और था जुलाहा क़ौम का
धोती बाँधे मिर्ज़ई पहने तना बैठा हुआ
इक सड़ा मिट्टी का हुक़्क़ा पी रहा था कज अदा[10]

---

१. इतमीनान से; २. धन का दुःख; ३. सम्प्रदाय के लिए जान निछावर करने वाला; ४. राष्ट्र-ज्योति; ५. प्रार्थना; ६. बन्धक; ७. निछावर; ८. घर का सामान; ९. व्याकुल; १०. टेढ़ी अदा वाला।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जाते ही तस्लीम की जब उस को बा सद एहतिराम[1]
मुँह को टेढ़ा करके बोला, "को है, बालेकुम सलाम"
बोले ये पहले न आया मैं हुआ इतना क़सूर
शैख़ बुद्धू आप मुझ पर रहम फ़रमाएँ हुज़ूर
आप को वालिद कहा करते थे भाई अब से दूर
मैं भतीजा आप का हूँ वोट ले लूँगा ज़रूर
बोले बुद्धू का कहेओ हम कहका-कहका वोट देई
वोट पहिये ओ जो तुरते हम का दस का लोट देई
सास ये मीनास्पल्टी है न जाने क्या बला
और तुम लम्बर जो होई जइहो तो हमरा फायदा
हम कभू तुम का न देखा और न तुमरे बाप का
औते ही औते वनायो बिन नहक हम का चचा
होई गुआ हुसियार बुढ़वा तुम चले हो चोट दे
कान पकड़ा हम न जावब अब कहू का वोट दे
हम यहीं नरिया पे इक दिन बैठ के मूता जरा
का कही हो झट्ट दे चालान हमरा होइ गवा
जब काउ लम्बर न आवा और न पूछिस का भवा
हम कचहरी मा मझिट्टर से उजरदारी किया
मुकद्दमा झूठा है साहिब हम माँ ये बूता नहीं
सच कही मीनास्पल्टी पर कभू मूता नहीं
जब सिरते दार बोला लाये हो कोनू गवाह
हम कहा ससुरा जमादर वा किहिस हम का तबाह
हम जुलाहा आप के और आप ठहरे बादशाह
कौन कह के सामने मूतत है साहिब वाह वाह
हँस के कह दीनिन मझिट्टर सेख जी जाओ बरी
रह गयी मुँह बाये के सब लम्बरों की लम्बरी

---

१. आदरपूर्वक ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुन लिहो सारी कथा दीहो कि नाहीं ये बताओ
बोट माँगे आये हो हम से तो हम का कुछ दिलाओ
कर चुकन बकवास अब भैया न हमरा मूड़ खाओ
कह दिया बस कह दिया अब जाओ चुप्पे घर का जाओ
जो रकम तुम से कहा सब पेसगी ले लेब हम
बोट दे मोटर पे ले जहियो तो हाँ दे देब हम
जब मियाँ बुद्धू के तेवर इस क़दर देखे कड़े
दहने बाएँ देख झट क़दमों पे उस के गिर पड़े
दिल में पछताए आख़िर क्यों हुए थे हम खड़े
कहिये ऐसे जाहिलों से क्या कोई कुश्ती लड़े
आबरू के साथ देकर पाँच राज़ो कर लिया
कामियाबी पर हुए ख़ुश ताव मूँछों पर दिया
आगे बढ़कर एक हज़रत का हुआ फिर सामना
उन से जाकर इस तरह की अर्ज़बासद इल्तिजा[1]
बन्दा परवर एक मज़हब है हमारा आप का
वोट दीजेगा जा मुझ को आप ख़ुश होगा ख़ुदा
हैं मेरे हल्क़े में जो-जो मेरे मज़हब के ख़िलाफ़
देखिए मिम्बर ज़रा हो लूँ तो कर दूँ सब को साफ़
मेहतर उन के दर पे झाड़ू देने आए क्या मजाल
और सक़्क़ा मश्क से नाली धुलाए क्या मजाल
टेक्स घरवारे का उन पर बन्ध न जाए क्या मजाल
ले लें बम्बा घर में वे मीटर लगाये क्या मजाल
नाच तिगनी का उन्हें अब मैं नचाऊँगा हुज़ूर
देखिये किस किस तरह उनको सताऊँगा हुज़ूर
ख़ुश हुए सुन कर जनाबे मौलवी-ए-मकतबी
हाथ फेरा रीश[2] पर और इस तरह तक़रीर की

१. प्रार्थना; २. दाढ़ी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आप इस के अह्ल हैं मेरी नज़र में वाकिई
ज़ाते सामी[1] को समझता हूँ मैं फ़ख्रे मिम्बरी
मोहतरम[2] ! मैं वादा क़ब्ल अज़ वक़्त[3] कर सकता नहीं
फ़र्ज़ है ईफ़ाए वा'दा[4] फिर मुकर सकता नहीं
उस जगह से उठ के घर पर एक साहिब के गए
दस बरस नाकाम रहने पर हुए थे जो बी० ए
रेलवें में थे मुलाज़िम ख़ुद भी थे चलते हुए
आप की तन्ख़्वाह तो कम ठाठ थे लेकिन बड़े
इंग्लिश स्टाईल पे रहने का जो उनको शौक़ था
बूट बेड़ी पाओं की कालर गले का तौक़ था
फूस के छप्पर में रहते थे ये इस सामान से
और फ़र्नीचर तो ख़ारिज उन के था इम्कान[5] से
टूटी-फूटी कुर्सियाँ ले कर किसी दुकान से
बैठते थे उन पे छप्पर में निहायत शान से
नाम इक तख़्ती पे लिख रखा था यूँ बहरे वक़ार[6]
मिस्टर अब्राहीम बी०ए०,टी०टी०,सी०ई०आई०आर
देख कर सूरत को उनकी इस तरह कहने लगे
आई ऐम वेरी बीज़ी मेक हेस्ट जल्डी बोलिए
फिर इधर टहले उधर टहले घड़ी को देख के
अपने कुत्ते से कहा कम सून उन से गोअवे
फिर कहा यू आर कंडीडेट बट नो ओल्ड मैन
तुम को अपनी वोट कैसे डेगा साहिब ओल्ड मैन
चूँकि कंडीडेट अंग्रेज़ी समझते ही न थे
गिड़गिड़ा कर इस तरह साहिब से फ़रमाने लगे
ये तो मुमकिन ही नहीं है आप पैदल जाइये
मैंने मोटर माँग ली है आप ही के वास्ते

---

१. उच्च जाति ; २. माननीय ; ३. वक़्त से पहले ; ४. वचन पूरा करना ; ५. शक्ति ; ६. सम्मान के लिए।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रौर क्योंकर इस तरह चलियेगा मुझ को देने वोट
कीजिए पाकेट बुक पे तारीखे इलेक्शन जल्द नोट

बात ग्रंग्रेज़ी नुमा उर्दू में यूँ साहिब ने की
हम कहा इंग्लिश में टुम समझा नहीं ग्रो ग्राई सी
डेखो ग्रपनो वोट रखनी माँगटा है हम फ़िरी
किस को डेगा पहले बटलाने नहीं सकटा कभी

हम सिटी फ़ादर नहीं तुम को बनाने माँगटा
डंम फिर मोटर पे हम काहे को जाना माँगटा

होके ये मायूस जब पलटे वहाँ से मुँह बनाये
दिल में कहते थे कि इन का वोट तो जाता है हाय
साल भर पहले बड़े दिन में जो डाली दे तो पाये
ग्रब बजुज़[१] इसके कोई सूरत नहीं बनती बनाये

फ़ीस दे कर नर्स इक बहरे सिफ़ारिश[२] लाऊँगा
चल गया चकमा तो उन से वोट फिर ले जाऊँगा

फिर बढ़े ग्रागे यहाँ से वोट के ग्ररमान में
घुस पड़े ये एक बुज़ क़स्साब[३] की दुकान में
नस्र में पढ़कर क़सीदा[४] पहले उसकी शान में
चाहते थे ये कहें कुछ शेख जी के कान में

यूँ कनौती को बदलकर शेख़ साहब ने कहा
सुनिये हजरत हम लगी लिपटी नहीं रखते जरा

चौधरी ने कल कहा था हम से ऐ भैया सकूर
सेख मुन्ने जिस को कह दें बोट दे देना जरूर
पर मनाही कर गये जब मौलबी ग्रब्दुल गफ़ूर
राफ़िज़ी[५] को बोट दे सकते नहीं हम तो हुज़ूर

---

१. इस के ग्रतिरिक्त; २. सिफारिश के लिए; ३. बकरी का मांस बेचने वाला; ४. कविता की किस्म जिसमें प्रशंसा की जाती है; ५. मुसलमानों के एक सम्प्रदाय को उस के विरोधी लोग निन्दा करने के लिए इस नाम से पुकारते हैं; राफ़िज़ी वह है जो विपत्ति पड़ने पर ग्रपने स्वामी को छोड़कर भाग जाए।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुनते हैं कुरश्रान में फरमा गये थे खुद रसूल
दीन की जब बात ठहरी दख्ल देना बेफजूल
हाजी कुत्बुद्दीन भी कहते थे सच्ची है ये बात
गैर महज़ब वाले को लम्बर बनाना बाहियात
सेख जी मजहब तुम्हारा श्रौर उनकी श्रौर जात
हो के लम्बर वो खुदा जाने करें क्या वारिदात
हाँ कोई मजहब का श्रपने हो तो उस को वोट दो
जब तुम्हें मौका मिले ऐसों को भैया चोट दो
इनको बुज़ क़स्साब ने जब दे दिया रूखा जवाब
ये उठे दूकान से मायूस बा चश्मे पुर श्राब[1]
श्रपने वर्कर से कहा जाकर कि सुनिये तो जनाब
श्राप ही तदबीर श्रब कुछ कीजिए इस की शिताब
सर्फ़[2] की पर्वा नहीं जो हो मुनासिब कीजिए
शेख़ जी के वोट को लेकिन न जाने दीजिए
दिल में वर्कर ख़ुश हुए कहने लगे बा सद सुरूर[3]
इस तरफ़ से श्राप बिलकुल मुत्मइन रहिये हुज़ूर
श्रौर लोगों से ज़ियादा सर्फ़ तो होगा ज़रूर
तो सही जब श्राप ही को वोट दें श्रब्दुश्शकूर
पीर लोटन शाह की ख़िदमत में जाता हूँ श्रभी
हुक्म उन का शेख़ जी के पास लाता हूँ श्रभी
पीर लोटन शाह थे इक खान्दानी तकियादार
श्राँख में सुरमा कई रत्ती गले में चंद हार
रीशे श्रक़दस[4] पान के धब्बों से रश्के लाला ज़ार[5]
गेरुश्रा कुरता गले में हाथ में इक पुश्तख़ार[6]

---

१. डबडबाई हुई श्राँखें ; २. खर्च ; ३. बहुत प्रसन्नता से ; ४. पवित्र डाढ़ी ; ५. लाला (एक लाल फूल) के फूलों के बाग को इस डाढ़ी से ईर्ष्या होती थी ; ६. पीठ खुजलाने का पंजा ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज़र्द तहमद पाओं में लकड़ी की ऊँची-सी खड़ाओं
घूमते फिरते थे यूहीं शह्र शह्र और गाओं-गाओं
पहुँचे वर्कर उन की खिदमत में बताजीले तमाम[1]
दो रुपये नज़राने के देकर किया झुक कर सलाम
अर्ज़ की हैं आप तो हाजत रवाए[2] खासो आम
शेख जी का वोट दिलवा दीजिए बस है ये काम
चूँकि हज़रत की हैं बैयत[3] में मियाँ अब्दुश्शकूर
आप फ़रमा दें अगर तो वोट दे देंगे ज़रूर
आप की दावत का कल घर पर करूँगा इंतिज़ाम
शेख जो को भी बुला लूंगा वहीं पर वक़्ते शाम
तज़्किरा मैं वोट का छेड़ूंगा मावैने तआम[4]
आप उनको हुक्म दे देंगे तो हो जायेगा काम
बोले लोटन शाह बाबा खुश रहो दावत क़बूल
हम फ़क़ीरों की दुआ से होगा सब मतलब हुसूल[5]
मुख़्तसर से इब्तिदाई वाक़िये जो कुछ लिखे
क्या अजब काफ़ी हों ये पब्लिक की इबरत[6] के लिए
इस तरह के वोटर और मिम्बर हों जब इस क़िस्म के
कहिये इस म्यूनिस्पलटी से किसे राहत मिले
साकिनाने शहर[7] अब हुशियार होना चाहिये
मिम्बर और वोटर का कुछ मेयार होना[8] चाहिये
खत्म भी कर दो ज़रीफ़ अब तुम बयाने मिम्बरी
ताब के[9] आखिर रहोगे क़िस्सा ख्वाने[10] मिम्बरी
ख्वाब से चौंकें ज़रा जब सरगिराने[11] मिम्बरी
फिर सुना देना उन्हें तुम दास्ताने मिम्बरी

---

१. शीघ्रातिशीघ्र ; २. आवश्यकताएँ पूरी करने वाला ; ३. मुरीदी ; ४. भोजन करते समय ; ५. प्राप्त ; ६. किसी घटना या बात से मिलने वाली शिक्षा ; ७, नगर-वासी ; ८. मान ; ९. कब तक ; १०. कथा सुनाने वाला ; ११. नशे की अवस्था में।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब समंदे फ़िक्र[१] की बाग और जानिब मोड़ दो
सोने वाले सो गये क़िस्सा अधूरा छोड़ दो

शेर आशोब[२]

तुझ में ऐ हिन्दोस्ताँ कुछ आजकल हद से सिवा
चार सू फैली हुई है शाइरी की इक वबा
इस मरज़ में तो अस्सी फी सदी हैं मुब्तला
मुस्तनद[३] शाइर है जिसने इक तख़ल्लुस रख लिया
शाइरी गो अह्‌दे माज़ी[४] में थी पायाने उलूम[५]
अब तख़ल्लुस में सिमट कर आ गई जाने उलूम

ऐ अजायब ख़ानए हस्ती[६] की जिन्से बे बहा[७]
अह्‌दे मौजूदा के शाइर वाह क्या कहना तिरा
तेरी कसरत हर जगह मर्दुम शुमारी से सिवा
तू फ़िरिश्ता है बशर की शक्ल में इस अह्‌द का
तुझ को खाने से न कुछ मतलब न कुछ पीने से काम
शेर कह कहकर सुनाने और फ़क़त जीने से काम

तर्ह का मिस्रा[८] नहीं बिजली की है इक बैट्री
जड़ दी शाइर में जहाँ उसने ग़ज़ल इक ढाल दी
दावते शेरो सुख़न अब दिल्लगी है दिल्लगी
साल में जितने हैं दिन तअदाद उन से बढ़ गयी
जिस जगह शिर्कत न की जाय वही आज़ुर्दा[९] है
सब को ख़ुश करता फिरे शाइर ही का दिल गुर्दा है

कुछ सऊबाते सफ़र[१०] होते नहीं माना तुझे
सोहबते शेरो सुख़न में फ़र्ज़ है जाना तुझे

---

१. विचार के घोड़े अर्थात् विचारों की ; २. "शह्र आशोब" उर्दू का एक काव्य-रूप है जिसमें किसी नगर का सविस्तार वर्णन किया जाता है। उसीके अनुकरण पर कवि ने "शेर आशोब" अर्थात् कविता का वृत्तान्त प्रस्तुत किया है ; ३. प्रामाणिक ; ४. अतीत ; ५. ज्ञान की अन्तिम सीमा ; ६. संसार का अजायबघर ; ७. अनमोल ; ८. समस्या ; ९. दुःखी ; १०. कष्ट ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काम शब भर जागना मिस्रे का दुहराना तुझे
हर ग़ज़ल की दाद देना और चिल्लाना तुझे
तेरी शिर्कत लाज़िमी हर शह्र में हर गाम्रों में
सर में सौदाए सुख़न[1] है और सनीचर पाम्रों में

मुन् अक़िद[2] देहात में होती है जब बज़्मे सुख़न
और बुलाये जाते हैं अतराफ़[3] से कुछ अह्ले फ़न[4]
जब सवारी से उतरते हैं असीराने मिहन[5]
उन का इस्तिक़बाल यूँ करते हैं अह्ले अंजुमन
पहले क़ुरबानी के बकरे की तरह गरदन में हार
उनके पड़ते हैं जो हों शेरो सुख़न के जाँनिसार[6]

फिर इक़ामतगाह[7] की जानिब बसद जाहो जलाल[8]
बढ़ता है आहिस्ता आहिस्ता गुरोहे बाकमाल[9]
गिर्द मज्मा तालिबाने दीद[10] का ख़ुश और निहाल
कुछ जवाँ कुछ बूढ़े कुछ बच्चे भी उनमें ख़ुर्द साल[11]
आगे आगे ढोल ताशे पीछे दिहक़ानी गँवार
दाहिने बाँय गुल अफ़शाँ फुलझड़ी और कुछ अनार

बाज़ इस मज्मे में संजीदा हैं बाज़े बांगड़ू
देखकर इन सबको करते हैं ये बाहम गुफ़्तगू
काहे हो भैया बसावन तुम का बतलायें कोऊ
जिनकी नट्टी मा पड़े हैं हार सब साइर हैं यू
का तबलिया और सरंगिया लोग इनके साथ हैं
फिर किकस गइहें गज़ल[12] यों सब तो खाली हाथ हैं

सौख माँ आयन रहें अब हम ना देखब ये बरात
बिन पुतरिया के भला मैफिल यह् कोनू है बात

---

१. काव्योन्माद; २. आयोजित; ३. तरफ़ का बहुवचन; ४. कलाकार; ५. कष्ट-ग्रस्त; ६. प्राण न्योछावर करने वाला; ७. ठहरने की जगह; ८. बहुत शान के साथ; ९. निपुण; १०. दर्शनाभिलाषी; ११. कम उम्र के; १२. कैसे गज़ल गाएँगे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ये तो अपनी सेरखानी माँ गवइयें सारी रात
हम मुखत काहेका जागी मूढ़ है हमरा परात
यूँ अगर नचियन तो इन सबका अनीला नाच होई
मसहरा[१] माँ बे पुतरिया फुसफुसीला नाच होई

इनमें देहाती भी इक शाइर थे अल्लामा फ़हीम[२]
नाम नामी आपका था मौलवी अब्दुल करीम
गो ज़मींदारी के बिक जाने से थी हालत सक़ीम[३]
थी तबीअत पुर सकून इससे कि खाते थे अफ़ीम
आप जब मकतब में पढ़ते थे जब ही से शौक़ था
बैत बाज़ी शाइरी दोनों से उनको ज़ौक था

सर पे पट्टे कान की लौ तक परीशाँ सर बसर
इक दुपल्ली टोपी ऊँची-सी पुरानी ज़ेबे सर
टाँग में बरदार पाजामा अंगरखा जिस्म पर
खिचड़ी डाढ़ी बीच से आधी इधर आधी उधर
हाथ में डंडा नरी का इक चढ़ौआँ पाओं में
आप रहते थे वहीं उजड़े हुए इक गाओं में

थे रिसेप्शन को कमेटी के यही रूहे खाँ[४]
बह्रे इस्तिक़बाल[५] ये तशरीफ़ लाये थे वहाँ
आप हर शाइर से मिल मिलकर ये करते थे बयाँ
शाइराने नुक्ता परवर[६] मैं भी हूँ अह्ले ज़ुबाँ
तीन सौ गज़लें लिखीं मैंने मज़ामीनों के साथ
इन्शा अल्लाह आज सुनियेगा सुखन वीनों[७] के साथ

यूँ तो इस क़स्बे में कहने को बहुत उस्ताद हैं
आप लोगों की दुआ मुझसे कम इस्तेदाद[८] हैं
मेरी ग़ज़लें अक्टरों को, रेडियों को याद हैं
मैं कहूँ क्या आपसे जब आप सब नक़्क़ाद[९] हैं

---

१. मुशाइरा; २. बुद्धिमान; ३. दुर्दशाग्रस्त ; ४. मुख्य आयोजक; ५. स्वागत के लिए; ६. मर्मज्ञ कवि; ७. काव्य-मर्मज्ञ; ८. कम योग्य; ९. आलोचक ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ये ज़रा वाक़िफ़ नहीं देहक़ानियाने बे कमाल[1]
हमसे पूछें तो बतावें उनको शोराम्रों का हाल

× × ×

ये भी है शाइर के ज़िम्मे इक ज़रूरी ग्रौर काम
जब ग़ज़ल पढ़ने शरीके बज़्म हो ये नेकनाम
ग्रपने जूतों का करे ग्रपनी बग़ल में इंतिज़ाम
वरना नंगे पैर घर ग्राना पड़ेगा बस्सलाम

बज़्म में कुछ क़द्रदाँ इस क़िस्म के ग्राजायेंगे
छाँट कर ग्रकसर नये जूते चुरा ले जायेंगे

इक कबड़िया सुनके यूँ करने लगा इज़्हारे राय
ये तो साइर था फिसड्डी ग्रौर बढ़िया कोई ग्राये
जो ग़ज़ल में जुल्फ़ का मासूक को नक्सा दिखाये
हमसे सौखीनों के दिल पर कुछ रुग्राब ग्रपना जमाये

डाँट के ललकार के हर एक मैफिल में पढ़े
जो ग़जल मौके पे कह डाले मुकाबिल में पढ़े

भाइयो नौकार साइर उसमें हो चाहे कुरीज़
राग में ग्रौर रागिनी में चाहिये उसको तमीज़
जो कहैती ग्रौर बढ़ैती जानता हो दोनों चीज़
ग्राजकल मैफिल में होता है वही हर दिल ग्रज़ीज़

ग्रासिको मासूक की खुद भी ग्रदा दिखलाये जो
चोट दिल पर देके सब मैफिल को बस गरमाये जो

भाई मौलाबक्स जिस बस्ती में हम ग्राबाद हैं
उस जगह साइर बड़े बढ़िया हैं मादरजाद हैं
इन सभों में सेख बदलू इक जगत उस्ताद हैं
उनको हर मौके की ग़ज़लें मुँह-जबानी याद हैं

---

१. मूढ़ गाँव वाले।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस जगह उस्ताद ने दो तीन ग़ज़लें झाड़ दीं
साइरों ने होके सर्मिन्दा बयाज़ें[1] फाड़ दीं
नाम तो है सेख बदलू और तखल्लुस है बदल
क्या कहें अल्लाह का है उनके ऊपर क्या फजल
काफिये ऐसे मिलाते हैं वो बढ़िया और डबल
एक घंटे में कहो सौ सेर की कह दें ग़ज़ल
भोर कर दें वो कहीं पढ़ने जो बैठें साम से
काँपते हैं और साइर लोग उनके नाम से
ये नुमाइस में अभी देवे गये थे पार साल
एक हक्कानी ग़ज़ल ऐसी सुनाई बे मिसाल
हाकिम और तैसीलदार ऐसे हुए सुनके निहाल
दे दिया तमग़ा उन्हें सोने का झट बे कीलोकाल
और जो साइर नुमाइस में गये फस हो गये
बस जगत उस्ताद बदलू गोल मिडलस हो गये
पैसे वालों की समझ में आ गई है अब ये बात
सर्फ़ बेजा[2] नाच गाने का है बिल्कुल वाहियात
जब कोई जलसा ख़ुशी का हो कहीं पर हो बरात
मुनअक़िद बज्मे सुख़न होती है ता कट जाये रात
पहले अर्बाबि नशात[3] आते थे गाने के लिए
अब तो शाइर जाते हैं ग़ज़लें सुनाने के लिए

---

१. कापी जिसमें कवि अपनी कविताएँ लिखता है; २. अनुचित व्यय; ३. नाचने-गाने वाले ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अहमक़ फफूंदवी

मुस्तफ़ा खाँ नाम के एक कवि तो गालिब के मित्र नवाब शेफता थे। दूसरे इसी नाम के कवि फफ़ूंद जिला इटावा के रहने वाले थे जिन्होंने विद्वान् और बुद्धिमान होते हुए भी अपना तखल्लुस अहमक़ रखा था। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में आपका जन्म हुआ और ८ अगस्त, १९५७ को आपका देहान्त। फफ़ूंद में एक शोरे की फ़ैक्टरी स्थापित कर रखी थी परन्तु राजनैतिक सरगर्मियों के कारण इनका कारोबार कायम न रह सका। १९२१-१९२२ में खिलाफ़त और कांग्रेस के आन्दोलन में सम्मिलित होकर कारागार के कष्ट सहन किए। विदेशी राज्य से घृणा इनकी रग-रग में भरी हुई थी। साम्प्रदायिकता के विरुद्ध भी इन्होंने बहुत-कुछ लिखा है। जेल-खाने को बार-बार सुसराल कहकर अपनी रोषाग्नि को मन्द करने का यत्न किया है। जब आप फ़ैजाबाद, आगरा, लखनऊ और अन्य जेलों में कैद थे वहाँ इनके दम से जेल ही में मुशायरे भी होते रहे।

आपने जी-हजूरियों, खान बहादुरों और रायसाहिबों के साथ-साथ दम्भी मुल्लाओं और पाखण्डी धार्मिक नेताओं पर फबयियाँ कसी हैं। विदेशी राज्य के विरुद्ध लड़ मरने वालों की प्रशंसा की है। आपने क्लब, कौंसिल, कालेज, मिसें, लविण्डर, डार्विन और नई सभ्यता के बहुत-से चिन्हों को हास्य का विषय बनाया है।

अन्त में मद्दाह तखल्लुस करने लगे थे। आपकी कविता के चार संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी मृत्यु के पश्चात् उत्तर प्रदेश की सरकार ने उनका एक शब्दकोष भी प्रकाशित किया है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बजा इर्शाद होता है[1] जनाबे हज़रते वाइज़
कि है हिन्दोस्ताँ में आजकल इस्लाम ख़तरे में
जो इस इर्शादे आलो को ग़लत जाने वो काफ़िर है
कि है अब फ़िर्काबन्दी के मिशन का काम ख़तरे में
वक़ारे कौमी ओ मिल्ली[2] को बेशक है क़व ख़तरा[3]
अगर आँ क़िबला का है ख़िलअतो इन आम ख़तरे में
ये सब ख़तरे बजा लेकिन जनाबे क़िबला ओ काबा
नज़र आता है मुझ को आप का अंजाम ख़तरे में

× × ×

सदाक़त के यही माना हैं मौज़ूँ इस ज़माने में
कि चक्की पीसिये और मौज करिये जेलख़ाने में
पचहत्तर लाख इक बेकार मद में सर्फ़ कर देंगे
रियाया के लिए कौड़ी नहीं जिन के ख़ज़ाने में
ये हुल्लड़ इस क़दर हड़बोंग इतनी चपक़लिश तौबा
तिरी महफ़िल में हूँ मैं या किसी भटियार ख़ाने में
रहाई मिल गई जब बन गये सरकार के मुख़बिर
सज़ा पाई थी हम ने एक दिन जूते चुराने में
निगाहे यार की आतश फ़िशानी[4] क्या कि है कामिल
हमारी आह का एरोप्लेन भी बम गिराने में
नई हदबन्दियाँ होने को हैं आईने गुलशन[5] को
कहो बुलबुल से अब अंडे न रखे आशियाने में

१. ठीक कहते हैं ; २. राष्ट्र की मान-मर्यादा ; ३. बड़ा खतरा ; ४. अग्नि-वर्षा ; ५. बाग का कानून ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ख़ुदा जाने मियाँ अहमक़ कहाँ डाल आये हैं डाका
कि आधी रात से जकड़े हुए बैठे हैं थाने में

× × ×

क्या हुआ हम को अगर नाने शबीना[1] भी नहीं
आप की ख़ातिर तो ऐ साहिब डिनर मौजूद है
अल्लाह अल्लाह किस क़दर सहमे हुए रखते हो पाओं
ख़ाके आशिक़ क्या है गोया जरमनी बारूद है
कहते हो खा जायेंगे कच्चा तिरे दिल को ये क्या
वो बही है नाशपाती है कोई अमरूद है
पूछते क्या हो कि अहमक़ कौन है मैं क्या कहूँ
देख लो ख़ुद वो तुम्हारे सामने मौजूद है
किस तर्ह से फिर लड़के ईमाँ पर रहें क़ायम
वो बर्क़े कलीसा जब अस्कूल में लिक्चर दे
सुन पाते हैं जब कोई वो बात लतीफ़े को
फ़रमाते हैं अहमक़ से तू नज़्म इसे कर दे

× × ×

ये मग़्रिबी लुटेरे खुँख़ार भेड़िये हैं
ऐ अह्ले मश्रिक़ इन को जिस तर्ह हो निकालो
जब ग़ैर ने निकाला तो अब मिरे घर आये
बन्दानवाज़ बख़्शो बस जाओ रास्ता लो
है आज तक तो अहमक़ फ़र्ज़ानए ज़माना
अब तुम नये अनोखे उस को गधा बना लो

× × ×

भागने की न यहाँ राह न पिटने की सकत
आह लाई है कहाँ हसरते दीदार मुझे
आजकल मद्देनज़र है मुझे सेहत का ख़याल
वरना पीने से तो हरगिज़ नहीं इनकार मुझे

१. रात की रोटी अर्थात् भोजन ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ख़िदमते क़ौम फ़रोशी को दुआ देता हूँ
वरना इक उम्र से थी हसरते दरबार मुझे
ये हुकूमत नहीं इक तर्ह की क़ज़्ज़ाक़ी[1] है
लूटने ही के लिए आये हैं सरकार मुझे
जेलख़ाने में हूँ सुसराल की मानिंद अहमक़
कोई तकलीफ़ यहाँ पर नहीं ज़िनहार[2] मुझे

× × ×

ये इज़्ज़त कोई कम है शैख़ साहिब जिस पे मरते हैं
कलक्टर भी जब उन से मिलते हैं शेक हैंड करते हैं
खड़े होकर जिन्हें पेशाब करना भी नहीं आता
वो नाहक़ कुर्सियों पर बैठने की मश्क़ करते हैं
ये शोख़ी ये शरारत ये दिल आराई[3] कहाँ उन में
मिसों के चाहने वाले कहीं हूरों पे मरते हैं
वो गुलरुख़सार[4] जिन के बाग़ में बुलबुल चहकते थे
अब उन की क़ब्र का सब्ज़ा गधे और बैल चरते हैं

× × ×

गये वो दिन कि चम्पा और नर्गिस की बहारें थीं
बस अब या सेंट है इस अंजुमन में या लवंडर है
मिरी आँखों में नक़्शा खिंच रहा है महजबीनों[5] का
मिरा जज़्बे तसव्वुर[6] क्या है इक फ़ोटोग्राफ़र है
वही चर्चे वही फ़िक्रें वही सब काम ऐ अहमक़
फ़तहगढ़ जेल क्या है कांग्रेस वालों का दफ़्तर है

× × ×

पढ़ के अंग्रेज़ी दिमाग़ उसका फ़लक पर हो गया
जानता है ख़ुद को बावर्ची कि बटलर हो गया

---

१. डकैती; २. कदापि; ३. दिल की शोभा बढ़ाना; ४. फूल जैसे गाल वाला; ५. जिसका माथा चाँद-जैसा हो, अत्यधिक सुन्दरी; ६. कल्पना की आकर्षण-शक्ति।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुब्बे ख़िदमत[1] पा लिया मिल्लत फ़राशा[2] का सिला
कोई डिप्टी बन गया कोई कलक्टर हो गया
तुम समझते हो यहाँ भी हम निकल जायेंगे साफ़
अर्सए महशर[3] न ठहरा ग़ैर का घर हो गया
क्या यही अह्‌दे वफ़ा है ओ बुते पैमाँ शिकन
जुमअ का इक़रार और उसको सनीचर हो गया
कुछ बचा भी पेट से हम बेनवाओं को तो वो
नज़्रे जापानो फ़्रांसो मांचेस्टर हो गया
मैं मुरस्सा होके कोटो मफ़लरो-पतलून से
आदमी तो क्या बिला तश्बोह[4] बन्दर हो गया
इस क़दर ख़ुश हैं मियाँ अहमक़ कि जिसकी हद नहीं
जेलख़ाना उनको गोया ख़सुर का घर हो गया

× × ×

अल्ला रे मिरे नाम ए मख़्फ़ी की तबाही
अब ग़ैर के हाथों में है सेंसर से निकलकर
दरअस्ल जो जो पूछो तो अब असरारे तरक़्क़ी[5]
खद्दर में हैं नकटाई ओ' कालर से निकलकर
अन्दर ही से तुम मुझको सुनाओगे हज़ारों
या आओगे बाहर भी ज़रा घर से निकलकर
होती हैं सरासर ग़लत और झूठ जो ख़बरें
आती हैं वो रियूटर[6] ही के दफ़्तर से निकलकर

× × ×

न देखूँ मैं तुम्हें मुझसे तो ऐसा हो नहीं सकता
जिसे आँखें ख़ुदा ने दी हैं अंधा हो नहीं सकता
ख़याले कौंसिल भी शैख़ को है पासे मस्जिद[7] भी
ये बेचारा दो अमली में कहीं का हो नहीं सकता

---

१. सेवा का प्रेम; २. क़ौम को बेचना; ३. धर्मराज का दरबार; ४. अनुपम; ५. उन्नति का रहस्य; ६. एक समाचार-ऐजेन्सी का नाम; ७. मस्जिद का ख़याल ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हमें इन मदरसों से जो मिलेगा हम समझते हैं
मगर ये है तुम्हें कुलियों का टोटा हो नहीं सकता
अभी से क्या ज़रूरत पड़ गई राउण्ड टेबुल की
अभी तो फ़ैसला मेरा तुम्हारा हो नहीं सकता

× × ×

पालिसी की मुल्क में भर-मार रहने दीजिए
बादशाहत कीजिए ब्योपार रहने दीजिए
हेड कर दीजे अदू को शहर में लेकिन मुझे
गाओं का अपने ही चौकीदार रहने दीजिए
शैख़ साहिब आप पर खिलता नहीं पतलून कोट
बस वही अंगा वही शलवार रहने दीजिए
मुझको अपना सुस्त रौ छकड़ा ही काफ़ी है हुज़ूर
आप अपनी तेज़ मोटरकार रहने दीजिए
दौड़ता आयेगा अहमक़ आपका ख़त देखकर
उसको कारड भेज दीजे तार रहने दीजिए

× × ×

कौंसिल मे शैख़ जी पहुँचे जो अठलाते हुए
खौफ़ से शैतान भागे ठोकरें खाते हुए
बावजूद इस इत्तिक़ाए ख़ास[1] के भी शैख़ जी
बारहा पकड़े गये हैं उसके घर जाते हुए
क्या सुदेशी तार पैड़ो में नहीं इतना भी ज़ोर
डूब जायें मान्‌चिस्टर के जहाज आते हुए
ख़ब्ते कौंसिल[2] ने दिवाला ही दिया उनका निकाल
नज्र आख़िर सेठ जी के सब वही खाते हुए
रेलगाड़ी में लिखी है हमने अहमक़ ये ग़ज़ल
फ़तहगढ़ से आगरा की जेल को जाते हुए

× × ×

१. विशेष सयम; २. कौंसिल का उन्माद।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिलए क़ौम फ़रोशी[१] की तमन्ना ही रही
मरमिटा शैख़ ख़ुशामद में मगर खाँ न हुआ
वफ़ा का इम्तिहाँ गो सख़्त था लेकिन मियाँ कल्लू
ख़ुदा का शुक्र है कालिज में सबसे फ़र्स्ट आये हैं
ख़ुदा तौफ़ीक़ दे इस्लाह की इन माडरेटों को
यही हज़रात सारे मुल्क में हुल्लड़ मचाये हैं
रहा करता है शैरो शाइरी का रात-दिन चर्चा
मज़े में हैं हम अहमक़ आगरे में जब से आये हैं

× × ×

चला है ओ दिले कौंसिल तलब क्या शादमाँ होकर
ज़मीने कूए आनर[२] रंज देगी आस्माँ होकर
कोई न मेह्रबाँ होकर भी इतना कर नहीं सकता
किया है आप ने जो वन्दापरवर मेह्रबाँ होकर
कबड्डी और अखाड़े की बदौलत जेलख़ाने से
असीराने वतन[३] निकलेंगे इक दिन पहलवाँ होकर
बसंती रंग में डूबा हुआ हर शेर अहमक़ का
हँसा देता है रोतों को भी किश्ते ज़ाफ़राँ[४] होकर

× × ×

कश्ती ए दिल की बह्र आनर[५] में
लाट साहब ने ना ख़ुदाई[६] की
जूते खायेंगे सूरते नमरूद[७]
है जिन्हें आज़ू ख़ुदाई की
वो जनाज़े पे मेरे कहते हैं
अब कहो किसने बेवफ़ाई की

---

१. क़ौम को बेचने का बदला; २. आनर (सम्मान) की गली की भूमि; ३. वतन के क़ैदी; ४. केसर की क्यारी; ५. आनर (सम्मान) के समुद्र में; ६. नाव खेने का काम; ७. नमरूद (जिसने ईश्वर होने का दावा किया था) की तरह ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिल किया हमने नज़्रे लायड जार्ज
कैसे खूसट से आशनाई की
मुँड गया जाकर उसके कूचे में
क्या हजामत हुई है नाई की
सच तो ये है कि शैख़ जी तुमने
नाक काटी है पारसाई की
जेल के बाद फिर कहाँ अहमक़
सुहबतें जोज़ेफ़ो डिसाई की

× × ×

आँखों ने रो के नाम ही बिलकुल डुबो दिया
गंगा का घागरा का अटक का चनाब का
शैख़ इश्तिहार बाँटते फिरते हैं शह्र में
नीलाम होने वाला है ठेका शराब का

× × ×

मतलब ये है कि मैं तो जलूं वो हों सुर्ख़रू
सिग्रेट मुझे है और रक़ीबों को पान है
उस चश्मे मस्त[1] पर भी पिकेटिंग चाहिए
वो भी तो इक खुली हुई मय की दुकान है
एज़ाज़ भी ख़िताब भी बिस्कुट भी चाय भी
सच पूछिये तो ग़ैर बड़ा भागवान है

× × ×

साहब बहादुरों से बहुत भागता है दिल
अब उसको डेमफ़ूल का ख़ूगर बनायेंगे
है बज़्मे मय में हाजते अरबाबे ज़ुह्द[2] भी
हम इस क्लब का शैख़ को मिम्बर बनायेंगे

---

१. मस्त आँख; २. संयमी लोगों की ज़रूरत

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अहमक़ है जेलख़ाना भी क्या लुत्फ़ की जगह
हम उसमें कांग्रेस का दफ़्तर बनायेंगे

× × ×

मैं और दिल तुमको दे दूँ ये कहा क्या
अदू की तर्ह हूँ मैं भी गधा क्या
सब उनकी क़द्रदानी है वगरना
मिरा दिल क्या है दिल का मुद्दआ क्या
बड़े साहब ने पूछा है हमें आज
न पूछो अब हमारा पूछना क्या
हमारा दिल है हम चाहे जिसे द
मियाँ नासिह[1] तुम्हारे बाप का क्या
चले कालिज से पहुँचे कौंसिल में
हमारी इब्तिदा क्या इंतिहा क्या
मिरे ख़त के अजब माना तराशे
लिखा क्या था रक़ीबों ने पढ़ा क्या

× × ×

सुना है जाते हैं अब आगरा से फ़ैज़ाबाद
सुकूँ हमें कभी अहमक़ मियाँ नहीं मिलता

× × ×

शैख़ जी इसमें तहज्जुद[2] की करामत कुछ नहीं
पानियर[3] ने आपको मशहूरे आलम कर दिया
मुल्ज़िमे उल्फ़त अगर मैं था मुझको मारते
आपने राशन मिरा किस वास्ते कम कर दिया

× × ×

नज़अ[4] में भी है मुझे हुर्मते साहिब का ख़याल
अब भी कुछ मुँह से निकलता नहीं 'यस सर' के सिवा

---

१. उपदेशक; २. प्रातःकाल की नमाज़; ३. एक समाचार पत्र का नाम; ४. दम टूटते समय।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वो मिरे दिल से जो निकलें तो कहाँ जायें कि अब
दूसरा घर भी नहीं है उन्हें इस घर के सिवा
हुस्ने फ़ैशन के लिए सख़्त ज़रूरत है कि कुछ
हुस्ने सूरत[1] भी हो नकटाई ओ कालर के सिवा
ये मज़ीद उनकी इनायत है कि आशिक़ से वो अब
बुध को भी मिल लिया करते हैं सनीचर के सिवा
जिन दिमाग़ों में बसी है नई तहज़ीब की बू
इत्र क्या भायेगा अब उनको लवंडर के सिवा

× × ×

ख़याल उसके गेसू का दिन-रात है
हमें जेल में भी हवालात है
नहीं कोई बदख़्वाहे मुल्को वतन[2]
मगर जिनको हिर्से ख़िताबात[3] है

× × ×

सारे जहाँ का हाल ज़माने की दास्ताँ
ख़त क्या हुआ रक़ीब का अख़बार हो गया
योरप में पालिसी का ख़ज़ाना था जिस क़दर
नज़्रे इराक़ो फ़ारसो तातार हो गया

× × ×

शक्ले आनर नज़र नहीं आती
मेरी उम्मीद बर नहीं आती
क्या सबब है कि उसके कूचे से
मेरे दिल की ख़बर नहीं आती
क़दे मौज़ूं को जानता हूँ ज़रूर
शाइरी मुझको कर नहीं आती
सच तो ये है कि आपको सच बात
हज़रते पानियर नहीं आती

---

१. मुख की सुन्दरता; २. देश का बुरा चाहने वाला; ३. उपाधि का लालच।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हम उसे देखते हैं आठ पहर
जिसकी सूरत नज़र नहीं आती
पढ़ते हैं कालिजों में सारी उम्र
क़ाबिलियत मगर नहीं आती
शैख़ की तहँ वाज़ फ़रमा कर
मुझको जेब अपनी-भर नहीं आती
ठोकरें खाके भी मिरी तक़दीर
क्या है जो राह पर नहीं आती
ज़ख़्मे दिल की भी देखभाल तुझे
अभी ऐ चारागर नहीं आती
हिज्र[1] में थी जो बात ऐ अहमक़
वस्ल[2] में क्यों नज़र नहीं आती

× × ×

ये बताना है कि हिन्द आज़ाद होने को है अब
क़ैद में होना जनाबे बुलकलाम आज़ाद का
ख़त्म होने को हैं अहमक़ दोस्तों की सोहबतें
आगरे से कूच होने को है फ़ैज़ाबाद का

× × ×

क्यों जेल में न हर सू नारे लगें ख़ुशी के
दर्शन मिले हैं क़िस्मत से रामदास जी के
तालिब[3] हैं कौंसिल के ख़्वाहाँ हैं मिम्बरी के
हैं शैख़ जी में सारे औसाफ़[4] बन्दगी के
हम जी-हज़ूरियों को समझें बुरा तो क्योंकर
कुत्ते सही मगर हैं अंग्रेज की गली के
ईमाँ से हाथ धोया मज़हब पे लात मारी
ऐ काश हम न पड़ते फंदे में नौकरी के

---

१. वियोग; २. मिलन; ३. अभिलाषी; ४. गुण।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निकलेंगे जेल से हम अहमक़ सुराज लेकर
बैठे हुए वज़ीफ़े पढ़ते हैं शांती के

× × ×

ब्रिटिश की इनायत से जाते हैं बड़े घर हम
भूलेंगे न अब अहमक़ बाईस दिसम्बर हम

× × ×

ये हमें जेल का लिबास मिला
या सुराज आश्रम का पास मिला

× × ×

ये समझकर भी बग़ैर उस बज़्म के सेरी नहीं
उनके हाँ कुत्ते की इज़्ज़त है मगर मेरी नहीं

× × ×

उन्होंने अहमक़े मख़्बूत[1] को देखा तो फ़रमाया
हमारे चाहने वालों की सूरत ऐसी होती है

× × ×

उठिये और कातिये सुतली अहमक़
जेलख़ाना है ये सुसराल नहीं

× × ×

फ़तहगढ़ के जेल में बोला था उल्लू एक दिन
आगरे भेजे गये थे हम लोग फ़ौरन जिसके बाद
है यहाँ भी आज उन्हीं हज़रत को नग्मा संजियाँ
देखिये हो किस तरफ़ का कूच अपना इसके बाद

× × ×

मिटाकर मुझे सख़्त पछताइयेगा
फिर ऐसा भी अहमक़ कहाँ पाइयेगा
ज़रा पास वादे का फ़रमाइयेगा
ज़रूर आइयेगा ज़रूर आइयेगा

१. पागल ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ये मंडी महब्बत की है हज़रते दिल
जहाँ जाइयेगा ठगे जाइयेगा
निकाला तो है पाँव बीवी ने घर से
मियाँ हाथ मलते न रह जाइयेगा
ज़ियादा नहीं छेड़ अहमक़ से अच्छी
उलझियेगा उससे तो पिट जाइयेगा

× × ×

मुल्क में रास्ते हैं दो अब जो तुझे पसंद हो
या सूए जेलख़ाना चल या सूए वैस्राय जा

× × ×

नौजवानों को मिराक़े कालरो टाई न था
क्या ज़माना था कि उनका दिल कलीसाई[1] न था
मूँडता ऐसा कि सर में एक भी रहता न बाल
ख़ैर गुज़री चाहने वाला तिरा नाई न था

× × ×

बहायें भाइयों का ख़ून तब हम बावफ़ा ठहरें
बहुत दुश्वार है उनके नमक का हक़ अदा होना
अदू की मौत का मुझको यक़ीं आ ही नहीं सकता
अभी बाक़ी है अहमक़ जबतक उसका फ़ातिहा[2] होना

× × ×

अगर हिन्दोस्ताँ से क़स्द फ़रमायें वो रुख़सत का
अभी हम उनको सीधा पास दिलवा दें विलायत का
मिसाने सीमतन[3] हों और होटल की बहारें हों
न गिर्वीदा[4] मैं हूरों का न ख़्वाहिशमंद जन्नत का

× × ×

जफ़ाए मुसलसल बना दे न क़ीमा
ज़रूरी है अब इश्क़ में जान बीमा

---

१. गिरजा अर्थात् ईसाई धर्म का प्रेमी; २. मृत्यु के उपरान्त होने वाला एक धार्मिक कृत्य; ३. रजतांगना; ४. मोहित।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुलाक़ात की सूरत उनसे कहाँ थी
बड़े काम की चीज़ निकला सिनेमा
अभी जम्अ है बैंक में कैश जब तक
ग़लत है कि हो इश्क़ का जोश धीमा

× × ×

वस्ल की शब क्या ही बरगश्ता मुक़द्दर[1] हो गया
जिस पे आने को थे वो मोटर ही पंचर हो गया
था जो पल्ले दो ही फेरों में बराबर हो गया
रेस का सर्किल मिरी क़िस्मत का चक्कर हो गया
शुक्र है कूए वफ़ा[2] की ठोकरें काम आ गईं
पाओं टूटे लेकिन आख़िरकार मैं 'सर' हो गया
आजकल इस फ़न में है सबसे ज़ियादा दस्तेग़ैब[3]
खुल गई क़िस्मत जहाँ इन्सान लीडर हो गया
मैंने ही अहमक़ गधा होने पे कर ली इक्तिफ़ा[4]
वरना आख़िर डार्विन भी था जो बंदर हो गया

× × ×

ब ईं मिल्लतफ़रोशी[5] भी बड़े साहब के दफ़्तर से
मियाँ कल्लू को ख़ुशनूदी का पर्वाना नहीं आता
हिकायत रोल्ट बिल की या कहानी मार्शल ला की
तुझे अहमक़ कोई दिलचस्प अफ़साना नहीं आता

× × ×

सितम के तौर न बनते थे तुझ से क्या ऐ चर्ख़
कि तू ने शेवए अंग्रेज़ इख़्तियार किया

× × ×

जेलख़ाने के चने जिसने कभी चाब लिये
फिर वो साहिब से मटन चाप का ख्वाहाँ न हुआ

× × ×

---

१. भाग्य; २. भक्ति की गली; ३. दैवी आय; ४. पर्याप्त होना; ५. क़ौम को बेचना।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मरते हैं हर साल फ़ाक़े से करोड़ों आदमी
हिन्द पर ब्रिटिश के एहसानात को देखो ज़रा
जिस तरह हम चाहते हैं यूँ नहीं मिलता सुराज
दूसरे मुल्कों के भी हालात को देखो ज़रा
किस क़दर आज़ादियाँ पब्लिक को हैं इस राज में
ग़ौर से दफ़आते ताज़ीरात[1] को देखो ज़रा
क्यों चले आये इधर ये लोग कालिज छोड़कर
रेल पर क़ुलियों की इस बुहतात को देखो ज़रा

× × ×

कोई क़ीमत ही नहीं इस दर्जा सस्ता कर दिया
मेरे दिल को जर्मनी का मार्क गोया कर दिया
नामाबर तुझ पर ख़ुदा की मार ये क्या कर दिया
मैंने ख़त किसके लिए भेजा किसे जाकर दिया
अपनी दानाई के बाइस तूने अहमक़ सच ये है
अपनी नादानी में भी इक रंग पैदा कर दिया

× × ×

दिखाता है तमाशा मूँडने में किस सफ़ाई का
मगर शागिर्द है वो बुत किसी हुशियार नाई का
सियादत[2] का भरम है अब न अहमक़ मीर्ज़ाई[3] का
अगर कुछ है तो बस के० सी० का है या एस० आई० का

× × ×

ख़फ़ा मुझसे हैं शह्र के एक मिम्बर
बस अब मेरी मोरी का चालान होगा
कहाँ जायेगा हिन्द से साम्राज अब
यहीं दफ़्न का उसके सामान होगा
सुनाओ न अपनी हज़ीमत[4] का क़िस्सा
कि बेचारा रियूटर[5] परेशान होगा

---

१. दंड-विधान की धाराएँ; २. सैयद होना; ३. मिर्ज़ा होना; ४. पराजय; ५. एक समाचार-ऐजेन्सी का नाम।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करेगा यक़ीन उनके वादे का अहमक़
तुझी सा अगर कोई नादान होगा

× × ×

मेरी नीअत भी है तौबा की जनावे ज़ाहिद
सिर्फ़ ये है कि महीना है अभी भादों का
देखिये एक सदी बाद कहाँ हो दुनिया
अह्‌दे साइंस है और ज़ोर है ईजादों का

× × ×

कोई हुआ के० सी० एस० आई० कोई सूए अंडमन सिधारा
किसी को लुत्फ़ो करम से लूटा किसी को जौरो सितम से मारा

× × ×

साफ़ कह दो गर नहीं मिलना ये टरख़ाते हो क्यों
आजकल ही होते-होते इक महीना हो चुका
इक तरफ़ क़ह्‌तो फ़लाकत[1] इक तरफ़ टैक्सो पुलिस
है अगर जीना यही भाई तो जीना हो चुका

× × ×

उसको भी कभी अंजुमने मय[2] में बुलाओ
सब होते हैं वाइज़ ही बिचारा नहीं होता
तनख्वाह भी सौग़ात भी डाली भी डिनर भी
साहब का मगर फिर भी गुज़ारा नहीं होता

× × ×

कारनेवल ने न छोड़ा एक पैसा जेब में
आज नाग़ा हज़रते अहमक़ सिनेमा हो गया

× × ×

लग्व[3] है क़ुर्क़ी ओ वारंट का शकवा करना
क़र्ज़ लेना तो महाजन का गिला क्या करना

---

१. अकाल और दुर्दशा. २. शराब की मजलिस; ३. बेकार ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपने दावे यूं ही मनवाते हैं कुव्वत वाले
है ग़लत जर्मनी ओ रूस पे गुस्सा करना
आप अपनी भी तो कहिये जो मिले अहमक़ से
उस बिचारे की हिमाक़त का गिला क्या करना

× × ×

जो ख़ानसामाँ के नाज़ उटाये तो अर्दली का इताब देखा
न पूछ ऐ शौक़े जी-हुज़ूरी कि हमने क्या-क्या अज़ाब देखा
अजीब कालिज है इश्क़ का भी न डिप्लोमा जिसमें है न डिग्री
हमेशा नाकाम उसको पाया जिसे यहाँ कामियाब देखा
कोई है गूंगा कोई है बहरा कोई है लंगड़ा कोई है लूला
जिसे भी देखा तिरा फ़िदाई तिरी तरह लाजवाब देखा

× × ×

कोई है रायसाहिब कोई है खां बहादुर
मिल्लत फ़रोशियो[1] ने बख्शे ख़िताब क्या-क्या
ज़ाहिद भी मौलवी भी सूफ़ी भी मुज्तहिद[2] भी
बज़्मे फ़िरंग में हैं मस्ते शराब क्या-क्या

× × ×

दोज़ख ऐ ज़ाहिदे मग़रूर है फिर किसके लिए
वाक़ई तू भी अगर दाख़िले जन्नत होगा
आप अहमक़ से तकल्लुफ़ न बरतिये मिरी जाँ
वरना वो भी कभी मजबूरे हिमाक़त होगा

× × ×

सारे जहाँ की क़ीमत हिन्दोस्ताँ हमारा
ये है अगर हमारा सारा जहाँ हमारा

× × ×

---

१. क़ौम को बेचने का काम; २. धार्मिक विषयों में विवेकपूर्ण निर्णय करने वाला।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पैदा करेगा लैला ओ मजनू कहाँ तलक
कालिज ख़ुदा के वास्ते बस अब बदल निसाब[1]
जाइज़ है माले मुफ़्त तुझे शेख़ जिस तरह
रिन्दों को भी मुफ़्त की जाइज़ यूँ ही शराब
किस तरह बोले न लंदन की सदा पर राइटर
इक यक़ीनी अम्र है सीटी पर तीतर का जवाब

× × ×

ख़ुश नवायाने[2] चमन की ज़िंदगी आफ़त में है
एक सौ चौबीस लग जाये कहीं सय्याद पर
कितने सादा लौह हैं अहमक़ असीराने क़फ़स[3]
मुतमइन हैं एक झूठे वादए सय्याद पर

× × ×

यूँ ख़ुश हैं सबको अपना तलबगार देखकर
जैसे तबीब शह्र को बीमार देखकर
ग़ाफ़िल हुआ मैं और तराशी उन्होंने जेब
ख़ामोश हैं अभी मुझे हुशियार देखकर
बीमारे ग़म की मौत का था सख़्त इंतिज़ार
दौड़े वो डाकिये की तरफ़ तार देखकर

× × ×

तकरार वादे पर क्या इक लफ़्ज़ में है फ़ैसला
इन्कार करना है तो 'नो' इक़रार करना है तो 'यस'
अहमक़ मुबारक हो तुझे आज़ादी-ए हिन्दोस्ताँ
बस अब दिनों की बात है कैसे महीने क्या बरस

× × ×

बता सकेंगे ये कुछ ठीक-ठीक मिस्टर बोस
कि जर्मनी से है हिन्दोस्तान कितने कोस
अगर है इश्क़ का दावा तो दिल का रोना क्या
फ़ज़ूल रंज न कर सर न पीट जी न मसोस

---

१. पाठ्यक्रम; २. बाग़ के मधुर कंठ वालों की; ३. क़ैदी ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अगर है क़ौम को फ़ाक़ा तो हमको क्या ग़म है
यहाँ तो है वही अंडा वही बटर वही तोस

× × ×

फ़िर्क़ावाराना फ़िसादात न खेंचें कभी तूल
शह अगर उनको न दे ख़ुफ़िया तरीक़ों से पुलिस
किस क़दर तेरी अदालत में है अंधेर ऐ इश्क़
सौ में निनानवें दावों का नतीजा डिसमिस
देखूँ ले जाये कहाँ अबके मुक़द्दर अहमक़
सुन रहा हूँ कि मिरी ताक में है ख़ुफ़िया पुलिस

× × ×

कफ़्श दोज़ी[1] कर किसी हुशियार कारीगर के पास
क्या करेगा आजकल नादान बी० ए० करके पास
या ख़ुदा यूँ ही महल्ले में रहे चोरों का ज़ोर
बिस्तर उनका रोज़ बिछता है मिरे बिस्तर के पास
उनसे अच्छे हैं जो अंग्रेज़ों से करते हैं अपील
वो जो ले जाते हैं अपनी इल्तिजा पत्थर के पास
एक [अहमक़ है बिचारा क्यों है महरूमे करम[2]
जबकि उठते बैठते हैं आप दुनिया भर के पास

× × ×

आज अपने घर में दिलवाईं सज़ाएँ ख़ास-ख़ास
उसने गिनवाकर मुझे मेरी ख़ताएँ ख़ास-ख़ास
क्या तअज्जुब है जो है सरकार उन पर मेह्रबान
हज़रते ज़ाहिद को आती हैं दुआएँ ख़ास-ख़ास
अपने बच्चों को पिलाती हैं जो आज़ादी का दूध
सब नहीं होतीं हुआ करती हैं माएँ ख़ास-ख़ास
किस क़दर बद इंतिज़ामी है तुम्हारी बज़्म में
आम एलान और ये बंदिश कि आयें ख़ास-ख़ास

१. जूते बनाने का काम; २. कृपा से वंचित।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इक बड़ी बी पर है जब से शैख़ साहिब की नज़र
ज़ेरे इस्तेमाल रहती हैं दवाएँ ख़ास-ख़ास

× × ×

शामत ग्राती है जब इन्सान की तो ऐ क़िब्लए मन[1]
बकने लगता है तुम्हारी ही तरह ऊट पटाँग
लो नज़र ग्राने लगी मंज़िले ग्राज़ादिए हिन्द
मरहले[2] बन गये तक़दीर से मील ग्रौर फ़रलाँग
यही दम ख़म हैं ग्रगर तेरे तो इम्पिरियलिज़्म
ग्रदम ग्राबाद[3] की मंज़िल है तिरी एक छलाँग
ज़ोरे तक़दीर बहुत ख़ूब मगर बंदा नवाज़
है नतीजे में तो मुर्ग़े की वही एक ही टाँग

× × ×

हुस्न है योरप का बुल डाग
इस कुत्ते से दूर ही भाग
दुनिया ख़ूब कमायेगा
त्यागी बन ग्रौर सब कुछ त्याग
फूल न उनके वादों पर
ये तो हैं साबुन के झाग
ग्रहमक़ चल के इलेक्शन लड़
छोड़ भी ग्राज़ादी का राग

× × ×

ग्रागरे से ग्राये फ़ौरन लखनऊ भेजे गये
रह सके ग्रहमक़ न इक हफ़्ते भी फ़ैज़ाबाद हम

× × ×

जवानी गई ग्रौर ग्राया बुढ़ापा
कभी मुश्क थे ग्रब तो काफ़ूर हैं हम

---

१. श्रीमान; २. लम्बी यात्रा ; ३. यम लोक ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिमाक़त की भी क़द्र होती है अहमक़
हमें देखिये कितने मशहूर हैं हम

× × ×

उन्हें देके दिल खोयें क्यों जान हम
नहीं अहमक़ इतने भी नादान हम
ग़लत राह हमको दिखायेगा जो
उसी को समझ लेंगे शैतान हम
बुतों की भी सेवा का पाया न फल
कि समझे गये वाँ मुसलमान हम
तलाशी का हर वक़्त रहता है डर
न रखेंगे अहमक़ का दीवान हम

× × ×

कौन है जिसको है अब क़ौमे तबह हाल से काम
शैख़ को पेट से सूफ़ी को है क़व्वाल से काम
तालिबे इल्म को सेहत का रहे सख़्त खयाल
उसको रीडर से न हो बल्कि हो फ़ुटबाल से काम
संखिया मुझको भी इक दिन ये खिलायेगा ज़रूर
रह गया है मिरे लीडर को जो हड़ताल से काम
हज़रते दिल से सुनो हुस्न की सरकार की पोल
कर रहे हैं ये इस आफ़िस में कई साल से काम

× × ×

जब से चर्खे सरज़मीने हिन्द पर चक्कर में हैं
लैंकशायर माँचेस्टर सबके सर चक्कर में हैं
महफ़िले रिन्दाँ[1] में आज इक बेअदब को छेड़कर
हज़रते ज़ाहिद न पूछो किस क़दर चक्कर में हैं

× × ×

---

१. मद्यपों की महफ़िल।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सबसे ज़ायद मुन्हमिक[1] देखा है दुनिया में उन्हें
बैठकर मिम्बर पे जो कहते हैं 'दुनियां कुछ नहीं'
क्या फ़क़त स्टेज ही के हैं जनाबे लिकचरार
कहते सब कुछ हैं मगर हज़रत से होता कुछ नहीं
कब तक आखिर ये ग़लत वादे ये झूठे आसरे
साफ़ जो कुछ हो वो कहिये दम दिलासा कुछ नहीं

× × ×

अल्लाह हुस्ने यार की ये पायमालियाँ[2]
घड़ियाँ मिसी की अब हैं न पानों की लालियाँ
इतनी भी बे असर न हो यारब किसी की आह
रोता हूँ मैं तो ग़ैर बजाते हैं तालियाँ

× × ×

जितने बे रोज़गार होते हैं
उनके उम्मीदवार होते हैं
ये भी पीना है कोई हज़रते शैख
रोज़ पैसे उधार होते हैं
काम कुछ अंजुमन का हो कि न हो
पोस्टर शानदार होते हैं
नहीं रखते जो ज़ौक़े शेर अहमक़
सच तो ये है गँवार होते हैं

× × ×

जनाब सेंसरे क़िबला की है अमलदारी
कि तार भी कहीं मिलते हैं अब महीनों में
जहाँ में दौर है खद्दर की जामा ज़ेबी का
न मलमलों में लताफ़त न मारकीनों में
वहाँ हर इक ने खुशामद किया शिआर[3] अपना
बस एक रह गया अहमक़ ही नुकताचीनों में

× × ×

१. तल्लीन; २. बर्बादी ; ३. आचरण ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्या क्या हुए रक़ीब से वादे पता नहीं
इतना सुना वो कह रहे थे 'सिनेमा नहीं'

× × ×

बीमारे ग़म कहाँ ये तिरा मिक्सचर कहाँ
अफ़सोस तेरी अक़्ल है ऐ डाक्टर कहाँ
कोठी दिमाग़े शैख़ की भी ठाठदार है
अक़्ले फ़िरंग का वो मगर फ़र्नीचर कहाँ

× × ×

ठोकरों में न उछालो इसको
दिल मिरा है कोई फ़ुटबाल नहीं
इक ज़रा आदमी हो दुनिया साज़
रोटियों का फिर उसे काल नहीं
आपके साथ चलूँ ग़ैर के घर
बख़्शिये मैं कोई दल्लाल नहीं
क्यों पकाता है ये खिचड़ी ऐ दिल
सह्ल गल जाय ये वो दाल नहीं
शैख़ को दे न सके यख़नी ओ बर्फ़
क़ौम इतनी भी तबह हाल नहीं
खौफ़ चक्की का यहाँ क्या अहमक़
जेल है ये कोई सुसराल नहीं
क़ियामत आने वाली है तो वाइज़
ठहर जा इक ज़रा देर और सो लें
जिन्हें है दानिशो हिकमत[1] का दावा
हिमाक़त है अगर अहमक़ से बोलें

× × ×

पुलिस है मुचलके हैं निगरानियाँ हैं
वफ़ाओं का बदला पशेमानियाँ हैं

---
१. ज्ञान और बुद्धिमत्ता।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुझे क़त्ल करके पशेमानियाँ हैं
ये पालीसियाँ हैं कि नादानियाँ हैं
कहीं से उलटिये वरक़ हिस्टिरी का
जो आज़ादियाँ हैं तो क़ुरबानियाँ हैं
ख़ुदा क़ौम को रहज़नों से बचाये
यहाँ रहबरों की फ़रावानियाँ[1] हैं
कहाँ देखिये जाके लगती है कश्ती
सियासत के दरिया में तुग़ियानियाँ हैं
जहाँ है ज़रा भी असर जान बुल का
परीशानियाँ ही परीशानियाँ हैं
चलो हो गया हज भी फ़ैशन के अंदर
जहाँ ऊँट थे अब वहाँ लारियाँ हैं
ख़ुलूसे महब्बत कहाँ अब कि अहमक़
ज़माने में मतलब है और यारियाँ हैं

× × ×

इसीलिए मेरे सर पर ये दस्ते शफ़क़त[2] था
हुज़ूर तो मिरा भेजा ही खाये जाते हैं
तू अपनी भूक का शाकी फ़ुज़ूल है ऐ हिन्द
मरीज़ को यूँ यी फ़ाक़े कराये जाते हैं
ये वोट भी बख़ुदा इक अजीब दाना है
असील मुर्ग़ इसी पर लड़ाये जाते हैं
मरीज़ है कि ख़मीर उठ गया बिचारे का
तबीब हैं कि ख़मीरे चटाये जाते हैं
अभी बफ़ज़्ले ख़ुदा[3] थेटरो सिनेमा में
हयाते क़ौम[4] के आसार पाये जाते हैं

---

१. प्रचुरता; २. स्नेह; ३. ईश्वर की कृपा से; ४. राष्ट्र का जीवन।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कहीं हो शह्र में दावत यहाँ है शिर्कत फ़र्ज़
उमूरे ख़ैर[१] में हम बे बुलाये जाते हैं
अदब नवाज़िये अह्‌ले अदब[२] का क्या कहना
मुशाअरे में अब अहमक़ बुलाये जाते हैं

× × ×

दिल का गिला हम करते हैं देह्र का रोना रोते हैं
आपका कोई ज़िक्र नहीं आप ख़फ़ा क्यों होते हैं

× × ×

कोह कनी तक़दीर में थी लेकिन ख़ूबी क़िस्मत की
जूए शीर[३] तो ला न सके शह्र में पत्थर ढोते हैं
गाकर पढ़ना अच्छा है लेकिन जब आवाज़ भी हो
बाज अहमक़ तो सच ये है पढ़ते क्या हैं रोते हैं

× × ×

यूँ कहो मुझसे मुलाक़ात ही मन्ज़ूर नहीं
कम्पनी बाग़ तो वरना मिरी जाँ दूर नहीं
एक बंगला मुझे दरकार है और इक मिसे शोख़
ख़्वाहिशे ख़ुल्द[४] नहीं आर्ज़ूए हूर[५] नहीं
हसरतें सब हैं मिरे दिल को निकलने के लिए
अहमक़ इस बाग़ में खट्टा कोई अंगूर नहीं

× × ×

उनकी फ़रमाइश है ला दो सारियाँ
तक रही हैं मुँह मिरी नादारियाँ[६]
सुब्ह है और गर्ल्स कालिज की तरफ़
जा रही हैं मुस्कुराती लारियाँ
है ए आदत[७] का हसीनों का हुजूम
कितनी सेहत बख़्श हैं बीमारियाँ

१. अच्छे काम; २. साहित्यकारों का साहित्य-प्रेम; ३. दूध की नहर जो फ़र्हाद शीरीं के लिए निकालना चाहता था; ४. स्वर्ग की इच्छा; ५. स्वर्ग वधू की कामना; ६. निर्धनता; ७. रोगी को देखने और हाल पूछने का काम।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जब मिले ग़म में इज़ाफ़ा कर दिया
क्या यही हैं आपकी ग़मख्वारियाँ
जिस क़दर आसानियाँ होती गईं
और भी बढ़ती गईं दुशवारियाँ
ख़ैर हो यारब कि हुस्नो इश्क़ में
हो रही हैं सुल्ह की तैयारियाँ
बढ़ रहे हैं जितने बी० ए० मुल्क में
बढ़ रही हैं मुल्क की बेकारियाँ
कुदरते हक़ ले रही है इंतिक़ाम[1]
हो रही है चर्ख़[2] से बमबारियाँ
कट गये हत्ते से वो वादे को रात
रह गईं अहमक़ की सब अय्यारियाँ

× × ×

जनावे शैख़ से अच्छा हूँ गो चमार हूँ मैं
कि वो हैं दस्तनिगर[3] और दस्तकार हूँ मैं

× × ×

उन्हीं की वफ़ाएँ उन्हीं की जफ़ाएँ
वो जिस तर्ह आशिक़ को चाहें नचाएँ
ख़ुदा रहम फ़रमाए बीमारे ग़म पर
कि जितने मुआलिज[4] हैं उतनी ही राएँ
मुझे तो तबीबों की कसरत ने मारा
मरज़ एक है और हज़ारों दवाएँ
इलेक्शन उसी का है जो अह्ले ज़र[5] है
कि सोने के काँटे में तुलती हैं राएँ
जिसे देखिये हम से बढ़कर है अहमक़
यहाँ हम किसे अपने से कम बताएँ

× × ×

१. प्रतिशोध; २. आकाश; ३. दूसरों पर आश्रित; ४. चिकित्सक; ५. धनी ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिविल सर्विस में उलझाया गया हूँ
खिलौने दे के बहलाया गया हूँ
मुझे जन्नत के रास्तों की ख़बर क्या
सिनेमा की तरफ़ आया गया हूँ
कहाँ साहिब का बंगला और कहाँ ख़ुल्द[1]
ज़बरदस्ती इधर लाया गया हूँ
वो पिक्चर हूँ जो पर्दे पर फ़ना के
सरे अस्टेज दिखलाया गया हूँ
मैं ख़ुद अपने लिए हूँ इक मुअम्मा[2]
न समझा हूँ न समझाया गया हूँ

× × ×

किया करते थे पहले नाख़ुदाई कश्तीए दिल की
सुना है घाघरा में अब वो स्टीमर चलाते हैं
ग़ज़ब है मग़्रिबी चूज़े क़ियामत है उड़ान उनकी
ये मुर्ग़ी के जिसे देखो उसे उल्लू बनाते हैं

× × ×

बस एक राग हमेशा अलापता हूँ मैं
गिरामोफ़ोन का गोया कोई तवा हूँ मैं
हवा वो सर में भरी है कि तन रहा हूँ मैं
बिसात[3] ये है कि पानी का बुलबुला हूँ मैं
ज़माना क्यों मिरे खाने को मुँह है फैलाए
न शीर माल हूँ यारब न क़ोरमा हूँ मैं
बजा कि मुझमें न फ़ज़्लो हुनर न अक़्लोतमीज़
सब आप ही की इनायत है वरना क्या हूँ मैं
हक़ीक़तन है ये अहमक़ की इक बड़ी इंसल्ट
कि आज उसको ख़िरद मंद कह रहा हूँ मैं

× × ×

१. स्वर्ग; २. पहेली; ३. सामार्थ्य ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अल्लाह अल्लाह हुस्न की सप्लाइयाँ
इश्क़ भी लेने लगा उबकाइयाँ
गर्मियाँ हैं इल्तिफ़ाते यार की
छन रही हैं वस्ल की ठंडाइयाँ
हैं जहाँ ग़ैरों के हिस्से में रुपये
मेरी क़िस्मत की वहाँ हैं पाइयाँ
पिट गये अहमक़ वहाँ अच्छा हुआ
थे भी ये हज़रत बड़े ही काइयाँ

× × ×

वो दिन भी याद हैं जब रातभर दुश्मन की महफ़िल में
पिया करते थे तुम हुक़्क़ा भरा करते थे हम चिलमें
हनोज़ उम्मीदवारी का नतीजा कुछ नहीं निकला
मिरी दरख़्वास्त नत्थी होके रह जाती है फ़ाइल में

× × ×

क्या गुज़रती है न पूछो भाई
यूँ समझ लो कि गुज़र करते हैं

× × ×

जो है चटखा रहा है जूतियाँ सर्विस के चक्कर में
जहाँ बी. ए. हुए और लिख गई गर्दिश मुक़द्दर में
वफ़ा के सिर्फ़ ये माने लिये जाते हैं दफ़्तर में
कि नज़्रे दावते हुक्काम[1] हो जाय जो हो घर में
दग़ाबाज़ी भी ग़द्दारी भी जासूसी भी फ़ितरत भी
ख़ुदा के फ़ज़्ल से सब ख़ूबियाँ हैं मेरे लीडर में
तअज्जुब क्यों न हो अहमक़ को अपने क़ैद होने पर
कि छोटे आदमी पूछे नहीं जाते बड़े घर में

× × ×

है ज़मीं पर टैंकों का नाच कितना दिलफ़रेब
आस्माँ पर बम के गोलों का धुआँ है रक्स[2] में

१. अधिकारियों की दावत में लग जाये; २. नृत्य ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देख ले जिसने न देखा हो कभी तिगनी का नाच
चौधरी साहिब का सारा ख़ांदाँ है रक़्स में

× × ×

छोड़ूँ किसी को भी न यहाँ टैक्स के बग़ैर
वल्लाह ख़ैरियत है कि मिम्बर नहीं हूँ मैं
कुरसी ही उनकी मेरे लिए अर्श हो गई
अब ये दिमाग़ है कि ज़मीं पर नहीं हूँ मैं

× × ×

हैरत है भिखमंगे हैं वतन में कई करोड़
और कौंसिल में उनकी नुमाइंदगी[1] नहीं
एहसास हो तो दर्द की कोई दवा करे
हमको तो अपने दर्द का एहसास ही नहीं

× × ×

डान्स को लग़्व[2] सिनेमा को बुरा कहते हैं
शैख़ हर बात ज़माने से जुदा कहते हैं
हज़रते शैख़ को सब कहते हैं अंग्रेज़-परस्त
हम मग़र हज़रते ईसा का गधा कहते हैं
अकसर उनमें से हैं बटमार गिरहकट अहमक़
हम जिन्हें राहबरो राहनुमा कहते हैं

× × ×

मिल गई लीडरी क़ौम की ख़िदमत मुझको
हो गई पेट के धंधों से फ़रागत मुझको
इस ज़माने में हिमाक़त है यक़ीनन अहमक़
है किसी से अगर उम्मीदे शराफ़त मुझको

× × ×

मिम्बरी क्या मिल गई मिस्टर अली सज्जाद को
वस्ले शीरीं था कि हासिल हो गया फ़रहाद को

---

१. प्रतिनिधित्व; २. बेकार।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ख़ाँ बहादुर ने जो दम तोड़ा तो बोली हँस के मौत
क़ब्र में अब लाट साहिब आयेंगे इमदाद को
शेख़ को सी० आई० ई० होने की होगी क्या ख़ुशी
तुझ से अहमक़ भी न पहुँचे गर मुबारकबाद को

× × ×

मरते ही छूट गये हम टैक्सो पुलिस के ग़म से
सच तो ये है कि मुसीबत में हैं जीने वाले
था जो कुछ पास वो नज्रे मएओ मुतरिब[1] करके
गालियाँ खाते हैं बैठे हुए पीने वाले
दिल मेरे पास था अहमक़ वो अंगूठी के लिए
ले गये एक मिरे दोस्त नगीने[2] वाले

× × ×

मख़्सूस हुकूमत की वफ़ा मेरे लिए है
ये भंग वो है जिसका नशा मेरे लिए है
शिमले की बलंदी से उतरता है जो फ़रमान[3]
अह्कामे ख़ुदा से भी सिवा मेरे लिए है
अहमक़ उन्हें लंच और ब्रेकफ़ास्ट मुबारक
फ़ाक़ों की मुसीबत का मज़ा मेरे लिए है

× × ×

अल्लाह री अपनी बेहिसी मुहताजे कफ़न भी ग़ैर के हैं
कपड़ा है तो वो अमरीकन है डोरा है तो वो जापानी है

× × ×

पुराने माल का बाज़ार में गाहक नहीं कोई
जो क़ीमत चाहता है तो बदल कुआलटी अपनी
ये हो सकता है सारी क़ौम को हम ख़त्म कर डालें
मगर मुम्किन नहीं ख़तरे में डालें लीडरी अपनी

× × ×

---

१. शराब और गवैये को भेंट करके; २. एक स्थान का नाम; ३. आदेश;

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उठा हूँ मौक़मुल्क की ख़िदमत के वास्ते
दिल में ख़याले बंगला ओ मोटर लिये हुए
तिनके का बोझ भी है मिरे सर पे नागवार
उनको जो अपने सर पे हैं छप्पर लिये हुए
अहमक़ रहेगी याद बहुत बम्बई की सैर
फिरती हैं रात दिन हमें मोटर लिये हुए

× × ×

कोई आया और फौरन ही हजामत हो गई
आपका घर भी किसी हज्जाम का सैलून है
कर दिया साइंस ने बादे सबा[1] से बेनियाज़
हर जगह अब तार है हर घर में टेलीफ़ून है
इज़्ज़त अफ़ज़ाई की रहमत है अबस[2] मेरे लिए
बंदापरवर ये लंगोटी ही मुझे पतलून है
इक मुझी को अपनी अस्लियत का है याँ एतिराफ़[3]
वरना अहमक़ हर गधा दुनिया में अफ़लातून है

× × ×

हुज़ूरे क़ल्ब[4] कुछ साहिब के बंगले ही में होता है
ये मस्जिद है यहाँ क्यों शैख़ जी आने लगे दिल से

× × ×

किस क़दर हम पर नई तहज़ीब का एहसान है
मुल्क में चारों तरफ़ रूमान ही रूमान है
आजकल है क़ाबिलियत की कसौटी नाचघर
जितना अच्छा डान्स है उतना ही ख़ूब इन्सान है
कल जिन्हें हिज्जे न आते थे हमारे सामने
आज वो हमको पढ़ाते हैं ख़ुदा की शान है
शैख़ साहिब आप अपने फ़ायदे को देखिये
क्या हुआ गर उसमें सारी क़ौम का नुकसान है

× × ×

---

१. प्रातःकाल चलने वाली समीर; २. बेकार; ३. स्वीकृति; ४. तन्मयता।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ख़ूने दिल हमको तो विस्की उन्हें पीने के लिए
कोई मरने के लिए है कोई जीने के लिए
हो गया शैख़ पे फ़ैज़ाने तमद्दुन[1] का नुज़ूल[2]
आज पतलून दिया जाता है सीने के लिए

× × ×

दिले पुर दाग़ में उम्मीद भी है यास भी है
बाग़ में आम भी है और अमलतास भी है
आरिज़े सब्ज़ो लबे सुर्ख़[3] का है इश्क़ मुझे
याँ चुकंदर भी है क़िस्मत में अनन्नास भी है
शेर बेमिस्ल ग़ज़ल ख़ूब क़वाफ़ी[4] दिलचस्प
कुछ हो अहमक़ मगर उसमें तिरी बकवास भी है

× × ×

ज़ीनतें[5] मुम्किन हैं जितनी हुस्ने उर्यां[6] के लिए
आजकल मख़सूस हैं टेनिस के मैदाँ के लिए
सारी दुनिया जंग के मैदान में है और हम
हैं रिज़र्व इक नाचघर में रक़्से उर्यां[7] के लिए
दीन था उसको भी दुनिया पर तसद्दुक़[8] कर दिया
अब रहा है क्या ज़माने में मुसलमाँ के लिए
नौजवानों से है कालिज के हमें काफ़ी उम्मीद
एक भी खूबी न छोड़ेंगे ये निस्वाँ[9] के लिए

× × ×

आपस में लड़ाना भी इक अक़्ल का जौहर है
इस काम में लोगों को तन्ख़्वाह मुक़र्रर है
हर रोज़ नये वादे हर वक्त नये झाँसे
इतवार को मंगल है मंगल को सनीचर है

---

१. सभ्यता का कृपा २. गिरना; ३. हरे गाल और लाल होंठ; ४. अंत्यानुप्रास; ५. शोभा; ६ नग्न सौन्दर्य; ७. नंगी स्त्रियों का नाच; ८. न्यौछावर; ९. स्त्री-वर्ग।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहने को मिरे होटल पीने को मिरे विस्की
अब मेरी निगाहों में जन्नत है न कौसर[1] है
ग़द्दारीए मिल्लत[2] का इलज़ाम सही मुझ पर
बंगले में तो पुरसिश[3] है कुरसी तो मुयस्सर है
हक़ क्या है तुम्हें यारो अहमक़ पे जो हँसते हो
तुम जैसे गधों से तो वो फिर कहीं बेहतर है

× × ×

सज़ा ग़ैब ने मय[4] से नफ़रत की दी है
कि वाइज़ है दरोग़ए आबकारी
वो दिल ले गये मुझको अहमक़ बनाकर
धरी रह गई सब मिरी होशियारी

× × ×

खुश्क रोटी में मुझे आजायेगा बिस्कुट का लुत्फ़
आप चटनी क्यों बनाते हैं ये खाली जायेगी
शेख़ साहिब मुझको तो कुछ मय से दिलचस्पी नहीं
आप कहते हैं तो थोड़ी-सी मंगा ली जायेगी

× × ×

अम्नो इत्मीनान अच्छी चीज़ है या तोपो गैस
हज़रते चर्चिल हैं कुछ वाक़िफ़ उन्हीं से पूछिये

× × ×

वहाँ एम० ए० की पुर्सिश है न कुछ बी० ए० की हाजत है
लड़ा सकता जो हो आपस में बस उसकी ज़रूरत है

× × ×

बहुत न पीट हरीफ़ों[5] के ढोल ऐ साक़ी
कि खुल चुकी है यहाँ सबकी पोल ऐ साक़ी
निकाल जल्द न कर मोल तोल ऐ साक़ी
हुआ ही चाहता है कंट्रोल ऐ साक़ी

---

१. स्वर्ग का एक कुण्ड; २. क़ौम को धोखा देना; ३. पूछ; ४. मदिरा; ५. शत्रु;

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शरीफ़ लोग भी होते हैं पीने वालों में
हर एक से नहीं अच्छा ठठोल ऐ साक़ी
ख़ुदा ही जाने कल अंजामे मयकदा[1] क्या हो
बस इस मुआमले में कछ न बोल ऐ साक़ी

× × ×

मुझे ख़रीदना है अपने रहनुमा के लिए
ख़लूस गर कहीं बिकता हो मोल ऐ साक़ी
मिनट मिनट पे दिगर गूँ[2] है रंग दुनिया का
ये तेरे बाद के वादे हैं भोल ऐ साक़ी
बुझा दे प्यास मिरी ये मज़ाक रहने दे
मुझे पसंद नहीं नाप तोल ऐ साक़ी
न दे शराब तो अहमक़ को दे जवाब ही साफ़
पे बातें उससे न कर गोल मोल ऐ साक़ी

× × ×

ताब इम्काँ[3] कोशिशे तहज़ीबे निस्वाँ[4] कीजिए
ख़ुद भी उरियाँ[5] हूजिए उनको भी उरियाँ कीजिए
हम रहे[6] सी० आई० डी० कारे नुमायाँ[7] कीजिए
कुछ तो मुल्को क़ौम की गरदन पे एहसाँ कीजिए
बज़्मे मय[8] में हज़रते वाइज़ को महमाँ कीजिए
जानवर को आदमी हैवाँ को इन्साँ कीजिए
हो चुकी नीलाम अहमक़ इश्क़ में सब ज़ायदाद
दिल है बेकार अब इसे भी नज़्रे ख़ूबाँ[9] कीजिए

× × ×

ग्रानी का असर अब इससे बढ़कर और क्या होगा
कि अक्सर पीने वाले पी रहे हैं भंग ऐ साक़ी

---

१. मदिरालय ; २. उथल-पुथल ; ३. यथा सम्भव ; ४. स्त्रियों को सभ्य बनाने की कोशिश ; ५. नंगा ; ६. साथ ; ७. उत्कृष्ट कार्य ; ८. शराब की मजलिस ; ९. सुन्दरियों को भेंट ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिरी फ़र्हंग में बस चंद ही अलफ़ाज़ बदले थे
मगर अब तो बदलने को है कुल फ़र्हंग[१] ऐ साक़ी
यही मौक़ा तो है करले सियासत कामियाब अपनी
कि अह्‌ले मय कदा में हो रही है जंग ऐ साक़ी
ख़ुदा नाख़्वास्ता[२] इस्टाक ख़ाली हो गया तेरा
तो आयेगी कहाँ से अब मये अफ़रंग[३] ऐ साक़ी
निहत्ता करने की इस्कीम है अक़वामे आलम को
ये गोया पड़ रही है फिर से तर्हे जंग[४] ऐ साक़ी
ग़ज़ल कैसी कहाँ की नज़्न क्या क़तआत अहमक़ के
कि फ़ाक़ों से अब उसका क़ाफ़िया है तंग ऐ साक़ी

× × ×

तमाम उम्र को ईमाँ फ़िरोशियों की क़सम
तमाम उम्र मैं रोया हूँ लीडरी के लिए
रिया[५] नहीं तो कहीं पुर्सिश आदमी की नहीं
ये चीज़ अब हैं ज़रूरी सोसायटी के लिए

× × ×

ज़मानत हिफ़्ज़े जाँ[६] की चाहता हूँ इस हुकूमत में
जहाँ तलवार का लैसंस भी क़ातिल से मिलता है
वहाँ कुरसी तो आसानी से मिल जाती है आशिक़ को
मगर रोटी को टुकड़ा ये बड़ी मुश्किल से मिलता है
हमारी बेहिसी ने गोर[७] में पहुँचा दिया आख़िर
कफ़न भी अब तो हमको माँचेस्टर मिल से मिलता है

× × ×

जिस अदा को देखिये बमबाज़ है
तार पैंडो है कि चश्मे नाज़[८] है

× × ×

---

१. शब्दकोश ; २. ईश्वर न चाहे ; ३. अंग्रेज़ी शराब ; ४. युद्ध की नींव; ५. छल ; ६. जान की रक्षा ; ७. क़ब्र ; ८. नाज़-भरी आँख ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शैख़ साहिब तर्केमय[1] और इस भरी बरसात में
जो सुनेगा ये कहेगा कितनी बोगस राय है
ना मुहज़्ज़ब जब तलक थी लोग कहते थे अफ़ीम
हो गई है जबसे अप-टू-डेट अब वो चाय है
अह्‌दे लिनलिथगो में हो जायेंगे आज़ाद अह्‌ले हिन्द
भाई अहमक़ कितना ख़ुश क़िस्मत ये वायसराय है

× × ×

कहाँ खपेगी ये कसरत ग्रेजुएटों की
मगर यही कि डकैती करें कि बटमारी
मुज़ाहरे ये नहीं लीडरों के ऐ अहमक़
दिखा रहे हैं सब अपना फ़ने अदाकारी[2]

× × ×

अगरचे शेर समझता नहीं मगर अहमक़
सुनाओ कुछ तो बहुत वाह वाह करता है

× × ×

दिमाग़ों में ज़ुलमत दिलों में अंधेरा
यही ग़ालिबन मग़्रिबी रौशनी है
तुम्हें क्यों है अहमक़ से इतनी अक़ीदत
अजी वो तो इक बेवक़ूफ़ आदमी है

× × ×

अच्छा मिला ख़ुलूसे वफ़ा का सिला मुझे
समझा वहाँ हर एक ने बहरूपिया मुझे
मेरी हिमाक़तों का है अहमक़ जहाँ में शोर
हिन्दोस्ताँ में कौन नहीं जानता मुझे

× × ×

हज़ार मुन्इमे मुसरिफ़[3] नज़र से गुज़रे हैं
मरे तो ख़ैर से चंदा हुआ कफ़न के लिए

---

१. शराब का छोड़ना; २. अभिनय-कला; ३. बहुत व्यय करने वाले धनी लोग।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वफ़ा जो की थी तो उसका सिला ले अहमक़
खुशी से बाँध बस अब बिस्तर अण्डमन के लिए

× × ×

मुख़्तसर ये है रहा वो उम्र भर पामाले जौर[1]
पूछते क्या हो सवानिह[2] अहमक़े नाशाद के

× × ×

मगर शाइर का दिल भी घोंसला होता है उल्लू का
यही रोते हैं सब इस घर की वीरानी नहीं जाती
तिरे डंडे में मनवाने की ताक़त भी तो हो अहमक़
ये किसने कह दिया है बात वाँ मानी नहीं जाती

× × ×

मुल्को मिल्लत[3] के लिए बेकार मरना सीखिये
बस सिनेमा जाइये और इश्क़ करना सीखिये

× × ×

ज़ुल्फों की महब्बत में अब हाल ये मेरा है
हर शख़्स समझता है ये शख़्स सपेरा है
अंधेर न कर इतना ऐ रौशनिये नेचर
अक़्लों में उजाला है सीनों में अंधेरा है

---

१. अत्याचार से पीड़ित ; २. जीवनी ; ३. देश और राष्ट्र ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मजीद लाहौरी

मजीद लाहौरी का खानदानी नाम अब्दुल मजीद चौहान और कलमी नाम नमक लाहौरी' था। आप १९१३ में पंजाब के विख्यात नगर गुजरात में पैदा हुए और २६ जून, १९५७ को कराची में आपका देहान्त हुआ। कराची से अर्द्धमासिक पत्रिका 'नमकदान' निकालते थे और दैनिक 'जंग' में हास्य और विनोद का कालम 'हर्फ़ो-हिकायत' लिखते थे। आपका केवल एक ही काव्य-संग्रह प्रकाशित हुआ है परन्तु गद्य और पद्य में बहुत-कुछ छपना अभी बाकी है।

मजीद लाहौरी की साधारण कविताएँ भी बड़ी लोकप्रिय हैं, परन्तु उन्होंने हास्य-रस की कविता और गद्य में बड़ा नाम पैदा किया है। वह हास्य और व्यंग्य को मिलाकर देश की वर्तमान घटनाओं और राजनीतिज्ञों के हानिकारक चलन पर भरपूर वार करके बड़ी आलोचना करते थे। देश-विभाजन के पश्चात् उन्होंने पाकिस्तान की नई परिस्थितियों और व्यक्तियों का खूब मज़ाक उड़ाया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिनिस्टर

मुर्ग़ियों पर भी मैं कर सकता हूँ इज़हारे ख़याल
और साँडों पर भी हूँ महफ़िल में सरगर्मे मक़ाल[1]
रेस के घोड़ों पे भी तकरीर कर सकता हूँ मैं
अकबरो इक़बाल की तफ़सीर[2] कर सकता हूँ मैं
'होमियोपैथिक' हो या दंदानसाज़ी का कमाल
बाग़बानी हो कि हो रूमी ओ राज़ी[3] का कमाल
बात फूलों की हो या क़ौमी तराने का बयाँ
चाट हो बारह मसाले की कि हो उर्दू ज़ुबाँ
बू अली सीना की हिकमत बात अफ़लातून की
एग्रीकल्चर हो या शिक़[4] हो कोई क़ानून की
दाग़ का दीवान हो या हो वो 'ऐटम|बम' का राज़
माहीगीरी हो कि रब्तोज़ब्ते महमूदो अयाज़[5]
मसअला तारीख़ का हो या कि मवहस[6] इल्म का
फ़ल्सफ़ा गुलकंद का हो या हो क़िस्सा फ़िल्म का
कुश्तए फ़ौलाद हो या शर्बते दीनार हो
है ज़रूरी सब पे मेरी राय का इज़्हार हो
मुद्दआ अन्क़ा[7] हैं अपने आलमे तकरीर का
शौक़ है दिल में मगर क़ुरआन की तफ़सीर[8] का
जितने भी शोबे[9] हैं उन सब पर हूँ मैं छाया हुआ
हूँ मिनिस्टर मुस्तनद[10] है मेरा फ़रमाया हुआ

× × ×

१. भाषण-रत ; २. व्याख्या; ३. ये दोनों बहुत प्रसिद्ध दार्शनिक थे ; ४. खण्ड ; ५. महमूद और अयाज़ की मित्रता (महमूद राजा था जिसे अपने दास 'अयाज़' से बहुत प्रेम था) ; ६. विषय ; ७. अस्तित्व-हीन ; ८. व्याख्या ; ९. शाखाएँ ; १०. प्रामाणिक ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुझको दाता दिला

मझको दाता दिला होगा तेरा भला
मुझको दाता दिला

'प्लाटों' के मालिक तिरी ख़ैर हो
ऐ 'अलाटों' के मालिक तिरी ख़ैर हो
कोई कोठी दिला कोई बंगला दिला
छापाख़ाना दिला कारख़ाना दिला
पम्प पिट्रोल का या सिनेमा दिला
बस नहीं कोई,तो बस का अड्डा दिला
क़ौम के नाम पर मुझको दाता दिला
होगा तेरा भला

बामे गर्दू[1] पे तेरा सितारा रहे
ज़िन्दगी मेरी क्यों बे सहारा रहे
मेरे कश्कोल[2] में लीडरी डाल दे
कर टिकट मरहमत[3] मिम्बरी डाल दे
कोई मिल या जिनिंग फ़ैक्टरी डाल दे
कोई होटल कोई कम्पनी डाल दे
क़ौम के नाम पर मुझको दाता दिला
होगा तेरा भला

आलमे रंगो बू[4] में तू फूले फले
नाम का तेरे दुनिया में सिक्का चले
या क़ियादत[5] दिला या सदारत दिला
या वज़ारत दिला या सिफ़ारत दिला
'गंज बख़्शा'[6] तू गंजे सआदत[7] दिला
अपने ख़ादिम को तू बहरे ख़िदमत दिला

---

१. आकाश के शीर्ष पर; २. भिक्षा पात्र; ३. प्रदान ४. संसार; ५. नेता का पद; ६. एक मुसलमान ऋषि की उपाधि जिसकी क़ब्र लाहौर में है; ७. सौभाग्य-कोष।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क़ौम के नाम पर मुझको दाता दिला
होगा तेरा भला
तुझको शाद और आबाद रखे ख़ुदा
ख़ूब चश्मा हो जारी तिरे फ़ैज़ का
कोई पर्मिट मिले कोई ठेका मिले
कोई इम्पोर्ट लाइसेंस अच्छा मिले
जाह की भीक ओह्‌दे का सदक़ा[1] मिले
कुछ तो मालेग़नीमत[2] में हिस्सा मिले
क़ौम के नाम पर मुझको दाता दिला
होगा तेरा भला

इलेक्शन का ज़माना

ऐ मिल्लते बैज़ा[3] तिरा ख़ादिम हूँ पुराना
अफ़सोस कि तूने मिरे रुतबे को न जाना
हर कोह[4] को नापा है हर इक दश्त[5] को छाना
अंग्रेज़ ने लोहा मिरी चतुराई का माना
फिर ख़ैर से आया है इलेक्शन का ज़माना
मैं ख़ान बहादुर हूँ मुझे भूल न जाना

ओह्‌दों का हमेशा हो तलबगार रहा हूँ
कुर्सी का बहरहाल परस्तार[6] रहा हूँ
सब जानते हैं हामीए[7] सरकार रहा हूँ
हाक़िम हो कोई उसका वफ़ादार रहा हूँ
फिर ख़ैर से आया है इलेक्शन का ज़माना
मैं ख़ान बहादुर हूँ मुझे भूल न जाना

---

१. दान, बारा हुआ ; २. लूटा हुआ माल ; ३. मुसलमान सम्प्रदाय ;
४. पहाड़ ; ५. वन ; ६. पुजारी ; ७. सरकार का समर्थक ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चंदा भी दिया जंग में भरती भी कराई
दादा ने मिरे मक्के पे गोली भी चलाई
और बाप ने अंग्रेज़ से जागीर भी पाई
हिम्मत ने मिरी जीती थी जर्मन की लड़ाई
फिर ख़ैर से आया है इलेक्शन का ज़माना
मैं ख़ान बहादुर हूँ मुझे भूल न जाना

जम्हूरियत

'अस्सी' मिलकर एक ज़ुबाँ से दिन को कह दें रात
'बीस' का है ये फ़र्ज़ कि जानें उसको सच्ची बात
ये दौरे जम्हूर है बाबा
ये दौरे जम्हूर
हम सब हैं मजबूर
'पचपन' की राय में ठहरे भैंस अगर 'मिस चीन'
तो 'चालीस पे पाँच' बजायें उसके आगे बीन
ये दौरे जम्हूर है बाबा
ये दौरे जम्हूर
हम सब हैं मजबूर
'साठ' अगर कह दें है तेरे सर पर कोल्हू तेली
बाक़ी के 'चालू' हैं बस है इनका अल्लाह बेली
ये दौरे जम्हूर है बाबा
ये दौरे जम्हूर
हम सब हैं मजबूर
'अड़सठ' मिलकर इक उल्लू को गर कह दें 'परधान'
'तीस पे दो' जो हैं वो समझें अपने को नादान
ये दौरे जम्हूर है बाबा
ये दौरे जम्हूर
हम सब हैं मजबूर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'नब्बे पर नौ' हँसते हैं और एक 'कबीरा' रोय
चिड़ियाँ चुग गईं खेत तो बाबा पछताए क्या होय
ये दौरे जम्हूर है बाबा
ये दौरे जम्हूर
हम सब हैं मजबूर

माडर्न आदमीनामा

(नज़ीर अकबराबादी की नज़्म 'आदमीनामा' की पैरोडी)

मूँछें बढ़ा रहा है सो है वो भी आदमी
डाढ़ी मुँडा रहा है सो है वो भी आदमी
मुर्ग़ जो खा रहा है सो है वो भी आदमी
दलिया पका रहा है सो है वो भी आदमी
टुकड़े चबा रहा है सो है वो भी आदमी
और लंच उड़ा रहा है सो है वो भी आदमी

वो भी है आदमी जिसे कोठी हुई अलाट
वो भी है आदमी कि मिला जिसको घर न घाट
वो भी है आदमी कि जो बैठा है बनके लाट
वो भी है आदमी जो उठाये है सर पे खा
मोटर में जा रहा है सो है वो भी आदमी
रिक्शा चला रहा है सो है वो भी आदमी

बैठे हैं आदमी ही दुकानें सजा सजा
और आदमी ही फिरते हैं ठेला लगा लगा
हर माल चार आना की देते हैं वो सदा
पोलीस उनका करती है चालान जा बजा
केबिन बना रहा है सो है वो भी आदमी
उसको गिरा रहा है सो है वो भी आदमी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रिश्वत के नोट जिसने लिये वो भी आदमी
दो रोज़ जिसने फ़ाक़े किये वो भी आदमी
जो आदमी का ख़ून पिये वो भी आदमी
जो पी के ग़म का ज़हर जिये वो भी आदमी
आँसू बहा रहा है सो है वो भी आदमी
और मुस्करा रहा है सो है वो भी आदमी

वो लालू खेतवी[1] हो कि हो गोली मारवी[2]
दफ़्तर का हो क्लर्क कि मस्जिद का मौलवी
वो हो फ़क़ीर ख़ान कि हो सेठ टियूब जी
वो भी है आदमी कि जो करता है लीडरी
जो बस में जा रहा है सो है वो भी आदमी
और बस चल रहा है सो है वो भी आदमी

ये झोंपड़े में क़ैद वो बंगले में शाद है
ये नामुरादे जीस्त[3] है वो बा मुराद है
हर काला चोर क़ाबिले सद एतिमाद[4] है
ये 'जिन्दाबाद' इधर वो उधर 'मुर्दाबाद' है
नारे लगा रहा है सो है वो भी आदमी
चन्दा जो खा रहा है सो है वो भी आदमी

लट्ठे के थान जिसने छुपाये सो आदमी
फिरता है चिथड़े से लगाये सो आदमी
बैठा हुआ है ग़ल्ला दबाये सो आदमी
राशन न कार्ड पर भी जो पाये सो आदमी
सदमे उठा रहा है सो है वो भी आदमी
धूमें मचा रहा है सो है वो भी आदमी

---

१. कराची के एक क्षेत्र लालू खेत का निवासी; २. कराची के एक क्षेत्र गोलीमार का निवासी; ३. जीवन में विफल; ४. जिसका बहुत विश्वास किया जा सके।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लीडरी

मिल और ज़मीन अलाट कराती है लीडरी
और कोठियों पे क़ब्ज़ा जमाती है लीडरी
लंच और डिनर मज़े से उड़ाती है लीडरी
ग़म साथ-साथ क़ौम का खाती है लीडरी
फ़ुरसत मिले तो टूर पर जाती है लीडरी

हम लोग 'ज़िन्दाबाद' के नारे लगाते हैं
वोटों की भीक लेने जब वो चलके आते हैं
दे दे के वोट हम उन्हें मिम्बर बनाते है
कुर्सी पे बैठकर वो हमें भूले जाते हैं
फिर दूर ही से जल्वा दिखाती है लीडरी

अपना 'जथा' बनाके वज़ारत बनाती है
जो कुछ भी उसको मिलता है वो बाँट खाती है
महरूम[1] जब रहे 'अपोज़ीशन' में आती है
तरकश में जितने तीर हैं सब आज़माती है
नाकाम होके शोर मचाती है लीडरी

दुनिया में लेके सेठ से ऐ यारो ता फ़क़ीर
है लीडरी की ज़ुल्फ़े गिरिहगीर[2] का असीर
इक आन में बनाये 'मिडिल फ़ेल' को वज़ीर
क्या-क्या मैं और खूबियाँ उसकी कहूँ 'नज़ीर'
ज़र्रों को आफ़्ताब बनाती है लीडरी

बैठ जाओ बैठ जाओ

रात इक जोहरा जबीं[3] तेरी ग़ज़ल
भैरवीं की लय में जब गाने लगी
और इक इक शेर से
दिल जिगर कितनों के छलनी हो गये

---

१. वंचित; २. गिरहदार बाल; ३. उज्ज्वल ललाट, सुन्दरी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आँख से मारा लबे नाज़ुक[1] से ज़िन्दा कर दिया
देखते ही देखते
सीमोजर[2] की बारिशें होने लगीं
ये सदायें गूँज उठीं
'वाह······वाह'
'वन्स मोर'
'फिर इसी अन्दाज़ से'
'नाचती जा गाये जा'
आज लेकिन वो ग़ज़ल
जब अज़ीमुड डान[3] में तूने पढ़ी
लोग अपने मूड में आने लगे
और इक इक शेर से
छिड़ गई बज़्मे सुखन में तीसरी जंगे अज़ीम
ये सदायें थीं हवा के दोश पर[4]
'हाँ तरन्नुम से ज़रा'
'कौन है ये चुग़द[5] ले जाओ इसे'
'ये तो बिल्कुल बोर है'
'हम नहीं सुनते हटाओ'
'बैठ जाओ'
'बैठ जाओ'
'बैठ जाओ'

बोल जवान

'महल बनेगा' महल बनेगा
राजा जी का राजा जी का
ईंटें लाओ ईंटें लाओ
गारा लाओ गारा लाओ

---

१. कोमल; २. सोना-चांदी; ३. डान (कराची का एक पत्र) द्वारा आयोजित बड़ा कवि सम्मेलन; ४. कंधा; ५. उल्लू ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बोझ उठाओ बोझ उठाओ
शान बढ़ेगी शान बढ़ेगी
हम झुग्गी में हम झुग्गी में
दम तोड़ेंगे दम तोड़ेंगे
बोल जवान हैया हैया
हैया हैया बोल जवान
बोल जवान

साँझ सवेरे साँझ सवेरे
घर से निकलो घर से निकलो
फिर खेतों में फिर खेतों में
ख़ून पसीना ख़ून पसीना
ख़ूब बहाकर ख़ूब बहाकर
फ़स्ल उगाओ फ़सल उगाओ
सबको खिलाओ सबको खिलाओ
भूक से तड़पो भूक से तड़पो
बोल जवान हैया हैया
हैया हैया बोल जवान
बोल जवान

कार खड़ी है कार खड़ी है
चल नहीं सकती चल नहीं सकती
धक्का दे दो धक्का दे दो
ज़ोर से धक्का ज़ोर से धक्का
और भी थोड़ा और भी थोड़ा
कार चलेगी कार चलेगी
हम सब पैदल हम सब पैदल
घर जायेंगे घर जायेंगे
बोल जवान हैया हैया

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैया हैया बोल जवान
बोल जवान

कपड़े की मिल	कपड़े की मिल
सेठ ने खोली	सेठ ने खोली
ब्लैक करेगा	ब्लैक करेगा
ठाठ बढ़ेगा	ठाठ बढ़ेगा
नाम चलेगा	नाम चलेगा
अपने बच्चे	अपने बच्चे
एक लंगोटी	एक लंगोटी
लेके फिरेंगे	लेके फिरेंगे

बोल जवान हैया हैया
हैया हैया बोल जवान
बोल जवान

अंजुमने तह्सीने बाहमी[1]

'अर्ज़ करता हूँ जनाब'
'वाह वाह'
'फिर अता फ़रमाइये'
'अर्ज़ की तारीफ़ हो सकती नहीं'
'वाह वाह······वाह वाह'
'अर्ज़ करता हूँ जनाब'
'कोई ला सकता नहीं इसका जवाब'
'अर्ज़ करता हूँ हुज़ूर'
'वाह वाह······वाह वाह'
'ख़ूब बल्कि ख़ूब तर'
'फिर अता फ़रमाइये'

१. परस्पर प्रशंसा की संस्था।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'फिर ज़रा दुहराइये'
'पढ़ते रहिये बार बार'
'वाह वाह·····वाह वाह'
'अर्ज़ की तारीफ़ हो सकती नहीं'
'बिल यक़ी'[1]
'वाह वाह······वाह वाह'

× × ×

अर्ज़ करता हूँ कि चश्म·····'
'वाह चश्म'
'वाह चश्म···वाह वाह'
'चश्म का चश्मा ग़ज़ब है···वाह वाह'
'ख़ूब ख़ूब'

× × ×

'चश्मे नर्गिस······'
'वाह नर्गिस वाह वाह'
'चश्मे नर्गिस हाय हाय'
'फिर अता फ़रमाइये'
'बार बार'
'वाह वाह······वाह वाह'

× × ×

'चश्मे नर्गिस इन दिनों ····'
'इन दिनों'
'तारीफ़ हो सकती नहीं'
'वाक़ई तारीफ़ हो सकती नहीं'
'इन दिनों—क्या हाल की तस्वीर है'
'इन दिनों इम्रोज़[2] की तफ़सीर[3] है'

---

१. निश्चयपूर्वक; २. आज, वर्तमान; ३. व्याख्या।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'कोई कह सकता नहीं'
'आपने जो कह दिया'
'ये तो टेढ़ी खीर है'
'वाह वाह......वाह वाह'
'ख़ूब बल्कि ख़ूब तर'
'चश्मे नर्गिस इन दिनों बीमार है'
'वाह वाह......हाय हाय'
'चश्मे नर्गिस इन दिन बीमार है'
'इन दिनों बीमार है'
'ज़िन्दगी इक मुस्तक़िल आज़ार[1] है'
'वाह वाह......वाह वाह'

× × ×

'चश्मे नर्गिस इन दिनों बीमार है तेरे बग़ैर'
'तेरे बग़ैर......वाह वाह'
'चश्मे नर्गिस इन दिनों बीमार है तेरे बग़ैर'
'वाह वाह......वाह वाह'
'तारीफ़ हो सकती नहीं—उफ़ ग़ज़ब'
'इन दिनों बीमार है...क्या ख़ूब है'
'क्या हसीं उस्लूब[2] है'
'और......ये तेरे बग़ैर'
'वाह वाह'
'चश्मे नर्गिस और फिर बीमार है हाय ग़ज़ब'
'बस यही टुकड़ा तो है रूहे अदब[3] जाने अदब[4]'
'वाह वाह......पढ़ते रहिये बार बार'
'चश्मे नर्गिस इन दिनों बीमार है तेरे बग़ैर'
'वाह वाह......वाह वाह'
'ख़ूब ख़ूब'

---

१. कष्ट २. शैली; ३. साहित्य का सार; ४. साहित्य का प्राण।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'ख़ूब बल्कि ख़ूब तर'
'फिर अता फ़रमाइये'
'हाँ यही दुहराइये'
'चश्मे नर्गिस इन दिनों बीमार है तेरे बगैर'
'वाह वाह......वाह वाह'
'बस यही मिस्त्रा अदब की जान है'
'एक मिस्त्रा क्या अज़ीमुश्शान[1] है'
'हाफ़िज़ो ख़य्याम[2] का दीवान है'
'या अज़ोमुड्डान है'
'वाह वाह......वाह वाह'
'ख़ूब'
'ख़ूब'

---

१. महान्; २. फ़ारसी के दो विख्यात कवि ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सैयद मुहम्मद जाफ़री

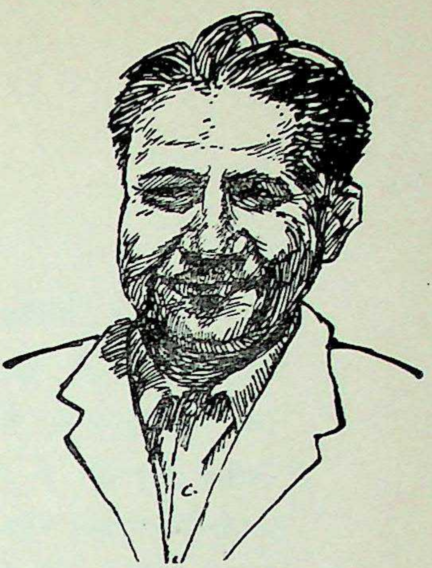

सैयद मुहम्मद जाफ़री इस युग के हास्य-रस और व्यंग्य के माने हुए कवि हैं। इनका जन्म लाहौर में हुआ। वहीं पले, बढ़े और लायलपुर कालेज में लेक्चरर हो गए। फिर, दिल्ली में भारत सरकार के मुलाज़िम हुए। आजकल पाकिस्तान के सूचना और प्रसारण विभाग के एक ऊँचे अधिकारी हैं। इनके व्यंग्य में कटुता नहीं, कोमलता है—विद्वत्ता भी है और सभ्यता भी। अपने ज़माने के राजनीतिक और सामाजिक हालात पर कुछ इस प्रकार से हँसते हैं कि पढ़ने वाला मज़े लेता है। ग़ालिब और इक़बाल की काव्य-पंक्तियों से लाभ उठाकर आप हास्य-रस में अनोखापन पैदा करते हैं। जिस जंज़ीर की आप कड़ी हैं, उसे भी विरोध के झटकों से हिलाते रहते हैं। लाल फ़ीता, नुमाइश, आज़ाद शायरी, यू० एन० ओ०, भंगियों की हड़ताल, वज़ीरों की नमाज़ अथवा कोई चीज़ इनकी ज़द से नहीं बची।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ईदे अज़हा की नमाज़ और वो अम्बोहे कसीर[१]
जबकि अल्लाह के दरबार में थे पाक वज़ीर
वो मुसल्लों[२] पे मुसल्लत[३] थे ब हुस्ने तक़दीर[४]
थे रिज़र्व उनके मुसल्ले ये मुसावाते कबीर[५]
आज कल ये है नमाज़ और कभी वो थी नमाज़
"एक ही सफ़ में खड़े हो गये महमूदो अयाज़"[६]

सफ़े अव्वल में खड़े थे जो ख़ुदायाने मजाज़[७]
ये अमीर और ये ग़रीब और ये नशेब[८] और ये फ़राज़[९]
तुझसे ऐ ख़ालिक़े कुल छुप नहीं सकता है ये राज़
तू हक़ीक़ी[१०] वो मजाज़ी[११] मुझे दोनों से नियाज़[१२]
"आग तकबीर[१३] की सीनों में दबी रखते हैं"
कभी रखते ही नहीं और कभी रखते हैं

इत्र में रेशमी रूमाल बसाया हमने
साथ लाये थे मुसल्ला वो बिछाया हमने
दूर से चेहरा वज़ीरों को दिखाया हमने
हर बड़े शख़्स को सीने से लगाया हमने
"फ़िर भी हमसे ये गिला है कि वफ़ादार नहीं"
कौन कहता है कि हम लायक़े दरबार नहीं

---

१. विशाल जन-समुदाय; २. नमाज़ पढ़ने की चटाई या दरी; ३. छाया हुआ; ४. सौभाग्य से; ५. बहुत अधिक समानता; ६. महमूद (राजा) और उसका दास अयाज़; ७. पार्थिव भगवान्; ८. ढलान; ९. ऊँचाई; १०. असली; ११. भौतिक; १२. सम्बन्ध; १३. ईश्वर को सबसे बड़ा मानने की भावना ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज़िक्र ख़ुतबे में वज़ीरों का जो पाया हमने
आस्मानों को ज़मीनों से मिलाया हमने
काबए दिल को सनमख़ाना बनाया हमने
सामिरी[१] की तरह बछड़ों को सजाया हमने
ख़ूगरे पैकरे महसूस[२] है इन्साँ की नज़र
"मान लेता कोई अनदेखे ख़ुदा को क्योंकर"

यू० एन० ओ०

यू० एन० ओ० के पेट में सारे जहाँ का दर्द है
वादएफ़र्दा[३] पे टरख़ाने के फ़न में फ़र्द[४] है
गरचे पिटवाता फ़लस्तीं में ख़ुद अपनी नर्द है
ऐसे क़ौमों से ख़फ़ा है जिनकी रंगत ज़र्द है
कितना अच्छा फ़ैसला करता रहा कश्मीर का
काग़ज़ी है पैरहन[५] हर पैकरे तस्वीर[६] का

कराची

ऐ कराची खटमल और खुजली के देरीना[७] वतन
सबको ये दो नेमतें मिलती हैं तुझ से तोहफ़तन[८]
और शहीदे नाज़[९] हो जाते हैं गुलगूँ पैरहन[१०]
कब तलक हमसे तग़ाफ़ुल[११] कब तलक बेगानापन
सर्द मेह्नी और गर्मी का तिरी क्या आसरा
सिंध सूबे की विज़ारत की तरह मौसिम तिरा

तेरे बाज़ारों की रौनक़ और शह्रों में कहाँ
हुस्न से शर्मा के बुझ जाती हैं अकसर बिजलियाँ

---

१. एक जादूगर; २. प्रकट वस्तुओं का विश्वास करने का आदी; ३. कल पर टालना; ४. अकेला; ५. वस्त्र; ६. चित्र की आकृति; ७. पुराना; ८. उपहार स्वरूप; ९. हाव-भाव पर जान निछावर करने वाले; १०. रंगीन वस्त्र; ११. उपेक्षा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर दिले वहशी को मिल सकती नहीं फिर भी अमाँ[1]
आके लुट जाता है बाज़ारों में 'भोला पह्लवाँ'
फिर न दंगल काम आते हैं न कोई दाओपेच
सारी दुनिया है मरीज़े इश्क़ की आँखों में हेच

हैं तिरे नक्क़ारखाने में बहुत - सी बोलियाँ
इसमें चुप बैठी है तन्हा तूतिये शीरीं बयाँ[2]
यानी वो उर्दू जो हिज्रत करके आई थी यहाँ
जंग आमादा हैं उस बेगम से घर की बांदियाँ
इसकी क़द्रो मंज़िलत से दिल तिरा बेगाना है
गेसूए उर्दू[3] अभी मिन्नत पिज़ीरेशाना[4] है

भंगियों की हड़ताल

भंगियों की आजकल हड़ताल है
किहतरो मिहतर[5] का पतला हाल है
गर्दिशे दौराँ ने साबित कर दिया
रफ़ए हाजत[6] भी बड़ा जंजाल है
ज़ब्त की हद पर खड़े हैं शैख़ जी
साँस खैंचे हैं मगर मुँह लाल है
पेट पकड़े फिर रहे हैं सेठ जी
जैसे धोती में बहुत-सा माल है
आ गया रोके से रुक सकता नहीं
अपना-अपना नामए आमाल[7] है
हर गली कूचे की अपनी झील है
हर जगह देहली में नैनीताल है

१. शरण; २. वह पक्षी जिसके बोल बहुत मीठे हों; ३. उर्दू के केश; ४. कंघी द्वारा संवारे जाने की आवश्यकता है; ५. छोटे बड़े; ६. शौच; ७. कर्म ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्लर्क

ख़ालिक़[1] ने जब अज़ल[2] में बनाया क्लर्क को
लौहोक़लम[3] का जल्वा दिखाया क्लर्क को
कुर्सी पे फिर उठाया बिठाया क्लर्क को
अफ़सर के साथ पिन से लगाया क्लर्क को
मट्टी गधे की डाल के उसकी सिरिश्त[4] में
दाख़िल मशक़्क़तों को किया सरनविश्त[5] में

चपरासी ख़ुल्द में जो बुला ले गया उसे
हूरों ने कुछ मजाक़ किया कुछ मलक[6] हँसे
हैरान थे क्लर्क कि कैसे बुरे फँसे
हातिफ़[7] ने दी सदा कि ये कुछ दिन यहीं बसे
आदम का रफ़ डराफ़्ट[8] है कब तक हँसोगे तुम
अप्रूव[9] होके आया तो सज्दा करोगे तुम

जन्नत को गरचे नाज़ था अपने मकीन पर
था उनकी ज़िन्दगी का सहारा रुटीन[10] पर
टी० ए० वसूल करने को उतरा ज़मीन पर
लफ़्ज़े क्लर्क लिखा था लौहे जबीन[11] पर
इब्लीस[12] रास्ते में मिला कुछ पढ़ा दिया
उतरा फ़लक से थर्ड में इंटर लिखा दिया

एब्स्ट्रैक्ट आर्ट

ऐब्स्ट्रैक्ट आर्ट की देखी थी नुमाइश मैंने
की थी अज़राहे मुरव्वत[13] भी सताइश[14] मैंने

---

१. स्रष्टा; २. आदि-काल; ३. तख़्ती और कलम; ४. स्वभाव; ५. भाग्य-लेख; ६. फ़िरिश्ते; ७. पुकारने वाला; ८. Rough draft; ९. Approve; १०. Routine; ११. माथे की तख़्ती; १२. शैतान; १३. मुरव्वत के ख़याल से; १४. प्रशंसा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आज तक दोनों गुनाहों की सज़ा पाता हूँ
लोग कहते हैं कि क्या देखा तो शर्माता हूँ
सिर्फ़ कह सकता हूँ इतना ही वो तस्वीरें थीं
यार की ज़ुल्फ़ को सुलझाने की तदबीरें थीं
एक तस्वीर को देखा जो कमाले फ़न थी
भैंस के जिस्म पर इक ऊँट की सी गरदन थी
नाक वो नाक ख़तरनाक जिसे कहते हैं
टाँग खैंची थी कि मिसवाक जिसे कहते हैं
नक़्शे महबूब[1] मुसव्विर ने सजा रखा था
मुझसे पूछो तो तिपाई पे घड़ा रखा था
ये समझने को कि ये आर्ट को क्या मंज़िल है
एक नक़्क़ाद[2] से पूछा जो बड़ा क़ाबिल है
सब्ज़ए ख़त[3] में वो कहने लगा रानाई है
मैं यही समझा कि नाक़िश मिरी बीनाई[4] है
बोली तस्वीर जो मैंने उसे उलटा पलटा
"मैं वो जामा हूँ कि जिसका नहीं सीधा उलटा"
उसको नक़्क़ाद तो इक चश्मए हैवाँ[5] समझा
मैं उसे हज़रते मजनूँ का गिरीबाँ समझा
देर तक बह्स रही मुझ में और उसमें जारी
तब ये साबित हुआ होती है ये इक बीमारी
एक तस्वीर को देखा कि ये क्या रखा है
वरक़े साफ़[6] पे रंगों को गिरा रखा है
टेढ़ी तिरछी-सी लकीरे थीं वहाँ जल्वा फ़िगन
जैसे टूटे हुए आईने पे सूरज की किरन
बोला नक़्क़ाद जो ये आर्ट है तज्रीदी[7] है
आर्ट का आर्ट है तनक़ीदी की तनक़ीदी[8] है

१. प्रिय का चित्र; २. समालोचक; ३. चेहरे का लोम; ४. नेत्र-ज्योति; ५. अमृत-कुण्ड; ६. साफ़ काग़ज़ जिस पर कुछ लिखा हुआ न था; ७. अमूर्त; ८. आलोचना ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

था क्यूबिज़्म में काग़ज़ पे जो आता था नज़र
मूझको ईंटें नज़र आती थीं उसे हुस्ने बशर
बोला नक़्क़ाद नज़र आते यही कुछ हम तुम
ख़ुल्द[1] में हज़रते आदम जो न खाते गंदुम
एब्स्ट्रैक्ट आर्ट बहर तौर नुमायाँ निकला
'क़ैस[2] तस्वीर के पर्दे में भी उरियाँ[3] निकला'
वो ख़दो ख़ाल कि सानी नहीं जिनका कोई आज
बात ये भो है कि मिलता नहीं रंगों का मिज़ाज
इसको क्यूबिज़्म का आज़ार कहा करते हैं
इसके ख़ालिक़ जो हैं बीमार रहा करते हैं

एक तस्वीर जो देखी तो ये सूरत निकली
जिसको समझा था अनन्नास वो औरत निकली
एब्सट्रैक्ट आर्ट की इस चीज़ पे देखी है असास[4]
तन की उरियानी[5] से बेहतर नहीं दुनिया में लिबास
इस नुमाइश में जो अतफ़ाल[6] चले आते थे
डर के माओं के कलेजों से लिपट जाते थे

एब्सट्रैक्ट आर्ट का इक ये भी नमूना देखा
फ्रेम काग़ज़ पे था काग़ज जो था सूना देखा
वो हमें कैसे नज़र आये जो मक़सूम[7] नहीं
"लोग कहते हैं कि है पर हमें मालूम नहीं"
डर से नक़्क़ादों के इस आर्ट को यूँ कहते हैं हम
शाहिदे हस्तिये मुत्लक़[8] की कमर है आलम
अलग़रज़ जाइज़ा[9] लेकर ये किया है इन्साफ़
आज तक कर न सका अपनी ख़ता ख़ुद मैं मुआफ़
मैंने ये काम किया सख़्त सज़ा पाने का
ये नुमाइश न थी इक ख़्वाब था दीवाने का
कैसी तस्वीर बनाई मिरे बहकाने को
अब तो दीवाने भी आने लगे समझाने को

---

१. स्वर्ग ; २. मजनूं ; ३. नंगा ; ४. नींव ५. नग्नता ; ६. बच्चे ; ७. जो भाग्य में नहीं है ; ८. निरंकुश अस्तित्व, ईश्वर ; ९. विश्लेषण ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाही

बिहार प्रदेश के विख्यात उर्दू कवि रज़ानकवी ने १९४९ में सुहैल अज़ीमाबादी के कथनानुसार हास्य रस की कविताएँ वाही के उपनाम से लिखना आरम्भ कीं और इस रंग में ऐसे चमके कि हास्य-रस के उच्च श्रेणी के कवि बन गए।

आप १९१४ में सारंग ज़िले की एक बस्ती कछुआ में पैदा हुए। स्कूल और कालेज की शिक्षा पटना में हुई। कॉमर्शियल कालेज कलकत्ता से कॉमर्स का डिपलोमा लेने के बाद बिहार विधान सभा में उर्दू रिपोर्टर बन गए। आजकल बिहार सभा के कौन्सल विभाग में हिन्दी रिपोर्टर हैं।

देवनागरी लिपि में इनकी एक किताब 'उर्दू शायरी और बिहार' राष्ट्र भाषा परिषद् ने १९५७ में मुद्रित की। इस के अतिरिक्त उर्दू में इनकी पाँच किताबें छप चुकी हैं।

इनकी हास्य रस की कविताओं में साहित्यक व्यंग्य मिलता है। फक्कड़पन से यह कोसों दूर रहते हैं और यही उत्तम हास्य रस का वास्तविक मर्म है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(जोश मलीहाबादी की कविता 'प्रोग्राम' से प्रभावित होकर)

वाही का प्रोग्राम

वाही को अगर आप कभी ढूंढना चाहें
वो पिछले पहर ख्वाबे परीशाँ में मिलेगा
और सुब्ह को वो शह्र के सरकारी मतब में
शीशी लिये अंबोहे मरीज़ाँ[1] में मिलेगा
और दिनको वो सरकारके दफ़्तर का असामी
खोया हुआ फ़ाइल के बियाबाँ में मिलेगा
और डेढ़ बजे लंच की जब होती है फ़ुर्सत
वो रह गुज़रे चाट फ़रोशाँ में मिलेगा
और शाम को वो वालिदे अतफ़ाले गुरस्ना[2]
झोला लिये मुलचंद की दूकाँ में मिलेगा
और रातको दिनभर का थकामाँदा बिचारा
मुर्दे की तरह कुल्बए अह्‌ज़ाँ[3] में मिलेगा

अफ़सर का प्रोग्राम

अफ़सर को अगर आप कभी ढूंडना चाहें
वो पिछले पहर ख्वाब के टापू में मिलेगा
और सुबह को वो बह्रे हवाखोरी सड़क पर
चलता हुआ बुल डौग़ के पहलू में मिलेगा

---

१. रोगियों की भीड़; २. भूखे बच्चों का बाप; ३. दुःख की कोठरी ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और दिन को वो कुर्सिये रुऊनत[1] पे बसद शान
फ़ाइल पे झुका वर्ज़िशे अबरू[2] में मिलेगा
और शाम को वो साहिबे अंग्रेज़ ख़साइल[3]
'किलनर' में 'रिपब्लिक' में 'पलाज़ू' में मिलेगा
और रात को वो शह्र के मशहूर कलब में
पैमाइशे तूले क़दो गेसू[4] में मिलेगा

शाइर का प्रोग्राम

शाइर को अगर आप कभी ढूँढना चाहें
वो पिछले पहर फ़िक्र के दलदल में मिलेगा
और सुब्ह को आईना लिये सामने अपने
अशआरे तग़ज़्ज़ुल[5] के रिहर्सल में मिलेगा
दिन को वो जिगर गोशए बेकारी ओ इफ़लास[6]
बिस्तर पे ख़यालात के जंगल में मिलेगा
और शाम को हल्क़े में मुरीदाने सुख़न के
बैठा हुआ रहमानिया होटल में मिलेगा
और शब को सरे बज़्मे सुख़न सद्र के नज़दीक
गालों को फुलाये सफ़े अव्वल में मिलेगा

मुल्ला का प्रोग्राम

मुल्ला को अगर आप कभी ढूँढना चाहें
वो पिछले पहर नफ़्ख़[7] की हालत में मिलेगा
और सुब्ह को वो बंदए मजबूरे मरासिम[8]
सुकड़ा हुआ मेहराबे इबादत में मिलेगा
बाद इसके वो होटल में ख़ुदादीन मियाँ के
नासाज़िए मेदा की शिकायत में मिलेगा

---

१. घमंड की कुर्सी; २. भौं की वर्ज़िश; ३. जिसका आचरण अंग्रेज़ों जैसा हो; ४. सुन्दरियों के क़द और बालों की लम्बाई को नापने में; ५. ग़ज़ल के शेर; ६. बेकारी और निर्धनता का प्रिय; ७. पेट का फूलना; ८. रीतियों का दास।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और दिन को छड़ी हाथ में लेकर सरे मकतब
मसरूफ़ वो तौसीए जहालत[1] में मिलेगा
और शाम को जिन्नात[2] की मस्जिद में कुएँ पर
तस्ख़ीरे[3] अजिन्ना' की रियाज़त[4] में मिलेगा
और महफ़िले मीलाद हो या बज़्मे अरूसी[5]
हर रात वो बिरियानी की दावत में मिलेगा

एडिटर का प्रोग्राम

और आप एडिटर को अगर ढूंढना चाहें
वो पिछले पहर ख़ानए उज़लत[6] में मिलेगा
और सुबह को वो शह्र का मशहूर सह्हाफ़ी
अख़बार फ़रोशों की जमाअत में मिलेगा
और दिन को वो बीड़ी का धुआँ मुँह से उड़ाता
मसरूफ़ मज़ामीं की इदारत में मिलेगा
और शाम को कातिब जो रेहेगा कभी ग़ाइब
बेचारा जुटा शग़्ले किताबत[7] में मिलेगा
और रात को पत्थर पे जो जम जायेगी कापी
ता देर प्रेस मैन की ख़िदमत में मिलेगा

वकील का प्रोग्राम

और आप प्लीडर को अगर ढूंढना चाहें
वो शब को पिनल कोड उलटने में मिलेगा
और सुब्ह को मुर्ग़िए वकालत का वो मुर्ग़ा
अंडे की तमन्ना लिये डरबे में मिलेगा
और दिन को कचहरी में वो इजलास से पहले
पाकड़ तले मुखतारों के अड्डे में मिलेगा—

---

१. अज्ञान का प्रसार; २. प्रेतात्मा; ३. प्रेत आत्माओं को जीतना, ४. तपस्या; ५. शादी की महफ़िल; ६. एकान्त; ७ किताबत करते हुए।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रौर उनकी ख़ुशामद से जो मिल जायेगी फ़ुर्सत
कंजूस मुग्रक़्किल से तक़ाजे में मिलेगा
मिल जायेगी जब फ़ीस तो पिशवाज़ पहनकर
इजलास पे हुक्काम के मुजरे में मिलेगा
ग्रौर शाम को ग्राते ही कचहरी से वो झटपट
थाली लिये घुसता हुग्रा चौके में मिलेगा

लीडर का प्रोग्राम

लीडर को ग्रगर ग्राप कभी ढूँढना चाहें
वो पिछले पहर हुजरए दिलबर[१] में मिलेगा
ग्रौर सुब्ह को वो बंदए ग्रग़राज़ो मक़ासिद[२]
सर ख़म किये दरबारे मिनिस्टर में मिलेगा
ग्रौर दिन को वो जनता की चरागाह का भैंसा
चरता हुग्रा परमिट किसी दफ़्तर में मिलेगा
ग्रौर शाम को ग्रहबाव के पैसों की बदौलत
होटल में कहीं या किसी पिक्चर में मिलेगा
ग्रौर रात को हाथों में लिये भात की थाली
बीवी से झगड़ता हुग्रा वो घर में मिलेगा

प्रोफेसर का प्रोग्राम

कालिज के मुदर्रिस से जो हो ग्रापको मिलना
वो पिछले पहर ग्रपने नशेमन[३] में मिलेगा
ग्रौर सुब्ह को वो चंद किताबों का मुग्रल्लिफ़
नाशिर से तक़ाज़ाए कमीशन में मिलेगा
ग्रौर दिन को वो कालिज में पढ़ाने से ज़ियादा
मश्शातगिए जुल्फ़े इलेक्शन[४] में मिलेगा

---

१. प्रेमिका के कमरे में ; २. ग्रपनी ग़रज़ ग्रौर प्रयोजन का दास ; ३. घोंसला ; ४. इलेक्शन के जुल्फ़ को सँवारने में ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खोलेगा सियासत की गिरिह चश्म ज़दन[1] में
लेकिन दमे लेक्चर बड़ी उलझन में मिलेगा
ग़ालिब के किसी शेर का मतलब न समझकर
पेशे तुलबा[2] क़ल्ब की धड़कन में मिलेगा
उलझेगा जो इक़बाल[3] के गेसूए ख़ुदी[4] में
तज्ज़ियए फ़नकारिये मिलटन[5] में मिलेगा
लेक्चर भी जो देगा तो वो मैटर से ज़ियादा
उलझा हुआ इस्टाइलो डिक्शन में मिलेगा
तहक़ीक़[6] का सौदा कभी होगा तो सरे शाम
पढ़ता हुआ कतबा[7] किसी मदफ़न[8] में मिलेगा
और रात को बच्चों को किसी बात पे धपकर
मक्खी की तरह बीवी से भनभन में मिलेगा

नक़्क़ाद का प्रोग्राम

नक़्क़ाद[9] से मिलना है ख़तरनाक कि हर दम
वो हालते तबख़ोरे तख़ैयुल[10] में मिलेगा
दिन-रात वो इक ख़ास अकड़ फूं की अदा से
ज़िह्नियते माक़ूस[11] के फ़र्गुल[12] में मिलेगा
बस एक ही महवर पे वो नाचेगा हमेशा
जब देखिये गिर्दाबे तक़ाबुल[13] में मिलेगा
कैफ़ीअते क़ब्ज़ उसकी तबीअत में रहेगी
ज़िह्न उसका मुज़ाफ़ाते तअत्तुल[14] में मिलेगा
लैलाए सुख़न[15] पास फटकने जो न देगी
उलझा हुआ नक़्क़ाद[16] के काकुल में मिलेगा

१. एक पल में ; २. विद्यार्थियों के आगे ; ३. उर्दू के विख्यात कवि ; ४. इक़बाल ने अपने काव्य में जो जीवन-दर्शन प्रस्तुत किया है वह 'ख़ुदी' के नाम से प्रसिद्ध है ; ५. मिलटन की कला का विश्लेषण । ६. अनुसंधान ; ७. शिला-लेख ; ८. क़ब्र ; ९. समालोचक ; १०. कल्पना की गरमी की हालत में ; ११-१२. उलटी मनोवृत्ति के लबादे में ; १३. तुलना का भँवर ; १४. गतिरोध के आसपास ; १५. काव्य ; १६. समालोचना के केश ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कौम्रों के सुख़न पर वो तक़ारीज़[1] लिखेगा
और मज़हकए नग्मए बुलबुल[2] में मिलेगा
या रात को बिस्तर पे वो बैठा हुआ उकड़ूँ
पेंसिल लिये तन्क़ीसे तग़ज़्ज़ुल[3] में मिलेगा

फ़लसफ़ी का प्रोग्राम

और फ़लसफ़ीए वक़्त के औक़ात हैं बीहड़
हर दम वो तिलिस्माते तवहहुम[4] में मिलेगा
तालाबे तजस्सुस पे लिये फ़िक्र की बंसी
वो गाह शिकारे महो अंजुम में मिलेगा
और गाह वो आँखों को किये बंद सड़क पर
ख्वाब और हक़ीक़त के तसादुम[5] में मिलेगा
गो रात को जिस्म उसका चटाई पे रहेगा
लेकिन वो सितारों से तकल्लुम[6] में मिलेगा
खो जायेगी जब अक़्ल तो भूलेगा खुदा को
आजायेगा जब होश तो हम तुम में मिलेगा

लीडरी का नुस्खा

वो लोग आजकल जिन्हें फ़िक्रे मआश[7] है
आसूदगिये ज़ीस्त[8] की जिनको तलाश है
इसके इवज़ कि जाके कहीं नौकरी करें
वाही का मशवरा है कि वो लीडरी करें
माजून लीडरी का बड़ा कामियाब है
नुस्खा ये कस्बे ज़र[9] के लिए लाजवाब है
अनमोल है ये जिन्स तिज़ारत के वास्ते
तरकीब लिख रहा हूँ सहूलत के वास्ते

---

१. प्रशंसा ; २. बुलबुल के गीत का उपहास ; ३. गज़ल के दोषों का बखान करने में ; ४. भ्रम का माया जाल ; ५. टक्कर ; ६. बात करते हुए । ७. जीविका की चिन्ता ; ८. जीवन में संतोष ; ९. धनार्जन ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ईमान और ज़मीर[१] को पहले खरल करें
और इसके बाद खूने हमीयत[२] में हल करे
तुख्मे रियाँ[३] को अक़्ल के काँटे पे तोल लें
साज़िश का ज़ह्र शह्‌दे फ़साहत[४] में घोल लें
बादामे खुल्क़ो पिस्तए तहज़ीब[५] बीस लें
दोनों को ख़ूब सिल पे शक़ावत[६] के पीस लें
सच में सफेद झूठ का पानी मिलायें फिर
हिर्सो-हवस[७] की आँच पर सबको पकायें फिर
जोशांदा जब उबाल पे आये उतार लें
और उसको फिर दिमाग़ की बोतल में गार लें
क़ंदे सियाहे फ़िर्क़ापरस्ती[८] मिलायें फिर
और कोशिशे ज़ईफ़[९] को अपनी खिलायें फिर
बीमार को ग़िज़ाए मुक़व्वी[१०] भी चाहिये
थोड़ी-सी मुर्गे रूह की यख़नी भी चाहिये
अंडे भी कुछ हसद[११] के हों लह्‌मे खुदी[१२] के साथ
दोनों को खायें बुग्ज़ो अदावत[१३] के घी के साथ
देखें दवा का मोजिज़ा फ़ज़्ले खुदा से फिर
बीमार नाउमीद न होगा शफ़ा से फिर
सिह्‌हत का ख़ूं रगों में उछलने लगेगा फिर
अज़्मे ज़ईफ़[१४] उठ के टहलने लगेगा फिर
ठोकर से अपनी फ़ितनए मशहर जगायेगा
और मुल्क पर अज़ाबे ख़ुदा बनके छायेगा
तुख्मे हवस[१५] समाज की खेती में बोयेगा
तूफ़ान बन के क़ौम का बेड़ा डुबोयेगा

१. अंतःकरण; २. स्वाभिमान; ३. छल का बीज; ४. सरल और सुन्दर लेखन-शैली के शहद में; ५. सभ्यता का पिस्ता; ६. कठोरता; ७. लालच; ८. साम्प्रदायिकता का गुड़; ९. बल-हीन प्रयास; १०. पुष्टिकर भोजन; ११. जलन; १२. अहम् का मांस; १३. द्वेष और शत्रुता; १४. अदृढ़ संकल्प; १५. लालसा का बीज।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फिर तो क़दम को चूमेगा इक़बाल बार-बार
क़ुरबान उसपे होंगे महोसाल बार-बार
दौलत कनीज़[१] बनके ख़वासी[२] में आयेगी
लछमी खुद उसके माथे पे चन्दन लगायेगी

लैलाए करपशन

आई है मिरे शह्र में इक शोख़ हसीना
सरशार जवानी है कि सावन का महीना
रानाई के तेवर हैं कि तूफ़ाँ का क़रीना

× × ×

इक महशरे जज्बात है ज़ालिम की जवानी
मस्ताना अदाएँ हैं कि दरिया की रवानी
हर मुँह में भर आता है जिसे देख के पानी

× × ×

शोख़ी है कि बरसात की घंघोर घटाएँ
या बज्मे ख़राबात[३] की मख्मूर हवाएँ
या वादिये कश्मीर की मसहूर फ़ज़ाएँ

× × ×

हर शख्स को जामे मैए दीदार पिलाकर
हर दिल में चराग़ अपनी तमन्ना का जलाकर
हर रूह में वारफ़्तगिये शौक़[४] बढ़ाकर

× × ×

यूँ छेड़ दिया उसने महब्बत का तराना
इक आन में तसख़ीर[५] हुआ सारा ज़माना
उश्शाक़ भुला बैठे ज़ुलैखा का फ़साना

× × ×

---

१. दासी ; २. सेवा ; ३. मदिरालय की महफ़िल ; ४. मंत्रमुग्ध ; शुभ कामना में खोये रहने की दशा ; ५. विजित ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वैसे तो फँसाने में वो मश्शाक़[1] बड़ी है
हर शख़्स पे हर दिल पे नज़र उसकी गड़ी है
जो जान से लेकिन वो दफ़ातिर पे पड़ी है

× × ×

सरकार के दफ़्तर का असिस्टंट बिचारा
टकरा गया इस शोख़ की नज़रों से क़ज़ारा[2]
और फ़र्ज़ की बाज़ी में बुरी तर्ह से हारा

× × ×

फ़ाइज़[3] हैं मगर ओह्‌दए आली पे जो अफ़सर
ज़ालिम की महब्बत में हुए आपे से बाहर
हाल उनके दिलेज़ार का हर दिल से है अबतर

× × ×

उस दुश्मने ईमाँ ने किसी को भी न छोड़ा
जो उसके मुख़ालिफ़ थे ग़रूर उनका भी तोड़ा
दिल अपनी तरफ़ क़ौम के लीडर का भी मोड़ा

× × ×

जो देश के सेवक थे अहिंसा के पुजारी
खुद उनसे हसीना ने कहा "मैं हूँ तुम्हारी"
और उनपे भी उल्फ़त का जुनूं हो गया तारी

× × ×

अब देश की सेवा की भला क्या है ज़रूरत
अब वक़्त कहाँ है जो करें क़ौम की ख़िदमत
अब वो हैं और इस शोख़ का आग़ोशे महब्बत[4]

मुशाअरा और कामरेड

कल शब को अंजुमन में हुआ इक मुशाअरा
मैं भी था सामेईन[5] की सफ़ में खड़ा हुआ

---

१. अभ्यस्त ; २. अचानक ; ३. प्रतिष्ठित ; ३. प्रेम की गोद ; ५. श्रोतागण ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हर मकतबे ख़याल[१] के थे लोग मुज्तमा[२]
डाइस पे शाइरों की थी सत्हे मुर्तफ़ा[३]
तुक बंदो तुक फ़रोश भी थे मुब्तदी भी थे
पीरे मुग़ाने मयकदए शाइरी[४] भी थे
इक सम्त शाइराने तरक़्क़ी पसंद थे
कुर्सी पे अपने ज़ोम[५] में सबसे बलंद थे
ज़ाग़ो ज़ग़न[६] जो पहले गज़ल अपनी पढ़ चुके
और नक़्दो तब्सिरा[७] की कसौटी पे चढ़ चुके
उस्तादे फ़न भी आ गये माइक के सामने
ता हद्दे फ़ह्म दाद उन्हें दी अवाम ने
सबकी ज़बाँ पे ज़ौक़े सुख़न का खराज था
लेकिन सफे यमीं[८] में ख़मोशी का राज था
ख़ामोश शाइराने तरक़्क़ी पसंद थे
लबहाए नाज़ क़ुफ़्ले तकब्बुर[९] से बंद थे
कुछ उनमें थे चढ़ाये हुए अपनी त्योरियाँ
सिग्रेट पी के छोड़ रहा था कोई धुआँ
तीखी नज़र में तनूज़ के निश्तर थे तेज़ तेज़
एहसासे बरतरी की मतानद[१०] थी खंदा रेज़[११]
कुर्सी पे हर अदीब था इक पैकरे ख़याल[१२]
यूनानियों की संगतराशी की इक मिसाल
इतने में सद्रे बज़्म ये बोले खखार के
अब आ रहे हैं शाइरे फ़र्दा[१३] जिवार के
माइक पे आयें हज्रते मिर्रीख़[१४] हैं कहाँ
इतने में उठ खड़ा हुआ इक मुन्हनी[१५] जवाँ

---

१. दृष्टिकोण; २. एकत्रित; ३. ऊँची सतह; ४. कविता के मदिरालय का बूढ़ा प्रबन्धक; ५. अकड़; ६. कौवे और चीलें अर्थात् घटिया कवि; ७. आलोचना और समीक्षा; ८. दाहिनी पंक्ति; ९. घमण्ड का ताला; १०. गम्भीरता; ११. हँसने वाला; १२. विचार की मूर्ति; १३. भविष्य का कवि; १४. कवि का उपनाम; १५. दुबला-पतला।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मज्मे पे डालता हुआ तिरछी-सी इक नज़र
माइक को एक हाथ से मज़बूत थामकर
ज़ुल्फ़ों की गर्द झाड़के और खोलकर किताब
इक नज़्म की शुरू ब उन्वाने इन्क़िलाब
मतला ये था कि गावे ज़मी[1] को पछाड़ दें
चाहें जो हम तो खेमए अफ़लाक[2] फाड़ दें
सुनते ही इसके बज़्म में इक ग़लग़ला हुआ
हर शाइरे तरक़्क़ी पसंद उठ खड़ा हुआ
वो तालियाँ बजीं कि रुख़े वक़्त मुड़ गया
इन तालियों में ताइरे मज़्मू[3] भी उड़ गया
शह पर समेटे बुलबुले सिद्रह[4] ने सहम के
हाथों के तोते उड़ गये अर्बाबे फ़ह्म[5] के
मैं दिल में सोचने लगा अल्लाह रे इत्तिहाद
होंठों से एक साथ निकलती है सबके दाद
कहते हैं हम ख़याली ओ हम मश्रबी[6] इसे
कहिये इक ईतिकाए जमाअत गरी[7] इसे
ये क्या कि शीय सुन्नो से होता है हम सुखन
ये क्या कि सुन्नी शीओं को देता है दादे फ़न
ये क्या कि इक मलीछ को हिन्दू हसीं कहे
महमूद और शांता को महजबीं कहे
ये हुस्ने खुल्क़[8] जोफ़े जमाअत[9] की है दलील
शामत की है दलील हमाक़त की है दलील
वाही की इलतिजा है ये फ़िर्क़ाबंद से
ले अक़्ल शाइराने तरक़्क़ी पसंद से

---

१. पृथ्वी का बैल ; २. आकाश का तम्बू ; ३. विषय का पक्षी; ४. स्वर्ग के सबमें ऊँचे मकान पर एक बेर का पेड़ ; ५. ज्ञानी ; ६. एक आचार-विचार का होना ; ७. दलबन्दी का विकास ; ८. सुशीलता ; ९. दल की कमज़ोरी ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रेल का सफ़र

दर-पेश अचानक जो हुई एक ज़रूरत
वाही से हुई रेल पे चढ़ने की हमाक़त
आधमकी ज़रा वक़्त से पहले ही जो गाड़ी
वाही ने घड़ी देखी तो लाहिक़ हुई हैरत
हैरत थी कि ताजील[1] की क्या वज्ह है आख़िर
ताख़ीर तो है रेल की देरीना रिवायत[2]
अलक़िस्सा टिकट मंज़िले मक़सूद का लेकर
असबाब लिये दौड़ के पहुँचा वो ब उजलत[3]
आगे से भी पीछे से भी खाता हुआ धक्के
दाख़िल हुआ इक छोटे से डब्बे में बदिक़्क़त
डब्बा था इक कि गंजे शहीदाँ[4] का नमूना
थोड़ी-सी जगह तंग तर अज़ गोशए तुरबत[5]
तुरबत में मगर पाँव तो फैलाते हैं मुर्दे
ज़िन्दों को नहीं रेल में इसकी भी सहूलत
असबाब पे बैठा था कोई टाँग अड़ाये
खिड़की पे खड़ा था कोई दीवार की सूरत
इस भीड़ में गुँजाइशे अलफ़ाज़ कहाँ थी
अलफ़ाज़ भी होंठों से निकलते थे बदिक्क़त
था दम बख़ुद इक गोशे में सिमटा हुआ वाही
कमबख़्त को थी साँस के लेने की ज़रूरत
और साँस के लेने का न था कोई भी इम्काँ
थी बंद हवा ऑक्सिजन की थी ये क़िल्लत
थे एक बुज़ुर्ग उसके मुक़ाबिल में जो बैठे
देखी न गई उनसे जो वाही की ये हालत
फ़रमाने लगे आप कहाँ जाओगे भैया

१. शीघ्रता ; २. पुरानी परम्परा ; ३. शीघ्रता पूर्वक ; ४. क़ब्रिस्तान ; ५. क़ब्र के कोने से भी अधिक तंग ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बरदाश्त भी कर पाओगे रस्ते की सउबत[१]
ये रेल नहीं हज़रते सौदा[२] की है घोड़ी
दो रोज़ में तय करती है इक दिन की मसाफ़त
कल इसको पहुँचना था जहाँ आज है पहुँची
चौबीस पहर लेट है अल्लाह रे ग़ैरत
मैं अपनी तबाही का बय क्याँ करूँ भैया
पटने में थी कल मेरे मुक़दमे की समाअत
पटना है मगर आज भी दिल्ली की तरह दूर
रोती है मिरी शामतें आमाल[३] को क़िस्मत
ये सुनते ही कान उस के खड़े हो गये फ़ौरन
को अर्ज़ कि ये आप ने क्या कह दिया हज़रत
मैंने तो ये समझा था कि है वक़्त पे आई
चौबीस पहर लेट क़ियामत है क़ियामत
बोले वो बुज़ुर्ग आप बड़े सादा हैं भैया
हम लोग किसी काम में करते नहीं उजलत[४]
मालूम नहीं आप को ये नुक्तए तारीख़
जो क़ौम की ख़स्लत है वही रेल की ख़स्लत
वो रेल को रफ़्तार हो या वक़्त की रफ़्तार
इस मुल्क में दोनों को तसाहुल[५] की है आदत
पाबंदिये औक़ात में है शाने ग़ुलामी
आज़ाद है जब मुल्क तो क्या इसकी ज़रूरत

लाल फ़ीता

मुल्क में साँप की क़िस्मों का नहीं कोई शुमार
रेंगने वाला है कोई तो कोई है परदार

१. कष्ट; २. उर्दू के सुप्रसिद्ध कवि; ३. बुरे कर्मों का फल; ४. जल्दी; ५. आलस्य।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिस्ले अफ़ई[1] है सियासत का गलूबंद कोई
बन के नागिन कोई तहज़ीब की गर्दन का हार
कोबरा यूँ तो है हर साँप से ज़ियादा मूज़ी
काट से जिस की है इन्सान का बचना दुश्वार
हम ने इक और नये साँप को देखा है मगर
ज़ह्र की जिस के हर इक बूँद हलाकत ब कनार[2]
दफ़्तरी आबो-हवा में जो पला करता है
जिस को ख़ुद दूध पिलाती हैं हमारी सरकार
काट इस साँप की है ज़ह्रे हलाहिल से भी तेज़
उस का सूंघा हुआ बचता नहीं कोई ज़िन्हार[3]
उस का ख़म जुल्फ़ हसीनाँ से ज़ियादा पुर पेच
उस की दुम अब्रूए जानाँ से ज़ियादा ख़मदार
लाल फीता है वो माशूक़े सितमगर वाही
फ़ैज़ से जिस के हर आफ़िस है नवाबी दरबार
कितने अहकाम हुए उस के ख़मो पेच में क़ैद
कितनी इस्कीमें हुईं उस के तग़ाफ़ुल पे निसार
लाल फ़ीते का हुआ बंदे कफ़न[4] जिस को नसीब
उस की क़िस्मत में है आफ़िस की दराजों का मज़ार
किसी दरख़्वास्त का जब तक कि न हो ले चिहलुम
फ़ातिहा ख़्वाँ नहीं होता क़लमे ख़ुश रफ़्तार
हुक्म पेंशन का दफ़ातिर से है चलता उस वक़्त
जब पहुँच जाते हैं ता मुल्के अदम[5] पेंशनख़्वार
लाल फीते हैं दफ़ातिर की दिमाग़ी उलझन
जिसके इक पेच में सौ फलसफ़ए लैलो निहार[6]
लाल फ़ीते हैं क्लर्कों की तबीअत की गिरिह
नाख़ुने सई[7] से भी जो नहीं खुलती ज़िनहार

---

१. नाग ; २. विनाशक ; ३. कदापि ; ४. कफ़न की गिरह ; ५. यम-लोक ; ६. रात और दिन ; ७. प्रयास के नाख़ून ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लाल फ़ीते के तबस्सुम[१] में तमन्ना का लुहु
लाल फ़ीते के शिकंजे में उमीदों का फ़शार[२]
लाल फ़ीते नहीं लेते हैं ग़रीबों का सलाम
लाल फ़ीते नहीं सुनते हैं यतीमों को पुकार
लाल फ़ीते को पन्हाया गया उजला जोड़ा
फिर भी रंग तबीयत का अभी तक ख़ूँख़्वार

मुहक्क़िक़[३]

ये जो इक हज़रत चले आते हैं गोरिस्तान[४] से
ये न समझें आप हैं बेज़ार अपनी जान से
आपको यूँ ही है आसारे क़दीमा[५] से लगाव
जिस तरह चूना डली कत्थे को निस्वत पान से
आपको क़ब्रों से उल्फ़त इश्क़ वीराने से है
आप घबराते हैं जीते - जगते इन्सान से
कोई कितना ही बड़ा हो फ़लसफ़ी शाइर अदीब
उम्र भर उससे रहा करते हैं आप अंजान से
हाँ मगर जैसे ही पा जाता है बेचारा वफ़ात
आप उसको चाहने लगते हैं जी से जान से
सूंघते हैं देर तक मरहूम की ख़ाके लहद[६]
फिर ये फ़रमाते हैं उठकर आलिमाना शान से
मरने वाला दफ़्न है गो सरज़मीने हिन्द में
आये थे ग़स्साल[७] काबुल से कफ़न जापान से
तूलो अर्ज़े क़ब्र से ये साफ़ चलता है पता
गोर कन[८] आये थे अतराफ़े बलुचिस्तान से
ये था इक रुख़ साहिबे तहक़ीक़ की तस्वीर का
दूसरा रुख़ भी बयाँ करता हूँ सुनिये ध्यान से

---

१. मुस्कान ; २. निचोड़ना ; ३. अनुसन्धान-कर्ता ; ४. क़ब्रिस्तान ; ५. पुरावशेष ; ६. क़ब्र की मिट्टी ; ७. स्नापक ; ८. क़ब्र खोदने वाले ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है ब ज़ोमे ख़ुद[1] मुहक़्क़िक़ आप हिन्दुस्तान के
आपने नुक़्ते गिने हैं मीर के दीवान के
शह्र में अपने किताबों का जो क़ब्रिस्तान है
गोरकन हैं आप उसी मशहूर क़ब्रिस्तान के
कातते हैं सूत को तहक़ीक़ के इतना महीन
आपके आगे जुलाहे मात हैं ईरान के
ज़ेरे तहक़ीक़ आपके रहते हैं ये सब मस्अले
किस क़दर चूहे पले थे घर में मोमिनख़ान के
पाँच बजकर पाँच पर या पाँच बजकर सात पर
दाग़ ने तोड़ा था दम ज़ानू पे मुन्नी जान के
रिन्द ने इक बेवफ़ा के इश्क़ में खाये थे जो
वो छुरी के ज़ख़्म थे या घाव थे किरपान के
धुन है ये साबित करें दिल्ली था मिलटन का वतन
और सौदा के चचा बूचर थे इंग्लिस्तान के
अल ग़रज़ रहती है रोज़ो शब यही बस एक फ़िक्र
कोई गुलदस्ता उतारें ताक़ से निसियान[2] के
आपको है वालिहाना इश्क़[3] मख़्तूतात[4] से
जैसे सन्नाटे को उल्फ़त हो अँधेरी रात से
किर्म ख़ुर्दा[5] और बोसीदा किताबों के वरक़
ढूँढ कर लाते हैं आप इस शह्र उस देहात से
ले के उन औराक़े पारीना[6] को यूँ आते हैं ख़ुश
लौटते हैं जिस तरह नौशा मियाँ बारात से
फिर महीनों तक अरक़रेज़ी[7] किया करते हैं आप
जोड़ते हैं सिलसिला इस डाल का उस पात से
सरहदे वह्मो गुमाँ को छोड़कर मीलों परे
खेलता है ज़िह्न दूर अज़ अक़्ल इम्कानात[8] से

१. अपने घमण्ड में; २. विस्मृति का ताक़; ३. अत्यधिक प्रेम; ४. पाण्डुलिपियाँ; ५. जिनको कीड़े खा चुके हों; ६. पुराने पन्ने; ७. पसीना बहाना; ८. विवेक-हीन सम्भावनाएँ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसपे तुर्रा ये कि रखते हैं खुले बंदो जनाब
दिल में बुग़्ज़े लिल्लही[१] औरों की तस्नीफ़ात[२] से
गर किसी ने लिख दिया ये मीर के दो हाथ थे
आप उसको रद करें अपनी तहक़ीक़ात से
आपकी तहक़ीक़ ये होगी कि लूल्हा था ग़रीब
और इसे साबित करेंगे उसकी कुल्लियात[३] से

शाइरे बिसियार गो[४]

शाइरे बिसियार गो से है ये मेरी इलतिमास[५]
आप यूं लिल्लाह सामे[६] को न कीजे बदहवास
आपके अशआर हैं या टड्डियों की फ़ौज है
इक बलाए नागहानी मौज अन्दर मौज है
मुख़्तसर-सी रस्मे खतना और उस पर तीस शेर
अक़्द[७] के दो बोल की तक़रीब और चालीस शेर
इस तरफ़ कोई मरा और नुत्क गौहर बार[८] है
लाश भी उठी नहीं और नज़्म इक तैयार है
शेर को मजलिस में पहुँचे और फ़ज़ा थर्रा उठी
अबतरी माहौल पर छाई हवा थर्रा उठी
मैंने माना शाइरी का आपको बुहरान[९] है
आपकी फ़िक्रे सुख़न पर्चून की दूकान है
जिसमें मिस्सी भी है काजल भी है और साबून भी
दाँत का मंजन भी है गुड़िया भी है बैलून भी
आप ढीलो करके रख देते हैं नस-नस शेर की
उफ़ ये चौग़ज़ला और उस पर हर गज़ल दस शेर की

---

१. बिना किसी कारण के द्वेष-भाव का होना ; २. रचनाएँ ; ३. किसी कवि की समस्त रचनाओं का संकलन ; ४. ऐसा कवि जो कविताएँ बहुत अधिक लिखता हो ; ५. प्रार्थना ; ६. श्रोता ; ७. व्याह ; ८. वाक्-शक्ति मोती बरसाने लगती है ; ९. पागलपन ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आपको जितने क़वाफ़ी[१] मिल सके फ़रहंग[२] में
उनको ठूंसा लाके ग़ज़लों की क़बाए तंग में
और फिर सौदा[३] हुआ ये आपके सिर पर सवार
अब उठो चलकर निकालें सुनने वालों का फ़शार
आप शायद ये समझते हैं कि सामे का दिमाग़
कासए फ़ौलाद[४] है या संगे ख़ारा का अयाग़[५]
जिस पे तेज़ाबे सुख़न का कुछ असर होता नहीं
जिस पे शेरों का हथौड़ा कारगर होता नहीं
आपकी बिसियारगोई का तमाशा देखकर
दम बख़ुद हैं साहिबाने ज़ोको अर्बाबे नज़र[६]
आपके सर पर मुसल्लत[७] जज़्बए तहसीन[८] है
और उधर सबकी ज़बाँ पर सूरए यासीन[९] है

गवैया शाइर

इन से मिलिये आप हैं वो शाइरे रंगीं नवा
जिनसे बज़्मे शेर की मतू ब[१०] रहती है हवा
भैरवी की धुन में जिस दम दादरा गाते हैं आप
बन के सावन की घटा महफ़िल पे छा जाते हैं आप
आप पढ़ते हैं ग़ज़ल जब लेके हल्की गिटकरी
आप पर क़ुरबान हो जाती है रूहे शाइरी
आपकी आवाज़ यूँ लबरेज़ है तासीर से
गूंजती रहती है महफ़िल नारए तकबीर से
आपकी रंगी नवाई[११] का है ये अदना कमाल
शेरे बेमानी भी बन जाता है इक सेह़्रे हलाल[१२]

---

१. अनुप्रास ; २. शब्द-कोश ; ३. उन्माद ; ४. लोहे का प्याला ; ५. प्याला ; ६. रसिक और मर्मज्ञ ; ७. छाया हुआ ; ८. प्रशंसा ; ९. क़ुरान की एक आयत जो उस समय पढ़ी जाती है जब कोई व्यक्ति मर रहा हो ; १०. आर्द्र ; ११. रंगीन भाषा ; १२. कविता का जादू ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर झुकाये दम बख़ुद रहते हैं गो अह्ले नज़र
झूमता रहता है मज्मा आपकी हर तान पर
फ़िल्म के गानों की धुन में जब सुनाते हैं कलाम
अंजुमन पर टूट पड़ता है सड़क का इज़्दिहाम[1]
आपके शेरों में गो आहंग[2] का फ़ुक़दान[3] है
आपका गाना मगर बज़्मे सुख़न की जान है
आपकी नग़्मा सराई की ख़बर है दूर तक
आपका शुहरा है दिल्ली से मुज़फ़्फ़पूर तक
फ़र्क़ ये है आप में और पेशावर क़व्वाल में
फ़ीस का तालिब है वो और आप ख़ुश हर हाल में
गुनगुनाकर आप जब करते हैं साफ़ अपना गला
बज़्मे क़व्वाली का आ जाता है हल्का-सा मज़ा
मिस्रए अव्वल को दो-दो बार दुहराने के बाद
उंगलियों से ताल सुर का भाव बतलाने के बाद
लोच पैदा करके क़दमों में थिरक जाते हैं आप
कुछ फड़क जाती है महफ़िल कुछ फड़क जाते हैं आप
आपसे वाही का है ये दस्तबस्ता मश्वरा
आपको फ़ितरत ने बख़्शा है मुग़न्नी[4] का गला
आपकी शफ़क़त[5] का है मुहताज रक़्क़ासी[6] का फ़न
क्यों न बज़्मे रक़्स में तब्दील हो बज़्मे सुख़न
किस क़दर बेचैन हैं ये पाँव घुंघरू के लिए
ग़र्दिशे महदूद क्यों हों चश्मो अब्रू[7] के लिए
लुत्फ़ आ जावे जो साज़िंदे भी हों कुछ साथ-साथ
इस तरफ़ पैरों में जुंबिश उस तरफ़ तबलों पे हाथ
फैल जाये चार जानिब फिर तो शुहरा आपका
और हर तक़रीबे शादी में हो मुजरा आपका

---

१. भीड़; २. स्वर; ३. अभाव; ४. गायक; ५. स्नेह; ६. नृत्य; ७. आंख और भौं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बानियाने मुशाअरा से

ऐ मुंतज़िमे बज़्मे सुख़न[१] बानिये सुहबत[२]
कुछ तुझ से मुक़ामी शो'रा को हैं शिकायत
बेहतर है फ़रीक़ैन में हो जाये सफ़ाई
बेहतर है कि बाक़ी न रहे दिल में कदूरत
ये बात मुसल्लम कि तुझे दर्दे सुख़न है
और ये भी बजा तुझको मुयस्सर है फ़राग़त
औक़ात गुज़ारी के लिए तेरी नज़र में
बेहतर मय ओ मीना[३] से है अशआर की लज़्ज़त
परहेज़ अगर रक़्सोग़िना[४] से है बज़ाहिर
कुछ मस्लहते वक़्त[५] है कुछ पासे शरीअत[६]
फिर इसके अलावा ये खुली बात है अब तो
बज़्मे शो'रा करती है दोनों की नियाबत[७]
अलक़िस्सा तिरा ज़ौक जो उकसाता है तुझको
माइल ब सुख़न होती है जब तेरी तबीअत
करता है बदा अपने यहाँ मजलिसे शेरी
पेशे शो'रा भेज के पर्वानिए दावत
घर पर तिरे जुट जाते हैं दस बीस-ख़ुश आहंग[८]
मौक़ा हो तो वाही की भी हो जाती है शिरकत
होती है तमाम आख़िरे शब तक कहीं जाकर
जमती है सरे शाम से अकसर जो ये सुहबत
जी खोल के अशआर सुनाते है सुख़न वर
और दाद की तक़सीम भी होती है बकसरत[९]

---

१. कवि-गोष्ठी का प्रबन्धक ; २. गोष्ठी का प्रवर्तक ; ३. शराब और शराब की बोतल ; ४. नृत्य और गान ; ५. वक़्त का मस्लहत ; ६. धर्म-विधान ; ७. स्थानापन्न होना ; ८. मधुर स्वर वाले ; ९. प्रचुरता से ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लेकिन कभी इस बात पे भी ग़ौर किया है
तू उनकी किया करता हैं किस तर्ह ज़ियाफ़त[1]
पनवाड़ी की दूकान की दो एक गिलौरी
या चाय की इक आध प्याली व कराहत[2]
छः घण्टे जो महब्बूस[3] रहें बज़्म में तेरी
क्या उनके तहम्मुल[4] की यही होती है क़ीमत
क्या तुझको गुमाँ है कि हैं शाइर वली अल्लाह
खाने की जरूरत है न पीने की ज़रूरत
क्या तुझको गुमाँ है कि उन्हें ज़ोफ़े जिगर[5] है
बेचारे को है भूक न लगने की शिकायत
क्या तुझको गुमाँ है कि वो हैं क़ह्त के मारे
और क़ह्त के मारों को तो फ़ाक़ों की है आदत
मतबख़[6] जो तिरा हो दिले वाही की तरह सर्द
होटल को ती क़ाशानए एहसाँ से है क़ुर्बत[7]
वाही की है ये नज़्म वकालत शो'रा की
बल्लाह कि खुद उसको नहीं कोई शिकायत

---

१. अतिथि-सत्कार ; २. अरुचि के साथ ; ३. बन्द , ४. धैर्य; ५. जिगर की कमजोरी ; ६. रसोई घर ; ७. निकटता ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सैयद ज़मीर जाफ़री

इनका वास्तविक नाम सैयद ज़मीर हुस्सैन शाह है। स्कूल और कालिज में साहित्य के मैदान में क़दम रखा तो ज़मीर हुस्सैन दर्द' बन गए। इसके पश्चात आज तक सैयद ज़मीर जाफ़री हैं। कल की ईश्वर जाने।

जेहलम शहर से बारह-चौदह मील दूर चक्क अब्दुल खालिक नाम के एक छोटे से गाँव में जनवरी, १९१८ में आपका जन्म हुआ। आपके पिता सैयद हैदरशाह एक सूफ़ी वृत्ति के मनुष्य थे। आपके नाना पीर सैयद मुहम्मद शाह पंजाबी भाषा के एक सुप्रसिद्ध कवि हुए हैं।

पंजाब विश्वविद्यालय से बी० ए० की उपाधि लेने के बाद लाहौर के समाचार-पत्रों में काम करते रहे। दूसरा विश्व युद्ध छिड़ चुका था। आप फ़ौज में कमीशन पाकर समुद्र पार चले गए। आजकल पाकिस्तान के ग्राम-विकास विभाग में कार्य कर रहे हैं।

इनकी कविताओं के दो संग्रह "जंज़ीरों के गीत" और "लहू तरंग" छप चुके हैं। गद्य में भी दो पुस्तकें छप चुकी हैं जिनमें से एक ......"उड़ते हुए खाके"...... इनके हास्य रस के लेखों का संग्रह है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुझे ज़ौके तमाशा ले गया तस्वीरख़ानों में

मिरे पेशे नज़र है एक सस्ते रेट का सिनमा
यही लाहौर के "मस्ताने मस्ती गेट" का सिनमा
वो शोर उठता है ऊँची सीटियों का फ़ह्‌शगानों का
कि जैसे कोई हंगामा इलेक्शन के ज़मानों का
उधर पर्दे से जैसे ही कोई औरत दिखाई दी
कि बच्चों ने इधर आग़ोशे मादर[1] की दुहाई दी
जो पिक्चर में ज़रा-सा भी विसाले यार हो जाए
तो अह्‌ले दिल को पूरी ज़िन्दगी दुश्वार हो जाए
उधर जब नर्गिसों और कर्गसों[2] में सामना होगा
इधर उश्शाक़े दिल बर दस्त[3] में महशर बपा होगा
कभी रक़्से मुसर्रत[4] में कभी जोशे रक़ाबत[5] में
बराहे रास्त सब शामिल हैं हीरों की महब्बत में
यहाँ जब फ़िल्म अकसर इत्तिफ़ाक़न टूट जाती है
तो अह्‌ले ज़ौक़ की नब्ज़े तहम्मुल[6] छूट जाती है
फ़ज़ा में गूँज उठती है कई अक़साम की गाली
कभी इस नाम की गाली कभी उस नाम की गाली
वो देखो एक ऊँचे पेड़ पर गाने लगा हीरो
तड़पकर ख़ुद ज़माने भर को तड़पाने लगा हीरो
अकेले हाथ से दस बीस तलवारें चलाता है
जहाँ चढ़ना भी मुश्किल है वहाँ से कूद जाता है

---

१. माँ की गोद ; २. गिद्ध ; ३. दिल हाथ में लिए हुए आशिक ; ४. आनन्द का नृत्य ; ५. शत्रुता का आवेश ; ६. धैर्य ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ये जब निकलेगा मोटर लेके टक्कर खाके आयेगा
बड़ी मेहनत से कोई हादिसा फ़रमा के आयेगा
अगर मुफ़लिस है ख़ुद तो इश्क़ मालामाल लड़की से
वगर ना ढूंढकर क़ल्लाशो[1] ख़स्ता हाल लड़की से
जो चेहरा सामने आया परी तिमसाल[2] है गोया
ये दुनिया ख़ूबसूरत लड़कियों का टाल है गोया
महब्बत में ख़याले ख़ुदकुशी पैहम[3] ज़रूरी है
कि मरना सख़्त लाज़िम और जीना कम ज़रूरी है
न घबराओ न घबराओ अगर ये मर भी जाएगा
तो हीरोइन की शादी पर यक़ीनन लौट आएगा
हीरोइन भी पुरानी मेहबाँ मालूम होती है
बसा औक़ात तो हीरो की माँ मालूम होती है
बग़ैर साज़ो नग़मा ख़ुदकुशी भी कर नहीं सकती
कि जब तक ठुमरियाँ ठुमरा न लेंगी मर नहीं सकती
कलेजा थाम लो मुजरे की महफ़िल जमने वाली है
ये महफ़िल जम गई साहिब तो फिर कबथमने वालीहै
मियाँ क़व्वाल ने लट इस तरह लटका के रक्खी है
कि जैसे रेस के घोड़े ने दुम कतरा के रक्खी है
अभी क्या है अभी इक गेरुआ साधू भी आएगा
फ़क़त आने के क्या मानी वो गाना भी सुनाएगा
ये साधू बात से हालात का रुख़ मोड़ देता है
कहानी के सब अज्ज़ाए परीशाँ[4] जोड़ देता है
वो देखो लब हिले, गाकर रहेगा जानते हैं हम
हमारे घर ही का तो माल है पहचानते हैं हम
हमारा और इस साधू का याराना पुराना है
कि हर पिक्चर में इक मुद्दत से उसका आना-जाना है

---

१. निर्धन ; २. परी जैसा मुख ; ३. निरन्तर ; ४. बिखरे हुए अंश ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बन्दर रोड, कराची

हर मकाँ ऐवान बर ऐवान बंदर रोड पर
हर दुकाँ जापान दर जापान बंदर रोड पर
हर नज़र में ज़ीस्त के अरमान बंदर रोड पर
हर क़दम पर मौत के सामान बंदर रोड पर
सरसराती साड़ियाँ ये लहलहाती दाढ़ियाँ
कुफ़्र बंदर रोड पर ईमान बंदर रोड पर
सद्र भी जौलानगाहे[1] इश्क़ो मस्ती है मगर
इश्क़ो मस्ती का बड़ा घमसान बंदर रोड पर
वाक़िआ इक इक जलीलुल क़द्र-बंदर रोड का
हादिसा इक इक अज़ीमुश्शान बंदर रोड पर
जुल्फ़े बंगालो रुखे पंजाबो रीशे मर्दे हुर
अज़ अटक ता साहिले मकरान बंदर रोड पर
ज़िन्दगी इक दौड़ सरपट दौड़ मरने की तरफ़
आदमी हैरानो सर गरदान बंदर रोड पर
छोड़कर लाहौर की गलियों को आख़िर आ बसे
सालिको[3] हसरत[4] से नुक्ता दान बंदर रोड पर
शेर अंग्रेज़ी थी बदर रोड की वरना ज़मीर
नज़्म लिख दे फ़ौज का कप्तान बंदर रोड पर

पैदा करो

शौक़ से लख़्ते जिगर नूरे नज़र पैदा करो
जालिमो थोड़ी-सी गंदुम भी मगर पैदा करो
क्या छछूंदर से निकाले हैं ये बच्चे शैख़ जी
क़िब्लए आलम[5] इन्हें बारे दिगर[6] पैदा करो

---

१. दौड़ने का मैदान; २. अति महान्; ३-४. उर्दू के दो प्रसिद्ध साहित्यकार; ५. जगत् पूज्य पीर; ६. दूसरी बार।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खाल चीते की बनी है शाल दोशे हुस्न[१] पर
तुम भी अपने मुँह पे कोई जानवर पैदा करो
वोटरो लीडर ने मोटर में ये की तक़सीमे कार
हम इधर पैदा करेंगे तुम उधर पैदा करो
शैख़,नासिह,मुहतसिब,मुल्ला—कहो किसकी सुनें
यारो कोई एक मर्दे मोतबर पैदा करो
मेरी दुश्वारी का हल चारा गरो ! दानिशवरो !
जल्द तर पैदा करो और मुख़्तसर पैदा करो
मेरी दर्वेशी के जश्ने ताज़ पोशी के लिए
एक टोपी तो ज़रा माई डियर पैदा करो
तेरे शेरे तर को ये औलादे आदम क्या करे
नै नवाज़ी[२] हो चुकी अब नैशकर[३] पैदा करो

× × ×

पिन खुली टाई खुली बकलस खुले कालर खुला
खुलते-खुलते डेढ़ घण्टे में कहीं अफ़सर खुला
आठ दस की आँख फूटी आठ दस का सर खुला
लो ख़तीबे शह्र[४] की तक़रीर का जौहर खुला
सच हैं मग़्रिब और मश्रिक़ एक हो सकते नहीं
उस तरफ़ बीवी खुली है इस तरफ़ शौहर खुला
तीरगी[५] क़िस्मत में आती है तो जाती ही नहीं
मेरे घर के बिलमुक़ाबिल कोयला सेंटर खुला
कोई टोके रोके उनको ये भला किसकी मज़ाल
मौलवी गुलशेर है क़स्बे में शेरे नर खुला
उनका दरवाज़ा था मुझसे भी सिवा मुश्ताक़े दीद[६]
मैंने बाहर खोलना चाहा तो वो अंदर खुला
आदमी एहसासे मनसब के मुताबिक़ क़ैद है
देख लो डिप्टी कमिश्नर बंद है रीडर खुला

१. सुन्दरी के कंधे पर ; २. बाँसुरी बजाना; ३. गन्ना ; ४. शहर का वक्ता ; ५. अंधकार ; ६. देखने का इच्छुक ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तब्अ शाहाना है मेरी वज़्अ दर्वेशाना है
आस्तीं में बंगला पिन्हाँ हाथ में छप्पर खुला
मैंने ग़ालिब के अदब से इसमें ग़व्वासी[1] न की
वरना था इस बह्र बे पायाँ में तो 'हियूमर' खुला

× × ×

जो कमेटी का भी मिम्बर हो गया
वो भी तक़रीबन मिनस्टर हो गया
इक ज़रा अफ़सर ने मूंछें छोड़ दीं
महकमा पूरा मुछन्दर हो गया
मुझ से साहिब ने कहा उल्लू हो तुम
हड़बड़ाया मैं कि "यस सर" हो गया
औरतें पर्दे से बाहर आ गईं
मौलवी 'लोटे' के अन्दर हो गया
जो मिडल तक पास कर पाया न था
देखता क्या हूँ एडिटर हो गया
फ़क्रो दर्वेशी[2] के उल्टे ज़ोर से
मैं मुसलमाँ से क़लन्दर हो गया
आप कुछ शरमा के लीडर बन गए
मैं ज़रा घबरा के नौकर हो गया
जिसकी दाढ़ी मुफ़लिसी में बढ़ गई
ज़ीनते मेहराबो मिम्बर[3] हो गया
मेरे शेरे तर पे हँस लेने के बाद
दीदए अह्ले नज़र तर हो गया
जाने महफ़िल था ख़ुदा बख्शे ज़मीर
अब तो इक मुद्दत से शौहर हो गया

---

१. गोता मारना; २. निवृत्ति और फ़क़ीरी; ३. मस्जिद के मेहराब और मेज़ की शोभा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तन आसानी नहीं जाती रियाकारी नहीं जाती
मियाँ बरसों में ये सदियों की बीमारी नहीं जाती
ये नुस्ख़ा भी बहुत उम्दा हुआ है अम्ने आलम का
लड़ाई हो न हो लड़ने की तैयारी नहीं जाती
अगरचे आठ-दस बच्चों ने घर में कुछ नहीं छोड़ा
मियाँ बारी के धर से रहमते बारी नहीं जाती
सुना है क़ैस पैदल दौड़ता है अब भी सहरा में
सुना है आज तक भी नज्द[1] में लारी नहीं जाती
जनाबे शैख़ यूँ चलते हैं इल्मो फ़ज़्ल को लेकर
किसी ठेले से जैसे कोई अलमारी नहीं जाती
ये मकतब जिन के खुल जाने से आँखें बन्द हो जाएँ
ये दानिश[2] जिसके आ जाने से बेकारी नहीं जाती
मियाँ गुलशेर ख़ाँ तुम भी हवा के रुख को पहचानो
जहाँ सारी चली जाती है फुलकारी नहीं जाती
ज़मीरे ज़ाफ़री साहिब उठो कुछ काम फरमाओ
फ़कत रोने से मेरी जान दुश्वारी नहीं जाती

आदमी

था कभी इल्म आदमी, दिल आदमी, प्यार आदमी
आजकल बंक आदमी क़स्र[3] आदमी कार आदमी
कुलबुलाती बस्तियाँ मुश्किल से दो चार आदमी
कितना कमियाब आदमी है कितना बिसियार आदमी
हो न हो लीडर है कोई या ज़मीदार आदमी
इस गिरानी में वगर ना इतना तैयार आदमी
आगे आगे ऊँट पर है मश्रिक़ें वुस्ता सवार
पीछे पीछे कुल्लहुम दस बकरियाँ चार आदमी

---

१. वह स्थान जहाँ मजनूँ का घर था; २. ज्ञान; ३. महल।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कितनी तेज़ी थी तबीअ़त में मगर शादी के बाद
रफ़्ता रफ़्ता हो गया किस दर्जा हमवार आदमी
पतली गरदन पतले अबरू, पतले लब पतली कमर
जितना बीमार आदमी उतना तरहदार आदमी
ज़िन्दगी नीचे कहीं मुँह देखती ही रह गई
कितना ऊँचा ले गया जीने का मेयार आदमी
मेरी आहट पा के वो चिल्ला के बोले कौन हो ?
हड़बड़ाया मैं कि मैं हूँ, मैं हूँ, सरकार आदमी
पहले कश्ती डूब जाती थी नज़र के सामने
अब गिरेगा बह्रे औक़ियानूस[1] के पार आदमी
आप ने जाना नहीं जाना तो पहचाना नहीं
था ज़मीरे जाफ़री भी इक मज़ेदार आदमी

× × ×

लोकल महाजिरीन पे ताज़ा निखार देख
मूंछों के ताव देख नज़र की बहार देख
मोटर पे उड़ रहा है वो तल्ला कुम्हार देख
है देखने की चीज़ इसे बार बार देख
ऐ मरहबा ये हुस्ने अदाए अलाट मेंट

औरतों की असेम्बली

बुआ को तो देखो न गहना न पाता
फ़क़त इक ग़रारा फ़क़त एक छाता
नहीं कुछ भी नामे ख़ुदा आता जाता
बजट हाथ में जैसे धोबन का खाता
इधर मिम्बरी छिड़ गई मिम्बरी से
उधर तिफ़्ल[2] रोने लगे गैलरी से
बआवाज़े शोरो शग़ब[3] बोलती हैं

---

१. एक समुद्र; २. बालक; ३. बहुत ज़ोर की आवाज़ में।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बअंदाज़े ग़ैज़ो गज़ब बोलती हैं
नहीं बोलती हैं तो कब बोलती हैं
पे जब बोलती हैं तो सब बोलती हैं
शहादत की अंगुश्त[1] इक़बाल पर है
कभी नाक पर है कभी गाल पर है

सपीचों में गोटे किनारी की बातें
बहू की क़िफ़ायत-शियारी की बातें
पड़ोसन की परहेज़गारी की बातें
ग़रज़ हर ब्याही कुँआरी की बातें
ब्लेड और टाई ये कट हो रही है
मगर इत्रो रेशम की हट हो रही है

---

१. तर्जनी ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजा मेंहदी अली ख़ाँ

इस युग के जिन कवियों ने जीवन और समाज के छिपे हुए नासूरों पर नश्तर चलाए हैं उनमें राजा मेंहदी अली खाँ का नाम भी लिया जाता है। वह मौलाना ज़फ़र अली खाँ के खानदान में से हैं। अन्य पत्रिकाओं में काम करने के पश्चात् आल इंडिया रेडियो में चले गए थे। इनकी एक पुस्तक 'मिज़राब' के नाम से छप चुकी है। 'चोर और खुदा', 'काने के आंसू', 'अजी पहले आप', 'एक चिहिलुम पर', 'सातवाँ शौहर', आपकी प्रसिद्ध कविताएँ हैं। आजकल बम्बई में हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक चिहिलुम[1] पर

बहुत ख़ूबसूरत बहुत नेक था वो
हज़ारों जवानों में बस एक था वो
किसी से भी रखी न उसने अदावत
कि पेशा था उस नौजवाँ का शराफ़त
हमारे मुहल्ले में वो जब भी आता
ख़ुदा उसको बख़्शे हमें मिल के जाता
ना रो रोके बेहाल हो ऐ दुल्हन तू
न कर इस क़दर आह रंजो मिहन तू
वो जन्नत में ख़ुशियाँ मनायेगा मत रो
वो हूरों से अब दिल लगायेगा मत रो
वो आख़िर हमे भी तो था जाँ से प्यारा
मगर दे लिया हमने दिल को सहारा
न कर बैन इतने न रो इतना प्यारी
हमारे कलेजे पे चलती है आरी

× × ×

रज़िया ज़रा गर्म चावल तो लाना
ज़किया ज़रा ठंडा पानी तो लाना
बहुत ख़ूबसूरत बहुत नेक था वो
हज़ारों जवानों में बस एक था वो

---

१. चालीसवाँ, किसी व्यक्ति की मृत्यु के चालीस दिन उपरान्त होने वाला धार्मिक कृत्य ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगाना ज़रा शोर्बा और ख़ाला
बढ़ाना इधर को ज़रा ये प्याला
हमारे मुहल्ले में वो जब भी आता
ख़ुदा उसको बख़्शे हमें मिल के जाता

पड़ा है पुलाओ में घी डालडे का
ख़ुदा तू ही हाफ़िज़ है मेरे गले का
दुल्हन से कहो आह इतना न रोए
बिचारी न बेकार में जान खोए
अरी बोटियाँ तीन सालन में तेरे
ये छिछड़ा लिखा था मुक़द्दर में मेरे
बहुत ख़ूबसूरत बहुत नेक था वो
हज़ारों जवानों में बस एक था वो
दुल्हन घर में चूरन अगर हो तो लाना
नहीं तो ज़रा खारी बोतल मंगाना
न कर बैन इतने न रो इतना प्यारी
हमारे कलेजे पे चलती है आरी

उससे और उसीसे

(१)

ज़मीं के चाँद तिरा हुस्न आस्मानी है
हर एक जल्वा तिरा इक नई कहानी है
ज़हे नसीब कि तू हो मिरी शरीके हयात
हो तेरे जल्वों से, रख़शिन्दा[१] जिंदगी की रात
है मेरे उजड़े हुए घर को इंतिज़ार तिरा
तू ऐ बहार इसे आके रश्के ख़ुल्द[२] बना
घर आऊँगा जो सरे शाम मैं बेहाल
निहाल दिल को करेंगे ये तिरे फूल से गाल

---

१. प्रकाशमय ; २. ऐसा स्थान जिस पर स्वर्ग भी को ईर्ष्या हो ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गले में होंगे तिरे हार मेरी बाँहों के
चमक उठेंगे सितारे तिरी निगाहों के
करेगी ज़िन्दा मुझे तेरी दिलनशीं गुफ़्तार[1]
मिरे चमन में हमेशा रहेगा हुस्ने बहार
खिलेगी दिल की कली रूह शादमाँ[2] होगी
बिहिश्त होगी उसी घर में तू जहाँ होगी
क़दमनुमाओ फ़िरोदआ कि खाना खानएतुस्त[3]

(२)

ख़ुदा के वास्ते खोलो भी आके दरवाज़ा
मैं कितनी देर से बाहर खड़ा हूँ चीख रहा
अगर अलील[4] न हो आपका मिज़ाजे शरीफ़
तो पंखा झलिये ज़रा उठके कीजिए तकलीफ़
ये चारपाई मिरी टेढ़ी क्यों बिछाई है
भला इकन्नी ये क्यों फ़र्श पर गिराई है
इलाही कौन ये पानी का देगा इतना बिल
ख़ुदा के वास्ते कर नल को बंद ए काहिल
चपातियाँ मेरे अल्लाह सब-की-सब कच्ची
तमाम उम्र ही शायद रहोगी तुम बच्ची
बस उठ भी अब कोई ऐसा बुरा तो हाल नहीं
ये मुझ ग़रीब का घर है ये हस्पताल नहीं
दबा दे पैर मिरे उठके उठ भी उठ ओ सुस्त

सातवाँ शौहर

मेरे प्यारे सातवें शौहर तुझे मेरा सलाम
मेरी नज़रें तेरी बाँदी मेरा दिल तेरा गुलाम

× × ×

१. मन को छूने वाली बात ; २. सुखी ; ३. क़दम रख और आ कि यह घर तुम्हारा घर है ; ४. अस्वस्थ ;

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाद मुद्दत के बहार आई कली दिल की खिली
कितनी खुश हूँ आज तेरे इश्क की जन्नत मिली
घर की तारीकी में फिर रौशन हुआ माहे तमाम[१]
मेरे प्यारे सातवें शौहर तुझे मेरा सलाम

× × ×

तू मेरी दुनिया में आया है बहारों की तरह
शर्मगीं आँखें चमक उठ्ठीं सितारों की तरह
मैं नशे में खो गई पी कर तेरी उल्फ़त के जाम
मेरे प्यारे सातवें शौहर तुझे मेरा सलाम

× × ×

आज कानों ने सुनीं हैं सैकड़ों शहनाइयाँ
पास आजा ले रहा है आज दिल अंगड़ाइयाँ
बैठ जा कुछ देर मेरे पास कर दे शाद काम
मेरे प्यारे सातवें शौहर तुझे मेरा सलाम

× × ×

तू अगर कह दे तो कर देती हूँ मैं सब राज़फ़ाश[२]
इत्तिफाकन सबके सब साथी वह निकले बदमआश
घर के कुछ इलज़ाम मुझ को पीटते थे सुबहो शाम
मेरे प्यारे सातवें शौहर तुझे मेरा सलाम

× × ×

जो बहार आई मेरे घर में वह दोरोज़ा रही
मैं बनी दुल्हन मगर मैं तो सदा बेवह रही
शुक्र बारी[३] है तेरा दामन लिया है मैंने थाम
मेरे प्यारे सातवें शौहर तुझे मेरा सलाम

× × ×

सातवें शौहर ये ठंडी आहें क्यों भरता है तू
वह हैं पाँचों मेरे भाई मुझ पे शक करता है त

१. पूरा चाँद ; २. स्पष्ट भेद ; ३. ईश्वर ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो नहीं सकता किसी का भी जो तेरा है मुकाम
मेरे प्यारे सातवें शौहर तुझे मेरा सलाम

× × ×

उन सभों को बीवियाँ कुदरत ने दी हैं बदमिज़ाज
पूछने आते हैं मुझसे अपने दुखड़ों का इलाज
तेरी तारीफें किया करते हैं मुझ से सुबहो-शाम
मेरे प्यारे सातवें शौहर तुझे मेरा सलाम

× × ×

तौबह तौबह मैं तो इन झगड़ों से अब तंग आ गई
तेरी दौलत के सुनहरी जाल में घबरा गई
कौन-सी कोठी ज़मीनें तू ने लिख दीं मेरे नाम
मेरे प्यारे सातवें शौहर तुझे मेरा सलाम

× × ×

मैंने तेरे साथ रो-रो कर गुज़ारे इतने साल
उफ़ तेरे जुल्मों सितम ने कर दिया मुझको हलाल
बैठे-बैठे मैंने अपनी ज़िन्दगी कर ली हराम
मेरे प्यारे सातवें शौहर तुझे मेरा सलाम

× × ×

इश्क तेरा, तेरे बच्चे सब के सब बालाए ताक[1]
चाहे मेरी जान जाए आज तो लूँगी तलाक़
सब महल्ले में डबोया मैंने अपना नेक नाम
मेरे प्यारे सातवें शौहर तुझे मेरा सलाम

× × ×

गरचे उस्तानी रही मैं इश्क के इस्कूल में
मैंने दलदल में फंसा ली ज़िन्दगानी भूल में
ज़ेब देता है मुझे गर तुझ से लूँ मैं इंतकाम[2]
मेरे प्यारे सातवें शौहर तुझे मेरा सलाम

× × ×

१. ताक़ पर अथवा एक तरफ; २. बदला।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आठवें शौहर कहाँ है तू चला आ एक बार
मेरी आँखें कर रही हैं कब से तेरा इंतज़ार
राह में बैठी हूँ कब से बिछाकर मैं अपना दाम[1]
मेरे प्यारे आठवें शौहर तुझे मेरा सलाम

× × ×

आगे क्या लिखूँ मैं अब खुद आप बढ़ते जाइये
खुद ही लिख लीजिये कहानी और पढ़ते जाइये
हशर[2] तक यह सिलसिला मेरा नहीं होगा तमाम
आने वाले शौहरो आओ तुम्हें मेरा सलाम

× × ×

१. जाल ; २. प्रलय ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फुरकत काकोरवी

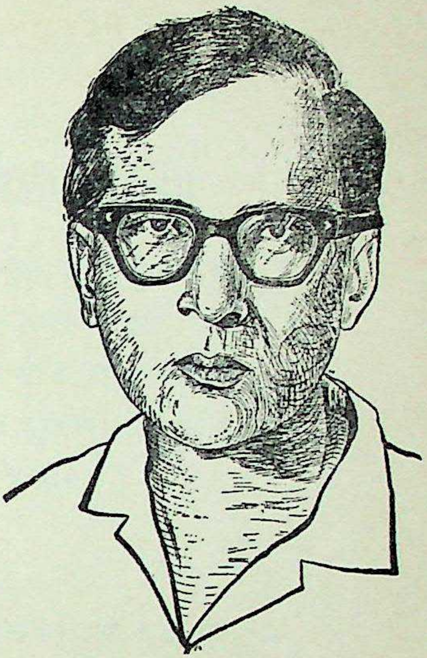

आपका नाम गुलाम अहमद है। साहित्य और उर्दू में एम० ए० हैं। आपका जन्म १९१० में हुआ। हास्य रस की कविताओं का कोई संग्रह अभी तक नहीं छपा, परन्तु गद्य में हास्य-रस के विषय पर चार पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उर्दू अदब में 'तन्जो-मिज़ाह', 'सैदो-हदफ़', 'कफ़े गुल फरोश' और 'मुर्दा दिल खाक जिया करते हैं' का अच्छा स्थान है। इनके अतिरिक्त, दो पुस्तकें 'मुदावा' और 'मादला' भी छप चुकी हैं। इनमें नई शायरी का खाका उड़ाया है और प्रगतिशील कवियों की कविताओं की पैरोडी लिखी है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फ़ैमिली प्लानिंग

हमनशीं मत पूछ शादी का समाँ
आह! ऐ हिन्दोस्ताँ जन्नत निशाँ
इस जगह गर आज शादी कीजिए
दूसरे ही दिन से औलादों के वेगन लीजिए
और इस वेगन में फिर
बच्चों का ज़ोर
हम सब का ज़ोर
कुछ आप का कुछ आप का कुछ आप का
और फिर इस जोर में इस शोर में
कान में माँ-बाप दे लें अंगुलियाँ
भूल जाएँ पी कहाँ
और घबराकर कहें
ये क्या हुआ ?
और इस पर सब कहें अच्छा हुआ
देश की ज़ीनत बढ़ी
इज़्ज़त बढ़ी
शोहरत बढ़ी
जो किया
अच्छा किया
जो कुछ हुआ
अच्छा हुआ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और फिर—हर फ़र्द की ये माँग हो
आस्माँ बच्चों का हो
सारा जहाँ—बच्चों का हो
चाँदनी बच्चों की हो
और चाँद हो बच्चा बदोश[1]
ताकि हर शय देश की
आये नज़र बच्चा फ़रोश
हर दम यही इक फ़िक्र हो
औलाद ही का ज़िक्र हो
हर सम्त चाहे काल हो
सारा जहाँ पामाल हो
बद हाल हो बे हाल हो
कंगाल हो
बच्चों से माला माल हो
घर में अगर खाना नहीं
पानी नहीं दाना नहीं
दौलत नहीं सरवत नहीं
शौहरत नहीं इज़्ज़त नहीं
चाहे कोई नाशाद हो
आबाद हो बर्बाद हो
पर गोद में औलाद हो
घर में अगर चिलमन नहीं
रोज़न[2] नहीं आँगन नहीं
इक शमअ तक रौशन नहीं
आटा नहीं राशन नहीं
पर सोच तो ऐ हम नशीं
बच्चा नहीं तो कुछ नहीं

---

१. कंधे पर बच्चे को लिये ; २. छिद्र ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इक दिन सफ़र को हम चले
ग्रौर रेल में हम घुस गए
बच्चों से हम मुँह मोड़ कर
सारे क्लंडर छोड़कर
कुछ इस तरफ़ कुछ उस तरफ़
ग्रौर घेर लीं सीटें तमाम
रक्खा मगर ये एहतिमाम
सारे मुसाफ़िर हों खड़े
हर सम्त हों बच्चे पड़े
इक शोरो हंगामा रहे
गर्दिश में पैमाना रहे
कोई जिये चाहे मरे
ग्रपना सफ़र ग्रच्छा कटे
बच्चों की पैदाइश में हम
चेंपें की ग्रालाइश[1] में हम
वक्फ़े कभी देते नहीं
दुनिया से हम हेटे नहीं
लड़की मिले लड़का मिले
लूला मिले लंगड़ा मिले
पोती मिले पोता मिले
सीधा मिले टेढ़ा मिले
हर साल कुछ मिलता रहे
ग्रौर फूल इक खिलता रहे
जब जानकी का घर बसा
ग्रौर बारहवाँ बच्चा हुग्रा
बोले ये सुनकर जानकी
सब देन है भगवान की

---

१. गंदगी ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाबा ने पूछा—क्या हुआ
बोले कि फिर लड़का हुआ
बोले चलो अच्छा हुआ
औलाद का कोटा बढ़ा
बोलीं कि ये क्या खाएगा
इसके लिए क्या आयेगा
क्योंकर ये पाला जाएगा
बोले—यूँ ही पल जाएगा
इसका अभी से ज़िक्र क्या
इसकी अभी से फ़िक्र क्या
हम सब फ़क़ीरों को यहाँ
इतनी भला फ़ुरसत कहाँ
औलाद भी पैदा करें
और बैठकर सोचा करें
ये सब कहाँ से खाएँगे
पैसे कहाँ से आएँगे
कपड़े कहाँ से लाएँगे
ये काम है सरकार का
इससे हमें क्या वास्ता

× × ×

हाँ गर हकूमत ये कहे
बच्चे न अब पैदा करो
कोई नया धंधा करो
इस बात पर उससे कहो
फ़ौरन विज़ारत तोड़ दो
हमको हमीं पर छोड़ दो
बच्चों की रखवाली करो
हम सबकी नक़्क़ाली करो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ये काम है औलाद का
माँ बाप का
ये अपना-अपना कार है
आज़ादिए इज़हार है
सरकार पर क्या बार है
हर फ़र्द ज़िम्मेदार है
औलाद का
उफ़ताद का
ग़ल्ला न हो
पैसा न हो
कपड़ा न हो
लत्ता न हो
चिड़िया का इक बच्चा तो हो
वो जिनका बेहतर हाल है
उनका भी ये अहवाल है
जब साइकिल पर चल दिये
कुल फ़ैमिली अपनी लिये
दो टोकरी में हैं निहाँ
दो का है डंडे पर मकाँ
शानों को दो पकड़े हुए
गर्दन में दो जकड़े हुए
है केरियर पर माँ लदी
लड़की है खूंटी से बंधी
सैकिल ने फ़र्राटे भरे
लड़कों ने खर्राटे भरे
फिर ज़न ज़नाज़न ज़न ज़नन ज़न ज़न ज़नाज़न ज़न ज़नन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाद की बातें

तालीम की तमाम तो कालिज से यूँ छुटे
जैसे कि कोई साँड को खूंटे से खोल दे
बेकार थे ज़रूर प बाकार भी रहे
इक दो पे मुस्कराए तो दो-चार पर हँसे
कुछ दिन तो आशिक़ाना ख़तों में गुज़र गए
दो साल ख़ैरियत में पतों में गुज़र गए

जो हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से कुछ मुलतफ़ित[1] हुईं
उनके यहाँ भी थैलियाँ फ़र्माइशों की थीं
हम मुफ़लिसी बदोश[2] उधर से ज़िदें बढ़ीं
अपनी तरफ़ से हाँ थी उधर थी नहीं नहीं
एक-एक करके रोज़ यूँ ही दिन कटा किये
और हम ख़याले यार में ज़ुल्फ़े बटा किये

बिरते पे गर्चे बाप के थे मुफ़्त पल रहे
पर मुफ़लिसाने दह्र में भी बे बदल रहे
यानी हम अपने इश्क़ में बिलकुल अटल रहे
हर दम रहा ख़याल कि दिल दर बग़ल रहे
हमने उठाए हिज्र में यूँ वस्ल के मज़े
फ़ोटो हम उनका सीने से लिपटा के पड़ रहे

माँगे के सूट डाट के उनसे भी हम मिले
लेकिन जब असल रूप में इक दिन नज़र पड़े
तहमद में हमको देख के पहले तो वो हँसे
फिर मुँह बना के देर तलक घूरते रहे
बोले ये शक्ल ख़ून के आँसू रुलाएगी
ये जीती मक्खी हमसे तो खाई न जाएगी

१. आकृष्ट ; २. निर्धनता-ग्रस्त ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इक रोज़ एक ख़त जो किसी दिलजली का था
क्या जाने कैसे बाबा के वो हाथ लग गया
पीरी पे वाँ घमंड इधर इश्क़ का नशा
अलक़िस्सा हुस्नो इश्क़ पे इक कोह फट पड़ा
ये बात मार-पीट की मंज़िल से जा लगी
इस आशिक़ी में इज़्ज़ते सादात[1] भी गई

कुत्तों ने बाज़ के हमें रपटाया बारहा
लेकिन न फ़र्क़ इश्क़ में इससे कभी पड़ा
जब भी सुना रक़ीब के घर पर है जमघटा
मैं कूचए रक़ीब में भी सर के बल गया
आवाज़ बादे अक़्द[2] ये कानों में भर गई
उठिये बस अबकि लज़्ज़ते ख्वाबे सहर[3] गई

बकरे

उर्दू बाज़ार जो पहुँचे तो वहाँ क्या देखा
कोई बकरी पे लदा था कोई बकरे पे लदा
उन्हीं बकरों में कई साहिबे औलाद भी थे
और उस ग़ोल में दस पाँच के दामाद भी थे
इनमें वामिक़ भी थे मजनूं भी थे फ़रहाद भी थे
सैदे अफ़लाक[3] भी थे आशिक़े नाशाद भी थे
इश्क़ की शोब्दाबाज़ी के कई मारे थे
हुस्न और इश्क़ के मक़तल में भी पौ बारे थे
बकरियाँ कितने घरानों की भगा लाए थे
और इस जुर्म में इग़वा की सज़ा पाए थे
थे कई उनमें जड़ाव तो कई सादे थे
चार टाँगें जो न होतीं तो ये शहज़ादे थे

१. सैयद (जो मुसलमानों की श्रेष्ठ जाति है) का सम्मान ; २. विवाह के बाद ; ३. भोर की नींद का आनन्द ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रेशमी खाल थी क़ालीन नुमा बकरे थे
उनको डोरी के सहारे से मलिक पकड़े थे
दुम पकड़कर कोई तहमद ज़दा जब देखता था
बकरियाँ रोती थीं बकरों के थे औसान ख़ता
एक बधिया जो जवाँ साल था अलबेला था
उम्र भर जो न जवानी से कभी खेला था
कान उठाकर किसी ज़ालिम ने जो उसको तोला
"मैं" कुछ इस ज़ोर से की जैसे लगा हो गोला
रस्सियाँ तोड़ के जब माइले पर्वाज़[1] हुआ
आहू-ए दश्त[2] का मैदान में दम साज़ हुआ
लोग चिल्लाए वो उछला वो चला वो भागा
सारे बकरों ने कहा दिल में अबे ख़ूब बचा

बंगाल की रक्क़ासा[3]

नाचिये नाचिये—पायल के बग़ैर
जिस्म उरियाँ[4] ही रहे
शोला आफ़शाँ[5] ही रहे
नाचिये नाचिये—
भूक और मौत का रक़्स
मेरे बंगाल का रक़्स
नाचिये सोचती क्या हैं—उठिये
आप बंगाल से कब आई हैं
नग़्म-ओ-रक़्स का पैकर बनकर
जिस्म को बेचिये—पत्थर बनकर
नाचिये नाचिये—
मैं पागल हूँ—
यूँ ही बका करता हूँ

---

१. उड़ने को तैयार ; २. जंगल का हिरन । ३. नर्त्तकी ; ४. नग्न ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ख़िज़र तमीमी

मियाँ मौला बख्श ख़िज़र तमीमी का जन्म चन्योट ज़िला झंग में १६०६ में हुआ। वहीं प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। फिर लाहौर इस्लामिया कालेज से एम० ए० और ला० कालेज से एल० एल० बी० की परीक्षाएँ पास कीं। इसके पश्चात् दैनिक पत्रिकाओं में काम करते रहे। 'शीराज़ा' और 'नमकदान' हास्य रस की प्रसिद्ध पत्रिकाएँ थीं। पहले-पहल आपकी कृतियाँ उन्हीं में प्रकाशित होती रहीं। पंजाब सरकार ने आपको ग्राम सुधार और पंचायत विभाग का शिक्षा अधिकारी नियुक्त किया। आप 'कलंदर' के नाम से भी हास्य-रस के लेख लिखते रहे हैं। आजकल आप वकालत करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंहगाई

ऐ खिज़्र अजब रंग पे नैरंगे जहाँ[1] है
आँखों तले हर वक्त क़ियामत का समाँ है
अज़ बस्कि[2] गिरानी का यहाँ सिक्का रवाँ है
सर अपना भी अब दोश[3] पे इक बारे गिराँ[4] है
जीने के तसव्वुर से भी होती है गरानी
तुफ़ इश्क़ पे और जाये जहन्नम में जवानी

× × ×

मज़दूर जो हैं उनके लिए काम मिले हैं
और माले तिज़ारत के बहुत दाम मिले हैं
सन्अत[5] को भी कुछ औज के अय्याम[6] मिले हैं
दौलत के तो दीदार हमें आज मिले हैं
पद में फ़राग़त[7] के मगर क़ह्त निहाँ[8] है
या धूप के होते हुए बारिश का समाँ है

× × ×

अब आये कहाँ अतलसो कमख़ाब की चादर
इक चादरे इस्मत[9] है कि है आब की चादर
जी में है पहन लीजिए बस ख़्वाब की चादर

---

१. संसार का उलट-फेर ; २. अधिकतर ; ३. कंधा ; ४. भारी बोझ ; ५. उद्योग ; ६. दिन ; ७. समृद्धि ; ८. निहित ; ९. सतीत्व की चादर ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

या शब को चुरा लीजिए महताब[1] की चादर
जीते हों तो मलबूस हों उरियानिये तन से
मर जायें तो आज़ाद रहें फ़िक्रे कफ़न से

× × ×

चीनी गई ऐसी कि वो बाहर है न घर में
अफ़सोस कि अब हिज्र[2] हुआ शीरोशकर[3] में
उस लब पे शकरख़ंद[4] नहीं आज नज़र में
शीरीनी भी बाक़ी नहीं अशआरे खि़ज़र में
कहता है कि ये फ़न्ने सुख़न खेल नहीं है
तर कैसे ज़बाँ हो कि यहाँ तेल नहीं है

हाथ को खानो

ये है आज ही रात की दास्ताँ
कि मेहमान थे मेरे इक मेह्रबाँ
ग़रीबाना खानों को वो देख कर
हुए सूरते बाज़ कुछ तेज़ पर
मुझे टालना उसका दुश्वार है
कि दुर्रे नज़र का ये इसरार है
दिखाऊँ मैं हज़रत के खाने का ढंग
लिखूं उनके लुक़मे उड़ाने का रंग
मगर किस तरह माजरा ये लिखूं
कहूँ भी तो ये बात क्यों कर कहूँ
ज़बाँ बंद बत्तीस दाँतों में है
कि फिर शोर कुछ उनकी आँतों में है

१. चन्द्र ; २. वियोग ; ३. दूध और चीनी ; ४. मीठी हँसी ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो थीं दिक़्क़तें कह चुका बरमला[1]
ग़रज़ देखिये हाथ उनका चला
प्लेटों में हलचल मचाता हुआ
वो चमचे से चमचा लड़ाता हुआ
पुलाओ में सालन मिलाता हुआ
वो जल-थल का आलम रचाता हुआ
वो बोटी पे चढ़कर लिपटता हुआ
वो रोटी से बढ़कर चिमटता हुआ
फ़क़त शोरबे से खिसकता हुआ
मुरब्बे से जाकर पिचकता हुआ
गया दाल पर दनदनाता हुआ
वो मिर्चों से दामन बचाता हुआ
वो चमचे से चिल्लू बनाता हुआ
वो आलू को उल्लू बनाता हुआ
सेवइयों पे सौ जाँ से मरता हुआ
उधर लाड लड्डू से करता हुआ
पसंद इस पसंदे को करता हुआ
तो चटनी पे चटख़ारे भरता हुआ
समोसे में ख़ुद को समोता हुआ
उधर खोये के होश खोता हुआ
जलेबी पे याँ पेच खाता हुआ
कटोरे कहीं खनखनाता हुआ
ये बर्फ़ी का दिल बर्फ़ करता हुआ
ये ज़र्दे का मुँह ज़र्द करता हुआ

१. खुल्लम-खुल्ला।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुलाओ पे पिल-पिल के आता हुआ
तो फिरनी पे फिर-फिर के आता हुआ
निवाले से कश्ती बनाता हुआ
तो हलवे के गोले उड़ाता हुआ
वो खुलता हुआ और जुड़ता हुआ
वो हिलता हुआ और मुड़ता हुआ
वो जबड़ों में बोटी मसलता हुआ
उसे बिन चबाये निगलता हुआ
वो कल्लों से टीले बनाता हुआ
और आँखों को पीछे छुपाता हुआ
लबों पर ज़बाँ को फिराता हुआ
लिपटते हुए फैल जाता हुआ
सिसकता सिमटता सिरकता हुअ
लपकता लहकता लटकता इधर
बिगड़कर वो कफ़[1] मुँह पे लाता हुआ
वो ग़ाज़ी है यूँ खाना खाता हुआ
समझकर मिरे घर को जाए वफ़ा[2]
न हिल्लद न टल्लद न जुँबद ज़जा[3]
ग़रज़ इस तरह हैं मिरे मेहबाँ
बस अब देख लें शाइरे नुकता दाँ
वो सूदे व अकबर का आबे लुडोर
यहाँ खिज्र की बे ज़वानी का ज़ोर

१. झाग ; २. प्रेम-स्थान; ३. अपने स्थान से नहीं हिलता था।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सारंगी और तबला

दुनिया भर के बेफ़िक्रों ने कल बज़्मे सुरूद[1] सजाई थी
क्या दिल को मसलता था तबला क्या सारंगी घबराई थी
बिस्मिल की रगेजाँ[2] बनती थीं ताऊस की तारें लर्ज़िश[3] से
चाय का प्याला दौर में था हुक़्क़े ने धूम मचाई थी
रिन्दों ने झंडे गाड़े थे ज़ुह्हाद[4] ने डेरे डाले थे
इस दैरो हरम की महफ़िल में मूसीक़ी गाने आई थी
याँ अश्कों से पुर सारंगी वाँ पेचोताब में था तबला
गज़भर की ज़बाँ याँ चलती थी वाँ हाथों की बन आई थी
वाँ थाप के अब्र[5] गरज़ते थे नग्मों को फुआरें पड़ती थीं
याँ हर दिल पर मूसीक़ी के कुहरे ने क़नात लगाई थी
उड़ती थीं फ़िज़ा भर में तानें थी चाल सबा की मस्ताना
तक़दीर से बीच में दोनों के जा बैठा शाइर दीवाना

× × ×

सारंगी बोली तबले से तुम यूँ ही शोर मचाते हो
ऐ मुँह फट तबले दीवाने क्यों कान हमारे खाते हो
आवाज़ तुम्हारी कौए-सी और शक्ल छलावे-सी तेरी
इन मीठी-मीठी तानों [illegible] तुम रंग में भंग मिलाते हो
लानत है तुम्हारे जीने पर आराम नहीं इज़्ज़त भी नहीं
मैं गोरों में जा फलती हूँ तुम सर अपना पिटवाते हो
है ख़ाम[6] अभी तक इश्क़ तिरा कुछ सब्र नहीं कुछ ताब नहीं
याँ तान उड़ी इक मीठी-सी वाँ थाम के दिल रह जाते हो

---

१. गाने बजाने की महफ़िल ; २. सबसे बड़ी खून की रग जो दिल में जाती है ; ३. कंपन ; ४. संयमी ; ५. बादल ; ६. अपरिपक्व ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मैं राजदुलारी अलबेली नारी हूँ प्रेम पुजारिन हूँ
तुम मूंडी काटे मर्दक हो हर जा पर धक्के खाते हो
तहज़ीब तुम्हें मंज़ूर नहीं और अक़्ल कहीं दस्तूर नहीं
तुम भीम की तानों में बाहर क्यों आपे से हो जाते हो
नाज़ों से पली शहज़ादी हूँ मैं नारी महलों वाली हूँ
तुम हब्से दवाम[1] के क़ैदी हो संदूकों में डट जाते हो
जब सारंगी ने तबले से यूँ दिल शिकनी का क़लाम किया
कुछ देर तो वो ख़ामोश रहा फिर भाभीजान को सलाम किया

× × ×

यूँ कहने लगा सारंगी से जलती पर तेल गिराती हो
हम रंजोअलम के मारे हैं तुम आकर और सताती हो
उश्शाक़[2] से मुँह फेरा क्यों फिर तुमने हमें आ घेरा क्यों
रहने दो उसे चुप मजबूरन क्यों मेरी जबाँ खुलवाती हो
मैं ज़ंजबार का शहज़ादा मैदान में आकर ज़ैग़म[3] सा
जब एक धाड़ लगाता हूँ तुम पर्दों में डर जाती हो
पैमाने वफ़ा[4] जिससे बाँधूं मैं पास उसी के रहता हूँ
तुम हरजाई हो हर इक के पहलू में दिल बहलाती हो
कुछ लुत्फ़ है सीना कोबी[5] में सर फोड़ने में हम मस्तों को
बी ! ये तो इश्क़ के जेवर हैं तुम यूँ ही हमको बनाती हो
इज़्ज़त पे हमारी हर्फ़ज़नी अल्लाह ग़नी अल्लाह ग़नी[6]
वो वक़्त बड़ी बी भूल गईं जब कान अपने खिचवाती हो
मैं तेरी शमीमे नग़्मा[7] को मानिन्दे नसीम उड़ाता हूँ

१. उम्र भर की क़ैद ; २. प्रेमीगण ; ३. शेर ; ४. प्रेम करने का वचन ; ५. छाती पीटना ; ६. यह विस्मय सूचक पद है ; ७. गीत की सुगन्ध ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ये मेरी थाप की बरकत है दिल बज़्म में मसले जाती हो
जब लड़के मिलकर गाते हैं इर्फ़ान की तानें उड़ाते हैं
हाथों से मेज़ बजाते हैं तुम याद कब उनको आती हो
हैं मलिकए मूसीक़ी से मुझे नज़दीक तरीं तुझसे रिश्ता
हम राह पे तुझको लाते हैं जब लय में भटक-सी जाती हो
मैं आज़रे इश्क़[1] की ताबिश[2] से दिल महफ़िल के गरमाता हूँ
ताऊस तम्बूरे को तुझको दिन में तारे दिखलाता हूँ

× × ×

ये सुनकर शम्सुद्दीन डरे तलवार मबादा[3] चल जाय
याँ तबला तड़पता रह जाय सारंगी रोती रह जाय
चुमकार के सारंगी से कहा तुम सीधी-सादी भोली हो
जेबाँ[4] नहीं गर यूँ मुँह में तिरे अनजानों की-सी बोली हो
तबले के वकीले मुतलक़[5] ने वाँ हाथ से उसको समझाया
अच्छा नहीं ख़ूँ की लहरों से गर महफ़िल भर में होली हो
तुम ज़ंजबार के शहज़ादे सारंगी सारंगी ठहरी
फबती ही नहीं शहज़ादों के गर ऐसी बोली ठोली हो
ख़ामोश हुईं बी सारंगी और तबला सुम्मुम बुकमुन[6] था
यूँ जैसे किसी ने ज़बाँ अपनी कौसर[7] के आब से धोली हो
अलक़िस्सा गिछड़े दोस्त मिले नै झगड़ा था नै शक्वा था
नै तन तना तन तन तन तन थी नै ताकड़ ताकड़ धय्या था

१. प्रेम के आज़र (आज़र एक निपुण मूर्तिकार थे) ; २. दीप्ति ; ३. ऐसा न हो कि; ४. उचित ; ५. ऐसा वकील जिसे मुअक्किल से पूरा अधिकार प्राप्त हो ; ६. गूँगा और बहरा ; ७. स्वर्ग का एक कुंड ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शहबाज़

इनका नाम सुल्तान अहमद है। अमरोहे के एक प्रतिष्ठित खानदान से हैं। २३ जनवरी, १९१० को पैदा हुए। बाद में हिन्दू हाई स्कूल, अमरोहा में उर्दू के अध्यापक रहे लेकिन नज़र खराब हो जाने के कारण नौकरी छोड़ दी। आजकल एक इस्लामी संस्था में फारसी और उर्दू की शिक्षा देते हैं। शायरी का शौक बचपन से था। पहले 'मुस्लिम' तखल्लुस था, फिर सन् १९५० में हास्य-रस की कविता लिखनी आरम्भ की, तो तखल्लुस बदलकर 'शहबाज़' रख लिया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुफ़लिस का जो हमदर्द हो मज़दूर का ग़म ख़्वार
ऐसा कोई बिरला कोई टाटा नहीं मिलता
जूते तो बहुत मिलते हैं ऐ हज़रते शहबाज़
बाटा की दुकाँ पर मगर आटा नहीं मिलता

× × ×

क्या हल हुआ है ग़ल्ले को क़िल्लत का मसअला
शहबाज़ आओ हाथ मिलाओ पुलाओ का
तजवीज़ पास करके ज़ियादा उगाओ की
बिल पेश करने वाले हैं वो कम जनाओ का

× × ×

यादे अय्याम कि हर भट्टी पे बिकती थी शराब
और हम पीते थे याराने मय आशाम[1] के साथ
अब तो ये हाल है शहबाज़ कि मुद्दत में कहीं
किसी दावत ही में मिल जाती है हुक्काम[2] के साथ

× × ×

हज़रते अकबर से जाकर कोई कह देता ये काश
जिसको डासन ने बनाया था वो जूता चल चुका
अब तो राइज है खड़ाऊँ शह्र पीलीभीत को
यानी लकड़ी चल रही है और चमड़ा चल चुका

१. मद्यप मित्र; २. अधिकारी गण।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साइंस दाँ उड़ाके जहाज़ों को चन्द मील
मग़रूर क्या है दह्र में बर्क़ और भाप पर
देखे हमारे सूफ़िये आली मक़ाम[१] को
अर्शे बरीं[२] तक उड़ाते हैं ढोलक की थाप पर

× × ×

चले तो हैं जनाबे शैख़ मैदाने तरक्क़ी में
मगर हज़रत कहीं इस राह में हद से न बढ़ जायें
सिनेमा हाल की सीढ़ी पे पाए इर्तिक़ा[३] रखकर
मुझे ये ख़ौफ़ है बामे सुरय्या[४] पर न चढ़ जायें

× × ×

मेमारे सनम ख़ानए मिल्ली[५] होता
बढ़िया-सी किसी पोस्ट पे दिल्ली होता
मनसूबे बनाने में गुज़र जाती उम्र
ऐ काश कि मैं भी शैख़चिल्ली होता

× × ×

जुब्बा दर बर[६] हूँ न दस्तारे फ़ज़ीलत बरसर[७]
दूर की भी तो नहीं इल्म से निस्बत मुझको
फिर भी कहते हैं जो कमबख़्त मुझे अल्लामा
क्या समझते हैं कोई फ़ाहिशा औरत मुझको

× × ×

दो बैल फिर रहे हैं जो भारत में हर तरफ़
कालों के हक़ में रह्मते परवर्दगार हैं

---

१. महामहिम ; २. आकाश का सबसे ऊपर का स्थान जहाँ ईश्वर रहता है ; ३. विकास के चरण ; ४. एक नक्षत्र समूह-कृत्तिका; ५. राष्ट्र-मंदिर का निर्माता। ६-७. न तो चोग़ा पहने हुए हूँ और न ही मेरे सिर पर महत्ता की पगड़ी है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गोरों से राजनीति का उनको मिला है दर्स
मरहूम जान बुल की यही यादगार है

× × ×

पहुँचा जो सिविल कोर्ट में इक रोज़ मैं शहबाज़
कहने लगा इक शख़्स वकालत की ज़बाँ में
नादान यहाँ हक़ की तलब है तुझे नाहक़
हक़ कहते हैं रिश्वत को अदालत की ज़बाँ में

× × ×

मिरे ओहदे का दामन पाक है दाग़े मग्रासी[1] से
ख़ुदा शाहिद कि हब्बा[2] तक नहीं लेता मैं रिश्वत का
मगर जब ले के आ जाते हैं बंगले पर कोई तोहफ़ा
तो दिल रखना ही पड़ जाता है मुझको अह्ले हाजत का

× × ×

मेरी तनख्वाह तो इतनी भी नहीं ऐ शहबाज़
साग भी मुझको मुयस्सर हो जो चोलाई का
फिर भी हर रोज़ उड़ाता हूँ जो मैं दूध-दही
है ये सब फ़ैज़ मिरी आमदे बालाई[3] का

× × ×

देखा जो मुझको कोर्ट में कहने लगे क्लर्क
यारो शिकार आया है इसको खसोट लो
जमशेद जी ये बोले कि मोटा है ये किसान
रिश्वत में इससे बढ़िया-सी बैलों की जोट लो
फ़रमाया जैकसन ने कि झंझट में मत पड़ो

---

१. पाप का धब्बा ; २ ज़रा-सा ३; ऊपर की आमदनी ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सीधी-सी बात ये है कि सौ-सौ के नोट लो
बोले ये शेरसिंह कि बुज़दिल हैं आप लोग
मेरी तो राय ये है कफ़न भी खसोट लो
जुम्मन ने काँपकर कहा यारो करो न शोर
जो कुछ भी तुमको लेना है पर्दे की ओट लो
नत्थू कड़क के बोले कि डर की है बात क्या
अपना ही अब तो राज है डंके की चोट लो

× × ×

आते ही फ़स्ले सर्मा हर सम्त औरतों ने
सब बंद कर दिये हैं दुनिया के काम-धन्धे
बुनती है इक सुएटर सीती है, इक रज़ाई
ये डालती है डोरे वो डालती है फंदे

× × ×

रहने को जब जहाँ में कोई जगह न पाई
दुनिया से रख के सर पे मैं अपनी खाट निकला
उक़बा[1] में जाके देखा दोज़ख़ तो वो मकाँ भी
शैताने रू सियह के हक़ में अलाट निकला

× × ×

शहबाज़ मुल्क में हैं ऐसे भी एक नेता
जो तर्क करके रोटी सब्ज़ी चबा रहे हैं
पूछा जो मैंने उनसे इक दिन कि "ऐ महाशय
क्यों आप अपने ऊपर ये क़हृ ढा रहे हैं"
कहने लगे बिगड़कर "बक-बक न कर ज़ियादा
इच्छा हमारे मन की हम घास खा रहे हैं"

१. यम लोक।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

झोंपड़ी में हर चन्द ऐ शहबाज़
टूटी - फूटी थी और छोटी थी
फिर भी कस्टोडियन से क्यों बचती
भागते भूत की लंगोटी थी

लीडर[1]

क़ुल्लए कोहे हिमाला[2] है शबिस्ताँ मेरा
वुस्अते दश्ते इरम[3] अर्सए जौलाँ मेरा
फ़ैज़ हर मज़हबो मिल्लत ये है यकसाँ मेरा
कलिमा पढ़ते हैं हिन्दुओ-मुसलमाँ मेरा
क़ौम की नाओ को तूफ़ान में खेता हूँ मैं
देश का भगत हूँ मैं मुल्क का नेता हूँ मैं
काम है मेरा फ़क़त अपनी भलाई करना
बे कोई काम किये ख़ूब कमाई करना
क़ौम के नाम पे दर-दर की गदाई करना
पीर की तर्ह मुरीदों से उगाई करना
सरसों हर वक्त हथेली पे जमा लेता हूँ
फ़स्ल हो या न हो चंदा मैं उगा लेता हूँ

× × ×

क़ाबिले दीद है तन पर मिरे खादी की बहार
चलता-फिरता हुआ जैसे कोई खद्दर भंडार
बाढ़ टोपी को वो बाँकी कि कटारी भी निसार

१. यहाँ पर लीडर का तात्पर्य नक़ली लीडर है ; २. हिमालय की चोटी ;
३. स्वर्ग के जंगल का विस्तार ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बल्कि पानी हो जिसे देख के तलवार को धार
शेर भी मार से कब उसकी फ़िरी रहते हैं
इसको भारत की थिरी नाट थिरी कहते हैं

× × ×

शाबदा बाज़ी[1] में मेरा नहीं हमसर कोई
मुझ से दुनिया में मदारी नहीं बेहतर कोई
फ़ेल होता नहीं मेरा कभी मंतर कोई
मेरे मुँह आयेगा क्या खाके फ़सूँ गर कोई
डुगडुगी अपनी मैं जिस वक्त बजा देता हूँ
नाच तिगनी का ज़माने को नचा देता हूँ
क़ौम से करता हूँ जिस वक्त मैं चंदे की अपील
लोग कर देते है मेरे लिए माल अपना सबील[2]
करके हर क़स्बा ओ शह्र में चन्दा तहसील
ज़रे खालिस से मैं भर लेता हूँ अपनी जबील[3]
शाद हो जाता हूँ यूँ नोटों की थैली लेकर
जिस तरह क़ैस हो खुश नामए लैलो[4] लेकर
गश्त करता है किसी शह्र में जब मेरा जुलूस
आगे-पीछे मिरे होते हैं हज़ारों ही नुफ़ूस[5]
नारे जब जोश में करते हैं वो मानिंदे खुरूस[6]
रक्स यूँ करता हूँ मैं बाग़ में जैसे ताऊस[7]
ज़िन्दाबादा की सदा सुन के अकड़ जाता हूँ
अस्पे सरकश[8] की तरह चौक में अड़ जाता हूँ

---

१. छल; २. पियाऊ ; ३. थैला ; ४. लैला का पत्र ; ५. व्यक्ति ; ६. मुर्ग़ा ; ७. मोर ; ८. अवज्ञाकारी घोड़ा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लम्बी-चौड़ी है बहुत मेरे मनाक़िब[१] की किताब
जिसकी हर फ़स्ल[२] मुनव्वर है दरख़्शाँ हर बाब[३]
मेरे औसाफ़ो महामिद[४] की न हद है न हिसाब
मेरे आमाल का वस्साफ़ है हर शैख़ो शहाब
देवता कहता है कोई कोई अवतार मुझे
दूर से करता है हर शख़्स नमस्कार मुझे
क़ौम के वास्ते मैंने सहे लाखों आज़ार
हर नफ़स रंजो मुसीबत से रहा मैं दो-चार
देश-भगती में हर इक क़िस्म की भुगती बेगार
रक्मे चंदा के काँधे पे उठाये अम्बार[५]
तौक़ आहन[६] के गिराँ बार भी पहने मैंने
हार गोटे के तिलाकार भी पहने मैंने
गश्त करता हुआ गाओं के गँवारों में फिरा
ख़ाकरोबों में कुम्हारों में चमारों में फिरा
पुर फ़ज़ा शहरों में सुनसान दियारों में फिरा
सिर्फ़ पैदल ही नहीं बैठ के कारों में फिरा
पक्की सड़कों ही के काटे नहीं चक्कर मैंने
कच्ची लीखों में भी दौड़ा दिये मोटर मैंने
कभी तय्यारों[७] में की बैठ के मैंने पर्वाज़
पर फ़िशाँ[८] चर्ख़े बरीं[९] पर हुआ मिस्ले शहबाज़[१०]
औजो रिफ़्अत[११] के दिखाये वो निराले अंदाज़
हुए हैरान मलक देख के मेरी तगो ताज़[१२]

१. यशोगान ; २. खंड ; ३. अध्याय ; ४. गुण और कीर्तियाँ ; ५. ढेर ; ६. लोहा ; ७. विमान ; ८. पर झाड़ने वाला ; ९. आकाश का सबसे ऊपर का भाग ; १०. श्येन की भाँति ; ११. ऊँचाई ; १२. दौड़ ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साकिने अर्ज़[१] था लेकिन मैं फ़लक सैर[२] बना
इब्ने आदम[३] से बयक जस्त[४] अबुत्तैर[५] बना
दावतें खाने का क़ायम किया मैंने रिकार्ड
कह उठे मुल्क के अक्काल मुझे आवर लार्ड
न बचा देश का ऐसा कोई सर्कल कोई वार्ड
मुझको दावत का जहाँ से न मिला हो कोई कार्ड
मुँह कभी बज़्मे ज़ियाफ़त से न मोड़ा मैंने
शह्र तो शह्र हैं क़रिया[६] भी न छोड़ा मैंने
शाम के वक़्त भी हंगामे डिनर भी खाया
लंच में पार्ट लिया बल्कि सप्पर भी खाया
केक भी टोस्ट भी बिस्कुट भी बटर भी खाया
मेवए ख़ुश्क चखा लुक़मए तर भी खाया
सिर्फ़ अंडे ही नहीं मुर्ग़ी के खाये मैंने
बारहा मुर्ग़ मुसल्लम भी उड़ाये मैंने
दफ़्तरों में कभी जा धमका मैं बनकर भूँचाल
कारखानों में कभी मैंने कराई हड़ताल
करके मजदूरो-पुलिस दोनों को सरगर्मे जिदाल
एक टिटकारी में फुड़वा दिये लाखों कप्पाल
गर्म मैदान में जब डंडों का बाज़ार हुआ
अर्सए जंग[७] से मैं साफ़ तड़ी पार हुआ
कभी तस्नीफ़ किये मैंने पुलिस पर इलज़ाम
नौकरी फ़ौज की कर दी कभी पब्लिक में हराम

---

१. भूमि पर रहने वाला ; २. आकाश का भ्रमण करने वाला ; ३. आदम की संतान अर्थात् मनुष्य ; ४. एक छलाँग में ; ५. पक्षी का बाप ; ६. गाँव ; ७. रण-क्षेत्र ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ख़ुद मगर करके ब्रिगेड जनरल को सलाम
अपनी औलाद के लिखवा दिये रिजमेंट में नाम
लोग तो सर्विस उधर छोड़ के नादान बने
मेरे फ़र्ज़ंद इधर मेजरो कप्तान बने
जब सुदेशी का किया मुल्क में मैंने प्रचार
सर्द पहले तो विदेशी का किया हर बाज़ार
अपने सर्माये से फिर खोल के खद्दर भंडार
चार सू मुल्क में फैला दिया अपना व्योपार
आतशे ग़म से उधर ग़ैरों के दिल जलने लगे
ठाठ के साथ इधर यारों के मिल चलने लगे
जेलख़ाने में गया होके मैं जिस वक्त असीर[1]
था मिरे साथ रज़ाकारों का इक जम्मे ग़फ़ीर[2]
लेकिन इस हाल में भी वाह ए मेरी तक़दीर
ख़ुद जवाँ बख़्त बना फोड़ के सबकी तक़दीर
यूँ मज़ा अपनी रफ़ाक़त का चखाया उनको
'ए' किलास आप लिया 'सी' में फँसाया उनको
क़ैदख़ाना था मिरा ग़ैरते गुलज़ारे जिनाँ[3]
ऐशो इशरत के थे मौजूद जहाँ कुल सामाँ
थे परस्तार मिरे सिर्फ़ न हूरो ग़िलमाँ[4]
पुर्सिशे हाल[5] को आता था मिरी ख़ुद रिज़वाँ[6]
तुर्फ़ा अंदाज़ से होती थी मदारात मिरी
बाइसे फ़ख्र थी जेलर को मुलाक़ात मिरी
भूक हड़ताल का जब ढोंग रचाया मैंने

---

१. क़ैदी ; २. विशाल जन-समूह ; ३. स्वर्ग की वाटिका से भी अधिक उत्तम ; ४. स्वर्ग की रमणियाँ और लड़के ; ५. हाल पूछने के लिए ; ६. स्वर्गाध्यक्ष ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इक नये रूप से बहरूप दिखाया मैंने
खाना हर चन्द कि बरसों नहीं खाया मैंने
अपने जीवन को मगर साफ़ बचाया मैंने
सेबो-अंगूर का रस शामो-सहर पीता रहा
मलकुलमौत की आग़ोश[1] में भी जीता रहा

१. यमराज की गोद।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग़ालिब

असद उल्लाह ख़ाँ—१७९७-१८६९

पकड़े जाते हैं फरिश्तों के लिखे पर नाहक़
आदमी कोई हमारा दमे तहरीर[1] भी था

× × ×

जमा करते हो क्यों रक़ीबों को
इक तमाशा हुआ गिला न हुआ

× × ×

बहरा हूँ मैं तो चाहिए दूना हो इल्तफ़ात[2]
सुनता नहीं हूँ बात मुकर्रर[3] कहे बग़ैर

---

१. पुण्य-पाप लिखते समय ; २. ध्यान ; ३. दोबारा ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मैंने कहा कि बज़्मे नाज़ चाहिए ग़ैर से तही[1]
सुनके सितम ज़रीफ़[2] ने मुझको उठा दिया कि यों

× × ×

ज़िन्दगी अपनी जब इस रंग से गुज़री ग़ालिब
हम भी क्या याद करेंगे कि ख़ुदा रखते थे

× × ×

हमको मालूम है जन्नत की हक़ीक़त लेकिन
दिल के खुश रखने को ग़ालिब यह ख्याल अच्छा है

× × ×

क्या फ़र्ज़ है कि सबको मिले एक-सा जवाब
आओ न हम भी सैर करे कोहेतूर[3] की

× × ×

वाइज़ न तुम पिओ न किसी को पिला सको
क्या बात है तुम्हारी शराबे तहूर[4] की

× × ×

वादा आने का वफ़ा कीजिये यह क्या अंदाज़ है
तुमने क्यों सौंपी है मेरे घर की दरबानी मुझे

---

१. खाली ; २. ऐसा अन्यायी जिसके अत्याचार में व्यंग्य भी हो । ३. एक पर्वत जहाँ मूसा को ज्योति नज़र आई ; ४. जन्नत की मदिरा ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जोश मलीहाबादी

शब्बीर हसन खाँ—जन्म १८९४

खूँख्वार को परवान चढ़ाने वाले
कमज़ोर को ख़ाक में मिलाने वाले
शाहीं[1] भी है क्या तेरी ही ईजादेलतीफ़
मासूम कबूतर के बनाने वाले

× × ×

नहीं जहाँ में कोई आसरा फकीरों का
कि बेनियाज़ बहुत हैं ख़ुदा अमीरों का
गूँजती फिरती है आफ़ाक[2] में भूखों की सदा
कोन अल्लाह को कहता है कि रज़्ज़ाक़[3] नहीं

महाजन

कद की लम्बाई से इक हद तक कमर झूली हुई
सर पे चुटिया मुर्दा चूहे की तरह फूली हुई
कुहनियाँ तकिये के अन्दर वज़न से धँसती हुई
चुस्त सदरी दायिरे पर तोंद के फंसती हुई
खूब ले लेकर डकारें दिल को बहलाता हुआ
दोनों नथनों को फुलाए तोंद सहलाता हुआ

१. एक शिकारी पक्षी ; २. संसार ; ३. रोजी देने वाला।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हक़[1] को हो फरोग़[2] हर वली चाहता है
बातिल[3] मिट जाए हर नबी चाहता है
लेकिन यह बुज़ुर्गवार जो चाहते हैं
क्या क़ादिरे मुतलक[4] भी वही चाहता है

× × ×

ज़ाहिद रहे मारिफत[5] दिखा दे मुझको
यह किसने कहा है कि सज़ा दे मुझको
काफ़र हूँ हुई यह तो मरज़ की तशखीस[6]
अब इसका इलाज भी बता दो मुझको

× × ×

पीरी से हमेशा की लड़ाई हमने
हर वक्त जवानी ही मनाई हमने
हम-सा भी कोई दुज़्ले[7] महोसाल नहीं
हर शख्स को उम्र कम बताई हमने

× × ×

क़रनों[8] अभी टूटेंगे हज़ारों तारे
गुज़रेंगे अभी सर से हज़ारों धारे
इंसाँ बनने में है अभी वक्त बहुत
अब तक तो फ़क्त दुम ही झड़ी है प्यारे

× × ×

हाँ हाँ मसजिद यही है आगे बढ़कर
हाजी बख्शउल्लाह की दुकाँ के ऊपर

---

१. सत्य ; २. उन्नति ; ३. झूठ ; ४. ईश्वर ; ५. ज्ञान का रास्ता ; ६. जाँच ; ७. साल और महीनों का चोर; ८. शताब्दियों।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लेकिन, लेकिन, जनाब लेकिन कसी
मैं पूछ रहा था कि मैख़ाना किधर

× × ×

हर साँस को वक़्फ़े[1] सद शरारत कर दें
अख़्लाक़[2] की कुछ अजीब हालत कर दें
मुफ़लिस कि अमीरों के गिनाते हैं गुनाह
दौलत उन्हें दे दो तो क़यामत कर दें

---

१. सौ शरारतों को समर्पित ; २. श्रेष्ठ आचार ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अख्तर

पण्डित हरिचन्द—१६०१-१६५८

हास्य कविताओं में दोज़खी तखल्लुस भी करते थे।

ज़मींदार के सम्पादक ज़फर अली खाँ की एक कविता में कुछ शब्द आगे-पीछे हो गए थे ये कविता उनकी भेंट की—

फिर ज़फ़र के बाद गाये ऐसे ढोले कौन गा
फिर सुनाए ठुमरियाँ टप्पे चौबोले कौन गा
उम्मते[1] मरहूम की जेबें टटोले कौन गा
भर के ले जाए यूँही चन्दे के झोले कौन गा
नब्ज़ तक खामोश पड़ जाती है रोबेहुसन से
हाले दिल पूछा अगर उसने तो बोले कौन गा
तू जो मुझ पर कर रहा है बेखबर मशकेकलूख[2]
चुनके तेरे वास्ते लाये ग़लोले कौन गा
है शबे वादा इधर मुझ पर है गलबा नींद का
वुह अगर आये तो फिर दरवाज़ा खोले कौन गा
दोज़खी साहिब भी साहिल से चिमट बैठे अगर
इश्क के तूफ़ान में खाये झकोले कौन गा

× × ×

---

१. स्वर्गीय कौम ; २. ढेले बरसाना।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शेर मेरा है मिसले सिन्ध श्रमीक[1]
श्रौर रवानी चनाब की-सी है
दिले खाना खराब की सूरत
दिले खाना ख़राब की सी है
गरमीये इश्क यानी गरमीये इश्क
जून के श्राफ़ताब की सी है
इक तरफ़ पाश्रों इक तरफ़ जूता
मेरी हालत जुराब की सी है
शैख जी दोज़खी मिले थे श्राज
शक्ल बिल्कुल जनाब की सी है
ये ले बोतल के दाम के साक़ी रात गुज़रने वाली है
श्रौर ये तेरा इनाम के साकी रात गुज़रने वाली है
तू मेरे श्रामाल[2] का पाबन्द निकला हश्र में
ऐ खुदा मेरे खुदा तुझको खुदा समझा था मैं

× × ×

शैखो-पंडित धर्म श्रौर इस्लाम की बातें करें
कुछ खुदा के कहर[3] कुछ इनाम को बातें करें
ये सुनाएँ पाक नगमे श्रव्लीं[4] इल्हाम के
वह खुदा के श्राखिरी[5] पैगाम की बातें करें
हम खड़े सुनते रहें श्रौर दिल में यह कहते रहें
श्रब ये रुखसत हों तो हम कुछ काम की बातें करें

× × ×

१. गहरा ; २. कर्म ; ३. कोप ; ४. वेद ; ५. कुरान ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वही है अपनी रिन्दी और वही वाइज़ की फहमाइश[1]
बुरी आदत कोई भी हो बआसानी नहीं जाती

× × ×

नमूदे खैरोशर[2] का यह नतीजा किसने सोचा था
खुदा मफ़रूर[3] आदमजाँबलब[4] शैतान बाकी है

१. डाँट-डपट ; २. भलाई और बुराई की अभिव्यक्ति ; ३. भगोड़ा ; ४. मरने के करीब ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जोश मलसियानी

पं० लम्भूराम

जन्म—१८८२

बंगला ही नहीं गोर[1] भी इंसाँ के लिए है
यह मटियामहल भी इसी मेहमाँ के लिए है

× × ×

नोट पर यह नोट कर दो जोश तुम
दौलत अब काग़ज़ का टुकड़ा रह गई

× × ×

कमेटी की परची सलामत रहे
ग़रीबों का यह आसरा हो गई

× × ×

तपिश दिल में है आहे सरद के साथ
महीना जून का है जनवरी में

× × ×

राहे[2] अदम में चोर ही इतना करम करे
चुपके से ले उड़े मेरी गठड़ी गुनाह की

---

१. क़ब्र ; २. यमलोक ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हम जानते हैं कि पारसाई क्या है
इसके लिए वजहे लब कुशाई[1] क्या है
पी जाएँ जिसे नाम खुदा का लेकर
इस जामे शराब में बुराई क्या है

× × ×

महशर में सुन रहा हूँ सदा वाह वाह की
या रब मिलो यह दाद मुझे किस गुनाह की

× × ×

पुरतगाली का मैं दिलदादा नहीं ऐ साक़ी
इंडिया मेड अगर है तो दिखा कौन-सी है

× × ×

तुम अब तो जोश सियाहकारियों[2] से बाज आओ
तुम्हारी दाढ़ी में हज़रत सफेद बाल आए

× × ×

ग़ैर की तस्वीर पर कहते नहीं अश्आरा हम
बेज़बाँ पर क्या करें तेग़ज़बाँ[3] का वार हम

× × ×

मुनहसर[4] कुव्वतेबाज़ू पै है दौलतमंदी
देख लो ज़ोर में मौजूद है ज़र २/३
मलकउलमौत से दुनिया में हरासाँ नहीं कौन
जिसको कहते हैं निडर उसमें है डर २/३
ज़ालिमो खौफ़ करो आह को समझो न हक़ीरे[5]
लफ्ज़े अल्लाह में हैं इसका असर २/३

१. कुछ कहना ; २. कुकर्म; ३. जबान की तलवार ; ४. निर्भर ; ५. तुच्छ ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आजकल गर्मी की है रफ्तार गरम
हर तरफ है हशर का बाज़ार गरम
आता हैं खिच खिच के खलक़त का हजूम
बर्फ वालों का हुवा बाज़ार गरम
दोस्तों की सरद मेहरी देखकर
अश्क[1] निकले आँख से दो-चार गरम

१. अश्रु ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब्दुलबारी आसी

१८६३—१९५०

अब भी हिम्मत की मुसलमानों में कुछ क़िल्लत नहीं
हाँ मगर डरते थे सब जिससे ये वो हिम्मत नहीं
क़ाज़ी साहिब फिर भी अच्छे हैं कि क़िस्सा तो सुना
जज ने तो ये कह दिया जाइये हमें फ़ुरसत नहीं
रेल की अकसर मज़म्मत शैख़ साहिब से सुनी
या पियादा चल सकें दो कोस ये हिम्मत नहीं

× × ×

ग़लत फ़हमी का फ़ैशन से इज़ाला हो नहीं सकता
कोई गोरा किसी काले का साला हो नहीं सकता
जनाबे शैख़ भी हँस-हँस के चुपके-चुपके कहते हैं
पुडिंग अच्छा है हलवा इससे आला हो नहीं सकता
मिरे सोज़े दरूँ को मुझसे सुनकर डाक्टर बोला
कि नामुम्किन है हरगिज़ दिल में छाला हो नहीं सकता
है गरचे रोशनी बिजली की वज्हे ज़ोफ़े बीनाई[1]
चिराग़ों से मगर ऐसा उजाला हो नहीं सकता

× × ×

शैख़ मस्जिद में गए साहिब कलब में डट गए
हम किसी काबिल न थे मजबूर होकर हट गए

---

१. आँख की कमज़ोरी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ शाइराने नुक्तादाँ[1] ऐसे भी हैं जिनके यहाँ
जितने बलंद अलफ़ाज़ हैं उतने ही माना पस्त[2] हैं
उनको बुरा हम कहते हैं हमको बुरा वो कहते हैं
वो अपनी धुन में मस्त हैं हम अपनी धुन में मस्त हैं

× × ×

आजकल जो क़ौम के रहबर हैं वो लोग और हैं
शैख़ बेचारा तो आसी मुफ़्त में बदनाम है

× × ×

ख़याले क़ौम है हर वक्त और बंदा है
सिवाय इसके कोई काम है न धंदा है
जो जोशे क़ौम बढ़ाए वो है मिरी स्पीच
जो होश उड़ाए जहाँ के वो उनका चंदा है

× × ×

जनाबे शैख़ भी चुपके से कह गए आख़िर
शराब रात को अकसर हलाल होती है

× × ×

दिल में इधर हो जोश उधर शान्ती भी हो
इस पालिसी को क़ौम मगर जानती भी हो

१. मर्मज्ञ ; २. अधम ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बेढब बदायूनी

ईसार अली—१६२६ में जवानी का ज़माना था

इक आहे आतशों में डबल काम हो गया
उनको बुख़ार ग़ैर को सरसाम हो गया
दो सेर बाजरे का मलीदा उड़ा गए
लाला का पेट क्या हुआ गोदाम हो गया

× × ×

बहन से डरूँगा न माँ से डरूँगा
जो वाइफ़ कहेगी वो बेशक करूँगा
न होगा अगर तुमसे मेरा मदावा
तो मैं साथ अपने तुम्हें ले मरूँगा

× × ×

हमारे बस में इस सूरत से वो अय्यार हो जाता
कि थानेदार हम होते वो चौकीदार हो जाता

× × ×

ढोलक बजा बजाकर गाता था इक ज़माना
अबके जनम में यारब औरत हमें बनाना
इस राग पर हो लानत है ये भी कोई गाना
ता दीम दीम दूना ता दार दीम ताना

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्या वो हरजाई मुझे ढूँढे मिलेगा जो कभी
एक सौ दस में गिरफ़्तार न होने पाया
बारहा बैठ गए हार के चुंगी वाले
रास्ता इश्क़ का हमवार न होने पाया
कोई इन्सान है वे मिह्न कि ताऊन है तू
कभी जाँबर तिरा बीमार न होने पाया

× × ×

प्यार था लेकिन ज़रिया रस्म का हासिल न था
साइकिल अल्लाह ने दी थी मगर पैडिल न था
दाग़ेदिल की रौशनी देखी तो फ़रमाने लगे
गैस का हंडा था बेढब ये तुम्हारा दिल न था

× × ×

दिल में इतराते हो क्या ग़ैर को अपना कहकर
होश में आओ करेला कहीं मीठा होगा
दिल लगाने की सज़ा आप मुझे क्या देंगे
क़ैद होगी कि ज़मानत कि मुचलका होगा

× × ×

जो न शौक़ीन हो ऐसा नहीं दिलबर कोई
पालता है कोई बुलबुल तो कबूतर कोई
बीसियों चाहने वालों की ज़रूरत क्या है
नाज़ उठवाओगे तुम उनसे कि छप्पर कोई

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जगत इलाहबादी

जगतमोहन : जन्म—१८९७

दोनों रुख़सार इनायत करें इक इक बोसा
अब मिरे वास्ते सरकार से चंदा हो जाए

× × ×

जहाँ बारिश कमी करती हो कहियो अपने दिहक़ाँ से
कि अपने खेत पर ले जाए मेरी चश्मे गिरियाँ को

× × ×

एक दिन रोया बराए इम्तिहाँ मैं नातवाँ
सौ समंदर साठ नाटे लाख दरिया बह गए

× × ×

मीठी नज़रों से जो देखा मुझको
क्या मैं हलवा हूँ मुझे खाइयेगा

× × ×

हसीनों की नज़र मुझसे लड़ी है
लड़ी है या मिरी क़िस्मत लड़ी है
खबर देती है हिचकी उन बुतों को
नई फ़ैशन की ये जेबी घड़ी है
फँसे जाते है सब उसकी गिरह में

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुम्हारी जुल्फ़ है या हथकड़ी है
रुखे अनवर पे उनके है अयाँ खाल
ये बेढब दूध में मक्खी पड़ी है

× × ×

क्या ख़ल्क़ मे आमादए बेदाद[1] हैं मच्छर
नमरूद[2] से कुछ कम नहीं शद्दाद[3] हैं मच्छर
प्यासे हैं ये ज़ालिम बनी आदम[4] के लहू के
सफ्फ़ाक[5] हैं ख़ूंख़्वार हैं जल्लाद हैं मच्छर
चाहें जिसे काटें जिसे चाहे उसे खाएँ
ख़ालिक़ की ख़ुदाई में बस आज़ाद हैं मच्छर
मारे कोई लाख उनको मगर फ़ायदा क्या है
मुश्किल है यही साहिबे औलाद हैं मच्छर
है गाने बजाने का फ़न ईजाद उन्हीं का
शागिर्द जो घाड़ो हैं तो उस्ताद हैं मच्छर

× × ×

रूठा है मुझसे मेरा सनम हाय बाप रे
करने लगा है चर्ख़ सितम हाय बाप रे
वालाए ताक़ वस्ल की उमीद हो गई
छाती से लगके बोला सनम हाय बाप रे
जिस तर्ह मिट गए हैं ये शाहान दह्र[6] सब
ओढ़ेंगे क्या कफ़न यूँही हम हाय बाप रे

---

१. अत्याचार करने को तत्पर ; २-३. दो अत्याचारी जिन्होंने खुदा होने का दावा किया था ; ४. मानव जाति ; ५. अत्याचारी ; ६. दुनिया भर के राजा ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इनायतुल्लाह हज्जाम

१७५८—उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ में

रोज़ रुख़सार के लेता हूँ मज़े ख़ूबाँ के
बेहतर इस शग्ल से हज्जाम हुनर क्या होगा

× × ×

क्यों मुझको सताती है तू ऐ गर्दिशे गर्दूं[1]
मैं नाई का बेटा हूँ कहीं सर न रगड़ दूँ

× × ×

खत आनें से भी अपनी रसाई नहीं वहाँ
हज्जाम किस तरह से मिलें क्या हुनर करें

× × ×

रक़ीबों पर मियाँ पड़ता है तब सौ सौ घड़े पानी
बुला हज्जाम को जिस रोज़ तुम हम्माम[2] करते हो

× × ×

उस शोख़ के कूचे में न जाया करो हज्जाम
छिन जाएंगे इक रोज ये औज़ार तुम्हारे

× × ×

कल मियाँ हज्जाम सबका मूंडते फिरते थे सर
आज उस कूचे में उनकी भी हजामत हो गई

---

१. आकाश का चक्र; २. स्नान।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वजाहत झंझानवी

अनुमानतः—१८७० से १९३०

वाइज़ और सर सैयद

शोहरा जब उनके वाज़ का लोगों में हो चला
फिर तो वो ख़ुद को दिल में समझने लगे ज़रा
अब क्या था बढ़ते-बढ़ते बढ़ा ऐसा हौसला
सैयद से जाके हज़रते वाइज़ ने ये कहा
चर्चा है जाबजा तिरे हाले तबाह का

ऐ मर्द आदमी ये तुझे हो गया है क्या
शायद तिरा दिमाग़ ठिकाने नहीं रहा
क़िस्मत का तू मुक़िर[1] है न क़ाइल नसीब का
समझा है तूने नेचरो तदबीर को ख़ुदा
दिल में ख़याल भी न रहा ला इलाह का

कहता है तू ज़बान से दिन को तो क़ौम क़ौम
सोता है ख़ूब रात को हो हो के मस्ते नौम[2]
यादे ख़ुदा में कोई गुज़रता नहीं है यौम[3]
है तुझ से तर्क हज्जो ज़कातो सलातो सौम[4]
कुछ डर नहीं जनाबे रिसालत पनाह[5] का

---

१. स्वीकार करने वाला ; २. नींद में मस्त ; ३. दिन ; ४. हज, खैरात, नमाज और रोजा ; ५. पैग़म्बर ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेरी ये रस्म क्या है ये तेरा है क्या रिवाज
सारे जहाँ से तूने निकाला नया रिवाज
दुनियाओ दीं का तेरे हैं बिलकुल जुदा रिवाज
उसने दिया जवाब कि मज़हब हो या रिवाज़
राहत में जो मुज़िल[1] हो वो काँटा है राह का

दर्सो हदीसो[2] फ़िक़्ह[3] की ज़िन्दगी बसर
खोई है बैठकर
हर सू नई है रौशनी अब तो है जलवागर
अफ़सोस है कि आप हैं दुनिया से बेख़बर
देखा नहीं है रंग जो शामो पगाह का

हुजरों में मस्जिदों में रहे आप उम्र भर
ये ज़ुहदे ख़ुश्क[4] आबे वुज़ू[5] से हुआ न तर
सब हाल हो अयाँ जो समंदर से हो गुज़र
योरप का पेश आए अगर आपको सफ़र
गुज़रे नज़र से हाल रिआया ओ शाह का

योरप की लेडियों से हो सूरत मिलाप की
चीनी की मूरतें हैं अजब टीपटाप की
होटल में जाएँ सैर करें काफ़ी शाप की
दावत किसी अमीर के घर में हो आपकी
कमसिन मिसों से ज़िक्र हो उल्फ़त का चाह का

ख़ुश वज़अ ख़ुश कलाम ख़ुश अंदाज़ महजबीं[6]
मैं चंद लफ़्ज़ भूल गया हूँ नहीं नहीं

---

१. बाधक ; २-३. इस्लामी धर्मशास्त्र ; ४. नीरस उपासना ; ५. वज़ू का पानी ; ६. जिसका माथा चाँद जैसा हो ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिलदारो दिल सतानो दिल आरामो दिलनशीं
नौ खेज़[1] जामाजेब[2] गुलअंदाम नाज़नीं
आरिज़[3] पे जिनके बार हो दामन निगाह का

पड़ जाए फिर तो साये से परियों का वास्ता
इंदर के भी अखाड़े में आए न ये मज़ा
इस बेतकल्लुफ़ी पे भी ऐ मर्दे पारसा
रुकिये अगर तो हँस के कहे एक महलक़ा[4]
वल मौलवी ये बात नहीं है गुनाह का

दुनिया में इससे कोई भी अच्छा नहीं है काम
अफ़सोस है कि इसको समझते हो तुम हराम
पी लो हमारे हाथ से ह्विस्की का एक जाम
उस वक्त क़िबला आपको झुककर करूँ सलाम
फिर नाम भी हुज़ूर जो लें क़िबला गाह का

हिन्दुस्तानी और यूरोपियन मिस की नोकझोंक

कहा जूलिया ने ये बद्रुन्निसा से
कि मौजूदा तहज़ीब से तुम हो आरी[5]
नया कोई अंदाज़ तुम में नहीं है
पुरानी हैं सारी अदाएँ तुम्हारी
समझती हो ज़ेवर को ज़ीनत का सामाँ
ख़ुशी से उठाती हो ये बोझ भारी
बनावट से तुम चाहती हो चमकना

---

१. कम उम्र ; २. जिसके शरीर पर वस्त्र बहुत अच्छा लगें ; ३. गाल ; ४. सुन्दरी ; ५. रहित ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लगाती हो कपड़ों पे गोटा किनारी
वही कुरती अँगिया वही बंदे महरम
चली जाती है हुस्न की पर्दादारी
लड़ाई में बढ़कर हो भटियारियों से
चलाती हो बेढब छुरी और कटारी
नहीं तुम में मग़्रिब का कोई क़रीना
नई रौशनी में चलन हैं गँवारी
हो पर्दे के ज़िन्दाँ में तुम मुक़य्यद[1]
तुम्हारा नहीं कोई फेल इख़्तियारी
मुसीबत के दिन काटती हो जहाँ में
ये जीना है या नज़्अ[2] की दमशुमारी[3]
तुम्हें जीते जी मार रक्खा है इसने
पड़े भाड़ चूल्हे में ये वज़्अ दारी
कहा सुनके बीबी ने ऐ मेम साहिब
बस अब चुप रहो आई अब मेरी बारी
नई रौशनी के नये गीत गाए
बहुत तुमने बढ़ चढ़ के शेख़ी बघारी
तमाशा तो देखो कि पर्दा उठाकर
बनी फिरती है मेम मेरी बिचारी
नज़र पड़ती है ग़ैर लोगों की हरदम
तुम्हारा ये चेहरा है या चाँदमारी
किया करती हो गैर मर्दों से बातें
फटकती नहीं पास तक शर्म सारी
हुई डोली और बंद गाड़ी से नफ़रत

१. बंद ; २. मरने के समय की अवस्था ; ३. साँस गिनना ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पसंद आई बाइसिकिल की सवारी
न इतराओ मेमों का साया पहनकर
कि सूरत है काली कलूटी तुम्हारी
चला हंस को चाल अपनी भी भूला
न काम आई कौए की कुछ होशियारी
खिताबों की शैदा हुईं औरतें भी
ब्याही मिसेज़ और मिस है कुंआरी
तरक्की करो इल्मे शायस्तगी[1] में
न छोड़ो मगर अपनी तुम वज़अदारी
इसे कहते हैं लोग तकलीदे बेजा[2]
बनावट है ये सादगी भी तुम्हारी
कोई आंख भरकर नहीं देख सकता
हुकूमत का मेमों की सिक्का है जारी
है जेबा[3] उन्हीं के लिए बेहिजाबी[4]
है शायाँ[5] हमारे लिए पर्दादारी
नहीं मुल्क में रोब अब अपना है कुछ भी
हुकूमत से फ़बती हैं बातें ये सारी
मुबारक उन्हें मग़्रिबी पोर्ट मंटो
हमें एशिया की पुरानी पिटारी

× × ×

झुका है जईफ़ी में क़द शैख़ का
कभी तीर था अब कमाँ हो गया
फ़लक क्यों ज़मीं का सहारा न ले
ये बूढ़ा बहुत नातवाँ हो गया

× × ×

१. आचार-व्यवहार ; २. अनुचित अनुकरण ; ३. उचित ; ४. बिना पर्दे के रहना ; ५. उचित ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मक़तल में ग़ैर आ न सका डर के हट गया
बुज़दिल नहीं था बुज़ था कि यूँ साफ़ कट गया
हाज़िर हुआ न हश्र में अच्छा निबट गया
इस ग़ैर हाज़िरी में मिरा नाम कट गया
नामे रक़ीब मैंने लिफ़ाफ़े पे लिख दिया
कुछ ग़म नहीं है ख़त जो उन्हें बे टिकट गया
वाइज़ की गत बनाई थी रिन्दों ने बे तरह
ये जानते थे उसका बस अब पाप कट गया
लेकिन वो दम चुराए पड़ा था ज़मीन पर
रिंदों ने पुश्त फेरी तो उठकर झपट गया

× × ×

दिल है बरसात में भी पज़ मुर्दा
सूख कर ये शजर हरा न हुआ
हमने कितनी ही इलतिजाएँ कीं
वो मगर टस से मस ज़रा न हुआ

× × ×

अब ठिकाना है यहीं इश्क़ के दुखियारों का
कूचए यार[1] शफ़ाख़ाना है बीमारों का
पासे शीरीं था जो फ़रहाद ने काटा कुहसार
वरना ये काम है मज़दूरों का मेमारों का

× × ×

निहायत बे तकल्लुफ़ है मय आशामों[2] की सुहबत भी
उधर-दो चार लेटे हैं इधर दो-चार बैठे हैं

---

१. प्रिय की गली ; २. शराब के प्यासे ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज़रा मयख़ाने में देखो जनावे शैख़ की सज धज
कि बाँधे पुर तकल्लुफ़ लट पटी दस्तार बैठे हैं

× × ×

वो मेरे पास आते नहीं भूलकर कभी
मैं उनके पास जाऊँ तो कहते हैं दूर हो
कर डालो आज इश्क़ के मुज़रिम का फ़ैसला
तुम हुस्न की कचहरी के सद्रुस्सुदूर[1] हो

× × ×

सुनते हैं जो वाइज़ से कभी मय की मुज़म्मत[2]
सब रिन्द ये कहते हैं कि समझेंगे ख़ुदा को

× × ×

मुर्ग़ के हमराह देता है मुअज़्ज़िन भी अज़ाँ
आदमी कोई अगर हो जानवर इतना तो हो
बावा आदम ख़ुल्द से निकले थे हम घर से तिरे
क़िस्सा कोतह बाप का पैरो[3] पिसर इतना तो हो

× × ×

मुल्के अदमाबाद[4] में है सख़्त हुकूमत
परचा कोई निकले तो वहाँ से ख़बर आए
जान है बस दम की सच्ची जाँ निसार
साथ राजा के ये रानी जाएगी

× × ×

जन्नत में बसर होगी न हूरों से हमारी
सुनते हैं वहाँ का तो रिवाज और ही कुछ है

---

१. न्यायाधीश ; २. निन्दा ; ३. अनुयायी; ४. परलोक ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सोडावाटर हो कि अंगूर वग़ैरह का निचोड़
प्यास लगती है तो पी लेते हैं हम हर पानी

× × ×

साँप जुल्फ़ों के पाल रक्खे हैं
वो हसीं क्या है इक सपेरा है

× × ×

मिल गया नामाबर हमें सस्ता
एक कौड़ी का एक फेरा है

× × ×

दिल रहा बचकर निगाहे नाज़ से
ले गया बाज़ी कबूतर बाज़ से

× × ×

जान दी है हमने कूए दिलरुबा के सामने
ताज़िया ठंडा हुआ है कर्बला के सामने

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri